एक प्रति मूल्य 12/-

ओ३म्

हिन्दी मासिक

जनज्ञान

दिसम्बर २००७ — वर्ष:४२ अंक:८ — मार्गशीर्ष–पौष २०६४

स्वामी श्रद्धानन्द
बलिदान दिवस 23 दिसंबर

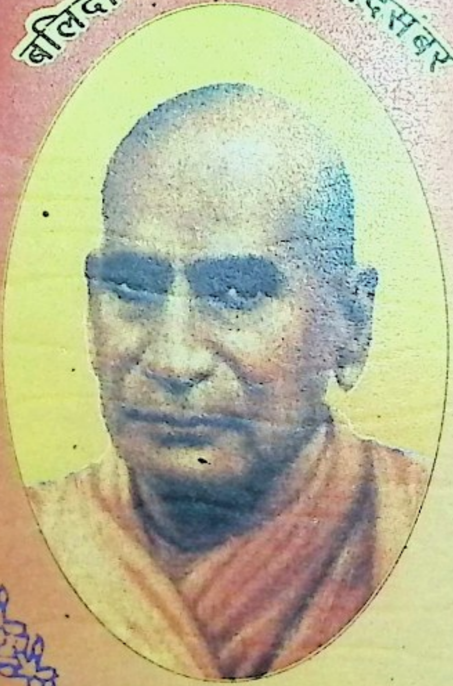

महात्मा वेदभिक्षु:
पुण्यतिथि 20 दिसंबर

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान्!

कम से कम एक और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

'जनज्ञान' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है। विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्र से संबद्ध विषयों पर निर्भीक टिप्पणियां जनज्ञान की विशेषता है।

- यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के तर्कसंगत पृष्ठपोषण का।
- यह अभियान है सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को बचाने का।
- यह अभियान है अपने बिछुड़े बंधुओं को पुनः साथ लाने का।
- यह अभियान है तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- यह अभियान है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष को गुंजाने का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के विश्वबंधुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाइये।
- अपने मित्रों, परिजनों में कम से कम एक और जनज्ञान का सदस्य बनाइए।
- यही है परिस्थिति का आह्वान्। घर-घर पहुंचे जनज्ञान।
- सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत।
- क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं हैं अभ्यागत।

वार्षिक शुल्क १०० रु. है। -सम्पादक

जनज्ञान मासिक मंगाने के नियम

1. जनज्ञान के पाठक पत्र व्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें (सदस्य संख्या : जनज्ञान के रैपर पर लिखे पते के साथ अंकित रहती है।)
2. 'जनज्ञान' प्रतिमाह पांच और छः तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
3. मास के अन्त तक 'जनज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भी भेज दिया जाता है।
4. 'जनज्ञान' की एक प्रति का मूल्य बारह रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये है।
5. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न होता है। कृपया पोस्टकार्ड पर उत्तर अवश्य दें।
6. आगामी वर्ष के लिए शुल्क मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा दिल्ली के किसी भी बैंक के चैक द्वारा भेज सकते हैं। शुल्क प्राप्त न होने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी. पी. द्वारा भेजा जाता है।
७. वी. पी. में <u>पच्चीस रुपये डाकव्यय अतिरिक्त लगता</u> है जिसका लाभ न तो सदस्यों को और न ही संस्था को होता है। अतः कृपया सूचना मिलते ही धन तुरन्त मनीआर्डर द्वारा भेज देवें अथवा संलग्न कार्ड पर उत्तर अवश्य दें। -सम्पादक

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

जनज्ञान प्रकाशन
नई दिल्ली - 5

हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु स घर्ष रो

सम्पर्क-स्थल
2286 आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 28752741, 41004741

मुख्यालय
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-110036
मोबाइल : 9818257254

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

सम्पादक : **पंडिता राकेश रानी**
सह-सम्पादक : **दिव्या आर्य**

वार्षिक शुल्क -100 रु0
एक प्रति - 12 रुपये
विदेश में **वार्षिक शुल्क**-450 रु.
(हवाई जहाज से) **वार्षिक शुल्क**-800 रु.
दिसम्बर, 2007 वर्ष 42 अंक 8

सम्पादीय

दिसम्बर मास : प्रेरक इतिहास

दिसम्बर मास-इतिहास की अनेक प्रेरक स्मृतियों को अपने आंचल में सहेजे आता है। हुतात्मा श्रद्धानंद, देवता स्वरूप भाई परमानन्द, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय और दयानन्द संस्थान के संस्थापक महात्मा वेद भिक्षुः के प्रेरक जीवन की गाथाएं, इतिहास की थाती हैं, जो इस माह किसी भी राष्ट्रभक्त और हिन्दुत्व निष्ठ के मानस पटल पर उभर आती हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति आते ही, हुतात्मा की उस प्रेरक संज्ञा पर विचार की प्रेरणा मानस पटल पर उभरती है, जिसको परिभाषित कर पाना अति जटिल-अति दुष्कर है। प्रतीत यही होता है कि हुतात्मा की जो संज्ञा स्वामी श्रद्धानन्द के पावन नाम के साथ संयुक्त हो गयी है, उसकी कोई सटीक परिभाषा विद्वतजन् पुण्यात्मा, ऋषि और दृष्टा तक भी नहीं खोज सके थे। वे भी कोई ऐसी ऋचा अथवा श्लोक नहीं रच पाए जो हुतात्मा और उनके हौतात्मय को दृष्य जगत में सृष्ट कर पाता और उन्होंने भावना, कल्पना और कर्म की त्रिवेणी के भाव बोध को शब्दों में आबद्ध कर पाता, जब सर्वथा असंभव मान लिया तो हुतात्मा को होता कहा और हौतात्म्य को वेदोक्त कर्म। परमेश्वर की सत्ता में अमरत्व का यही तत्व है। हुतात्मा ही तो इस गत की सनातन शक्ति का नेत्र है, जो उसे निर्दिष्ट पथ पर गतिमान् करता आया है। यही नर देह में देवजीवन है। यही तो है इस जगत का आदि और अन्त।

आत्मार्पण, आत्म बलिदान और आत्म विसर्जन को रूपाकार देने वाला शिल्पी ही तो होता है हुतात्मा। वही तो है होम की समिधा, यज्ञ का साकल्प आत्म निमग्नता की आत्माभिव्यक्ति और ऊर्जा का अन्तम रूप। हुतात्मा ही आत्मोत्सर्ग कर अक्षर, अक्ष्य आत्मसत्, रूप रहित, विषय रहित उस सृष्टि सत्य को उद्भाषित करता है, जिसे दिव्यजीवन की संज्ञा मिली है। संमृव्य दर्शन में प्रकृति और पुरूष के बीच सेतु के रूप में कहीं वर्णित है हुतात्मा का एक अर्थ। वह भी सीमित सा, जिसे इन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है कि वही वह सर्वश्रेष्ठ

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी 2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 से प्रकाशित एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स 308/4 शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

पुरूष है, जिसका जीवन प्राण व्यक्तियों और सर्व-मानवी चेतना के विद्युत प्रवाह रूप में ज्योतित होता है। वही सृष्टिकर्ता के शासन का माध्यम है। वह जिसका होता है, उसी को होता है समर्पित भी।

ऐसे अनन्य चेता हुतात्माओं की श्रेणी में आते हैं, वे महापुरूष, जिनका उल्लेख हमने प्रारम्भ में किया है। वे ऐसे प्रज्ञा पुरूष थे, जो उन महान और वरेण्य पथ प्रदर्शकों की जाज्वल्यमान मणिका में गुंथे प्रसून हैं, जिनके कारण हमारा राष्ट्र जीवन अखंड, अविरल और अविच्छन्न रहा है। इनमें से देव दयानन्द के रूप में लोक विख्यात अखंड, अविरल और अविच्छिन्न रहा है। इनमें से देव दयानंद के रूप में लोक विख्यात हुए परंतप के सम्पर्क में आकर मुंशीराम श्रद्धाभिभूत होकर श्रद्धानन्द हो गए थे। देवता स्वरूप भाई परमानन्द ने भी महर्षि की विचार सुधा में अवगाहन कर वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार तथा राष्ट्र की अस्मिता को अक्षुण रखने के लिए दक्षिण अफ्रीका तक में वेदामृत सरसाया था। दयानन्द के स्वातन्त्रय संदेश से अभिभूत होकर ही उन्होंने क्रांति पथ का अनुगमन कर विदेशी राज सत्ता से लोहा लिया था और अंडमान (काला पानी) की कालकोठरियों में क्रूर वज्रदण्डों को सहा था। दयानन्द की विचार-सुधा ने ही उन्हें अंततोगत्वा यह मर्म समझाया था कि सुसंगठित हिन्दू राष्ट्र ही 'कृणवन्तो विश्वमार्यम्' के वैदिक आह्वान को सफलता का सोपान प्रदान करा सकता है तो वही विश्व की विभ्रान्त मानवता को 'वसुधैव कुटुम्बकम' के परम आदर्श का साकार दर्शन कराकर सुखानुभूति करा सकता है।

महामना मालवीय ने भी स्वामी श्रद्धानन्द के तुल्य ही शिक्षा को परकीय चिन्तन से मुक्त कराकर राष्ट्र के प्रति अनुरक्त युवा पीढ़ी के गठन हेतु हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना की थी तो स्वाधीनता संग्राम के भी वह अग्रगण्य पुरोधा बने थे और उन्होंने अपने जीवन भर के अनुभवों से यह सत्यान्वेषण किया था कि हिन्दुत्व का जागरण और हिन्दू संगठन ही राष्ट्र-निर्माण का महान मंत्र है। उन्होंने अपनी नश्वरकाया का परित्याग करते हुए जो अंतिम संदेश दिया था, उसमें हिन्दू जाति से संघबद्ध होने का आह्वान कर उसे ही राष्ट्र रक्षण की संजीवनी सुधा निरूपित किया था।

दयानन्द संस्थान के संस्थापक महात्मा वेद भिक्षु: भी दिव्य संकल्प में ढले ऐसे योद्धा थे, जिन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द के महान बलिदान, देवता स्वरूप भाई परमानन्द के प्रेरक जीवन और महामना मदनमोहन मालवीय के अंतिम आह्वान को अपने अंतस में संजोया था। वेदों के घर-घर में प्रचार के दयानन्द के सुस्वप्न की पूर्ति को उस महात्मा ने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। हुतात्मा श्रद्धानन्द के हिन्दुत्व, हिन्दू संगठन और शुद्धि अभियान के अधूरे कार्य पूर्ण करने की लगन को मन में बसा कर, देवता स्वरूप भाई परमानंद के हिन्दुत्व विहीन राजनीति आत्मघात का पथ है, इस दर्शन को अंगीकार कर, महामना मालवीय के बलिष्ठ हिन्दू जगत ही स्वराज्य रक्षा की संजीवनी है, इस चिन्तन को उन्होंने अपने कर्म कौशल में उतारा था। हिन्दू समाज के विभिन्न वर्गों के कर्णधारों को एक मंच पर लाने का अथक प्रयास ही उनकी जीवन साध थी। उन्होंने ही शंकराचार्य और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान को एक मंच पर लाने में सफलता पाई थी तो अयोध्या में श्री राम जन्म भूमि, कृष्ण जन्म भूमि तथा विश्वनाथ मन्दिर वाराणसी के उद्धार को राष्ट्रीयता से जुड़े मुद्दे के रूप में सर्वप्रथम १९८३ में उपस्थित किया था।

राष्ट्र आज भी समस्याग्रस्त है। मंडल और महामंडल के ताने-बाने वर्ग मतवाद तथा जाति-पांति के स्वार्थों को पुन: उभार कर समस्याओं के हल के निर्बल तर्क-वितर्क देते हुए सुने जा रहे हैं। राम देश की दो धुरियों को जोड़ने वाले प्रेरणा पुरूष हैं, उनके पावन स्मृति स्थल ही नहीं अस्तित्व तक को भी राजनीति की दल-दल में घसीटने वाले जन आज खुल कर खेल रहे हैं। आज 'माता की वन्दना' के मंत्र 'वन्देमातरम्' में सांप्रदायिकता की गंध लेने वाले 'भारत के भाग्य विधाताओं' की वन्दना मात्र को तारक मंत्र मान रहे हैं। जबकि भारत के निष्ठावान सपूतों ने इसी परम पुनीता भारत माता के वन्दन, स्वप्न को अपने जीवन की साध माना था। जिसको खंड खंडित करने हेतु कट्टरपंथी मजहबी तत्व आए दिन आतंकवादी गतिविधियों में संलग्न हैं। पोटा के सौदागर इनसे यथा योग्य व्यवहार करने के स्थान पर इन तत्वों के संरक्षण समर्थन में रत टोलों की मनुहार में प्रतियोगिता कर रहे हैं।

आज आवश्यकता है उन महान आत्माओं के जीवन-दर्शन और संदेशों को हृदयंगम कर कर्म पथ पर बढ़ने की जो अपनी आत्मा का अमृत अन्नदान कर मरण-संकित मार्ग से अनन्त यात्रा पर प्रस्थान कर गए थे। उन्हीं का जीवन दर्शन हमें विपरीत परिस्थितियों के प्रबल प्रभंजन में राष्ट्र को विभाजित करने वाले साम्प्रदायिक

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो।)

सम्पादकीय १
सामयिक विचार ४
महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी ५
आपके पत्र ६
स्वस्ति वाचन -*देवनारायण भारद्वाज* ७
वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की वैदिकता -*आचार्य रामनाथ वेदालंकार* ८
अव तो भूगोल बुलाता है -*संजीव द्विवेदी* १२
दुःख का कारण=अविद्या -*स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक* १३
एके साधे-सब सधे १४
अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द -*डॉ. कर्णदेव शास्त्री* १६
देवतास्वरूप भाई परमानन्द २०
मेरे पिता थे वहुत महान -*आभा शुक्ला* २२
वे कहते थे कि समय कम है -*स्वामी धर्मप्रेमानंद* २३
महात्मा वेदभिक्षुः ज्योतिष्मान् स्तंभ -*डॉ. धर्मपाल आर्य* २४
चिर प्रेरक रहेंगे-डॉ. कृष्ण स्वरूप श्रीवास्तव -*राकेश रानी* २६
शुद्धि का अर्थ और महत्ता -*पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय* २८
वेद सम्बन्धी प्रश्नोत्तर -*अमरेन्द्र अमृत शीर्ष* ३०
राम आस्था ही नहीं इतिहास के तथ्य भी हैं -*डॉ. धर्मवीर* ३२
समय की मांग-प्रखर हिन्दुत्व -*उदयन नम्बूदिरी* ३५
हिमालय में बांधों का औचित्य -*रोशन लाल शर्मा* ३७
क्या राम-रावण युद्ध आण्विक युद्ध था -*प्रमोद भार्गव* ३९
कश्मीर से सेना हटाने की सोचिए भी मत -*शेरू थपलियाल* ४३
बाल-जगत् ४५
महिला-जगत् सही तरीके से पकाएं दालें ४६
अम्मा मत जाओ -*समता शर्मा* ४७
स्वास्थ्य-चर्चा प्रसन्नता के १२ मंत्र -*प्रियदर्शी* ४८
भारतीय संस्कृति के प्रहरीः डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी -*शिवकुमार गोयल* ४९
जागरण या जगराता का वास्तविक कर्म -*डॉ. पूर्ण सिंह डबास* ५०
समाचार-दर्शन ५२

और वर्ग तथा जातिवादी विचारों से संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान करेगा।

आओ, हम प्रार्थना करें कि हे हुतात्माओं, देश और धर्म हेतु सर्वस्व समर्पित कर देने वाले वरेण्य पुरूषों, चंदन के तुल्य अपने शरीर को घिस-घिस कर मिटा देने वाले तपस्वियों, हे परंतपो अपना करूणापूर्ण आशीर्वाद देकर हम जैसे अकिंचन याचकों की झोली साहस-सहित संघर्ष करने के महान गुण से भरने की कृपा करो। हे भारत-माता के मृत्युंजय सपूतो, हमें भगीरथ के समान राष्ट्र के पुररुद्धार कार्य में जुटने के अपेक्षित धैर्य और शौर्य से समृद्ध करो ताकि काल के वज्रघातों और अपने परायों के उत्पातों को झेलते हुए भी हम भारत माता को उसका विलुप्त हुआ गौरव पुनः प्रदान कराने में इतना योगदान दे ही सकें, जितना एक तुच्छ सी गिलहरी ने मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम को सागर पार कराने हेतु सेतु के निर्माण में प्रदान किया था। बलिष्ठ भारत ही तो विश्व बन्धुत्व और शांति की कल्पना को साकार रूप प्रदान कराने की प्रतिश्रुति प्रदान करने में समर्थ और सक्षम हो सकेगा।

उन महामानवों का पावन स्मरण, उनके द्वारा प्रदर्शित पथ पर चलना ही युग धर्म है। उनकी स्मृति में शतशत नमन।।

दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार अभियान में विगत ४५ वर्षों से सतत प्रयासरत दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव दिनांक १४ से १६ मार्च तक समारोह आयोजित किया जाएगा।

इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ, आर्य महिला सम्मेलन, आर्य युवा सम्मेलन एवम् राष्ट्र जागृति सम्मेलन, कवि सम्मेलन, जनज्ञान पाठक सम्मेलन तो आयोजित होंगे ही साथ ही सप्ताह व्यापी योग शिविर के आयोजन का भी प्रयास किया जा रहा है। योग शिविर में भाग लेने वाले बहन, भाई अपना नाम शीघ्र भेजें।

कार्यक्रम में मार्गदर्शन लेने के लिए देश के प्रसिद्ध जन नेताओं, विचारकों और विद्वत् मनीषियों तथा प्रमुख समाज सेवियों को आमंत्रित किया जा रहा है इस वर्ष भी सामाजिक क्षेत्र में विशिष्ट योगदान करने वाले कुछ प्रमुख सज्जनों का अभिनन्दन भी किया जाएगा।

वार्षिकोत्सव को सफल बनाने में वेद एवम् धर्म तथा राष्ट्रनिष्ठ बहन, भाइयों का तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है।

-स्वामी जगदीश्वरानन्द
आचार्य, दयानन्द संस्थान

सामयिक-विचार

तसलीमा के प्रश्न पर 'सेकुलर' हत्या पिपासुओं के जिहाद से डरी भारत की राज्यसत्ता

प्रश्न तसलीमा का नहीं। तसलीमा नासरीन का 'अपराध' तो केवल यह है कि उन्होंने बांग्लादेश में हिन्दुओं की व्यथा कथा लिखी। वहां मुल्लाओं के शिकंजे में पीड़ित मुस्लिम महिलाओं की वेदना को अपने उपन्यासों में अंकित किया और भारत को एक मुक्त विचारों का देश मानकर यहां आई। पर यहां की सेकुलर सत्ता ने न तो नागरिकता हेतु दिए उनके आवेदन को स्वीकार किया और अब सौ करोड़ लोगों का यह बलशाली, समर्थ देश न पश्चिम बंगाल में तसलीमा की रक्षा कर पा रहा है, न राजस्थान में। धिक्कार है उनकी संवैधानिक निष्ठा पर। तसलीमा को पश्चिम बंगाल से निकालने के लिए वाममोर्चा समन्वय समिति के अध्यक्ष बिमान बोस ने जो बयान दिया वह हर भारतीय का सर शर्म से झुका गया। जिस भारत ने दुनिया की परवाह न करते हुए दलाई लामा और उनके अनुयायियों को भारत में शरण दी और विश्व में जहां कहीं अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला हुआ भारत ने उसका विरोध किया, जहां तिरंगा और संविधान निर्भयता एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के गौरवशाली प्रतीक माने जाते हैं, वहीं पश्चिम बंगाल की कम्युनिस्ट सरकार और केन्द्र की रीढ़हीन संप्रग सरकार एक महिला लेखिका की भारत में रक्षा कर पाने में असमर्थता जाहिर कर रही है। इससे बढ़कर कायरता और सम्मानहीन सत्ता-पिपासा और क्या होगी? मुस्लिम कट्टरपंथियों का अंधा विरोध और सरकार द्वारा उनकी नौकरी बजाना भारतीय स्वातंत्र्य इतिहास का सबसे काला और जुगुप्साजक अध्याय है। यह वह सरकार है जो भारत के बहुसंख्यक हिन्दुओं के देवी देवताओं और महापुरुषों का नग्न चित्र बनाने वाले हुसैन को दिल्ली के जामिया विश्वविद्यालय में सम्मानित करती है और हिन्दू वेदा मुखरित करने वाली मुस्लिम लेखिका को अनारक्षित छोड़ देती है। लेकिन इसमें उन हिन्दुओं का ही सबसे बड़ा दोष है जो हिन्दू नामधारी होते हुए भी सिर्फ आपसी लड़ाई, एक दूसरे को नीचा गिराने, जायज नाजायज तरीके से पैसा कमाने और सत्ता की बंदरबांट को ही जीवन का अंतिम ध्येय मान बैठे हैं। वे बड़े-बड़े साहित्यकार और लिक्खाड़ जो दुनिया भर को तौर तरीके सिखाने वाले लेख लिखते हैं, स्वयं भी हिन्दू समाज को तोड़ने और विखंडित करने में जब जुटे हुए दिखते हैं तो आशा किससे की जाए? ऐसी परिस्थिति में हिन्दू राष्ट्रवाद के नाम पर एकजुटता, ऐसी एकजुटता जो बाकी तमाम भेद, मन मुटाव, वैमनस्य और द्वेष भुलाकर धर्म और राष्ट्र के हित में संगठित प्रहारक शक्ति सृजित करे, वर्तमान चुनौतियों का एकमेव उत्तर है। सम्भवतः कम्युनिस्ट और रीढ़हीन संप्रग देश में जागृति की यह चिन्गारी सुलगाने का नियति प्रदत्त कार्य ही कर रहे हैं। उनके मर्मांतक प्रहारों से ही शायद हिन्दू समाज का सोया सिंह जगे।

जन-जीवन पर गहराते खतरे

इस देश के सामान्य नागरिक और राजनेता जिहादी आतंकवाद तथा कम्युनिस्ट माओवाद के आघातों की बहुत बड़ी कीमत चुका रहे हैं। हमारे दो प्रधानमंत्री आतंकवादी हमलों में मारे गए और विपक्ष के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी कोयम्बटूर बम विस्फोट में बाल बाल बचे थे। रा.स्व.संघ के कार्यकर्त्ता विशेष रूप से आतंकवादियों के निशाने पर रहते हैं क्योंकि उन्हें इनकी देशभक्ति से सर्वाधिक चिढ़ होती है। रा.स्व.संघ के चार प्रचारक त्रिपुरा के आतंकवादी गिरोह ने मार डाले थे। अब समाचार छपे हैं कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी के सुपुत्र श्री राहुल गांधी पर भी आतंकवादियों ने निशाना साधा हुआ है और वे उन्हें हथगोलों की माला पहनाने की तैयारी कर रहे थे। ईश्वर को धन्यवाद है कि यह षड्यंत्र समय रहते पता चल गया। भारतीय राजनीति में विभिन्न दलों के मध्य चाहे कितने ही मतभेद हों, लेकिन हम सबकी पहली पहचान भारतीय के नाते है और हमारे सारे मतभेद सांझे शत्रु का मुकाबला करने के लिए भुला देने चाहिए। किसी भी पार्टी के किसी भी नेता पर यदि भारत-शत्रु आतंकवादी और अन्य गुट कुदृष्टि डालते हैं तो ऐसे षड्यंत्र को विफल करने के लिए राजनीतिक भेदाभेद से ऊपर उठकर सोचने और सक्रिय होने की आवश्यकता है।

(पाञ्चजन्य, २ दिसम्बर २००७ से साभार)

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

हम दिव्य दृष्टि से देख रहे हैं

नींद आ रही थी, झपकी लग गयी और हम पहुंच गए, दूर पार कहीं दिव्य प्रकाश में और हमने देखा..

हमारे देश का नाम बदल गया है। उसमें नए-नए परिधान पहने, नई-नई मुद्राओं में नर-नारी घूम रहे हैं, जिनके वस्त्र 'मिनी' हैं उनमें न लज्जा है न संकोच पशुओं का सा आचरण हो रहा है।

हम भी कुछ देर उनकी छानबीन के लिए यहां आ गए। एक से पूछा, 'राम' कौन था।

उत्तर मिला- होगा कोई, हमें नही पता?

प्रश्न किया- कृष्ण का नाम सुना है?

उत्तर मिला- कहां रहता है?

गीता- वेद- उपनिषद्- दर्शन- रामायण के बारे में सैकड़ों से पूछा। पुस्तकालयों के खूब चक्कर लगाए, पर कहीं इन का पता नहीं था।

गंगा-यमुना का नाम भी बदला हुआ था।

इतिहास की पुस्तकें देखीं, तो शिवा-प्रताप देशद्रोहियों की पंक्तियों में प्रथम थे।

गांधी-नेहरू-दयानन्द और विवेकानन्द को पागल और सिर फिरा बताया गया था। हम घूमते रहे-देखते रहे!

पर कहीं भी कुछ ऐसा न था, जिसे देख कर विश्वास होता कि यह विश्व मुकुट भारत है।

हम कहीं नहीं थे, अरबों वर्ष पुरानी परम्पराएं नहीं थीं। संसार को प्रकाश देने वाला आध्यात्मिक ज्ञान नहीं था। लगता था कि जादू के जोर से सभी कुछ बदल दिया गया है।

सब कुछ देख कर हम कांप गए। समय की धारा को पहचान कर मौन रहे, क्योंकि भारत (भारत नहीं) रहा था। जैसे पवित्र सिन्ध भूमि आज पाकिस्तान के रूप में बदली हुई है उसी तरह देवताओं की स्वर्ण भूमि भी बदली हुई थी।

रक्तपात, अश्लीलता और गन्दगी के ढेर में पशुओं की तरह मनुष्यों को देख कर हम खड़े न रह सके, गिर पड़े ओर आंखें खुल गयीं।

वास्तविक जगत में लौटने पर हमने सारी स्थिति पर विचार किया और लगा कि जो सपना देखा है वह सत्य होने वाला है। हृदय रो पड़ा रात भर सिर धुनते रहे, पर कोई उपाय नजर नहीं आया। लगा जो हो रहा है, जो हवा चल रही है, उसका निश्चित परिणाम यही तो अनिवार्य रूप से होगा। इस पवित्र भूमि पर सब कुछ होगा, पर भारत 'भारत' न रहेगा।

जमीन का नाम देश नहीं है। सभ्यता संस्कृति, विचार ही देश को बनाते हैं। पर आज इस देश के नागरिक जिस ढंग से चल रहे हैं, उस का परिणाम दूर दृष्टि से हमने आप के सामने रख दिया है।

स्वार्थियों और धन के लोभियों, समय के साथ बहने वालों का अन्त यही तो होता है। देशद्रोही- देशभक्त होंगे, और देशभक्त देशद्रोही- काश, कि हम बदल सकते और सपना झूठ हो सकता!('जनज्ञान साप्ताहिक' १९७६ से..)

बजे नगाड़ा फिर धरती पर

–भारतेन्द्रनाथ

धर्म सुधा की लहरों पर, जय ध्वनि का प्रिय गुंजार हो,
मानवता के मस्तक पर, कुम्कुम की पुण्य बहार हो,
देश-देश में जितने प्राणी, सबमें नया निखार हो,
शहनाई के स्वर बहते हों, भाव भरे कल्याण का।
बजे नगाड़ा फिर धरती दयानन्द के नाम का।।१।।
मन्त्र यज्ञ से, पावन पथ में, मन-मन्दिर का प्यार हो,
आत्म-ज्ञान से सत्य-सोम की, बहती पुण्य बहार हो,
नित नूतन की धर्म भावना, गुण-गौरव श्रृंगार हो,
घर में भीतर बाहर सबसे, सच्चा ही व्यवहार हो,
दुर्जन भागें जन-जन जागे, जागे सूर्य विहान का,
बजे नगाड़ा फिर धरती पर, दयानन्द के नाम का।।२।।
गूंजे अम्बर वेदगान से, जीवन सरसे ज्ञान का।।

प्राणायाम से टूटी हड्डी जुड़ी

आदरणीया! दो माह पहले महावीर मंदिर की सीढ़ी से फिसल कर मेरा दायां पैर टूट गया था। सभी डॉक्टरों ने प्लास्टर कराके कम से कम दो माह बेडरेस्ट अत्यावश्यक बताया; मैं एलोपैथ के पाखंडियों के जाल से दूर ही रहना चाहता था। फिर भी भाइयों ने दस दिन बाद मेरा प्लास्टर करा ही दिया।

गुरू रामदेव जी हमारे निंगा (आसनसोल) के ही हवाई अड्डे पर आने वाले थे, और अपने घर में निपंगु बना सिर पीटता रहूँ। अतिशीघ्र ठीक होने हेतु एक नया प्रयोग करते हुए पाँचवें दिन प्लास्टर काट कर फेंका और अन्न-नमक खाना छोड़ दुग्ध व फलाहार पर रहने लगा ताकि मैं सुविधानुसार बैठकर या लेटकर दिन-रात में जब-जब इच्छा हो, ज्यादा से ज्यादा समय तक कपालभाति व अनुलोमविलोम करता रहूँ। मित्रों ने मुझे पागल कहा, किंतु, 'विज्ञान की कसौटी पर योग ने मुझे विचलित होने न दिया। रोज गोमूत्र युक्त गरम पानी से सेंक, सूर्य सेंक, के बाद गरम पट्टी बांध लेता था और सुबह-शाम गोमूत्र व आंवला चूर्ण पीता रहा। एक माह बाद एक्सरे में 75% प्रतिशत हड्डी जुड़ गयी थी। जबकि मैं आराम के दिनों में भी एक पैर के सहारे साइकिल चलाते हुए एक बार मंदिर जाके प्रातः कालीन योग शिविर व वेदपाठ का आरंभ करा के आ जाया करता था। आज मुझे बेहद प्रसन्नता है कि गोमूत्र व प्राणायाम के बल पर इतना जल्द पूर्ण स्वस्थ हो गया। **आर्य प्रहलाद गिरी, मठारी-निंगेश्वर मार्ग, निंगाधाम, पिन-११३३७०, आसनसोल (प.बं.)**

एक सांझा संकल्प

प्रिय बहन! गोवंश की रक्षा, सेवा एवं उपयोगिता के लिये हम एक सामूहिक दृष्टि पैदा करें। संयुक्त रूप से गोवंश को देश, समाज एवं हर परिवार की चौखट के साथ जोड़ें, यह कौन करेगा? कब होगा? कैसे होगा? इन सभी भ्रांतियों पर हमें गंभीरता से विचार करना होगा और इन भ्रांतियों को तोड़ना होगा। यह किसी एक व्यक्ति या एक संस्था के बस की बात नहीं, लेकिन हम यदि संयुक्त रूप से इस दिशा में काम आरम्भ कर दें, तो आज जो यह छोटा सा बीज है, कल बड़ा वृक्ष बन जाये तो आश्चर्य नहीं होगा। वैसे भी हम जीवन के समस्त कार्यों को निष्ठा, ईमानदारी एवं बड़ी ही मुस्तैदी से करते हैं और उनका ध्यान भी रखते हैं। अगर इस अमूल्य समय में हम थोड़ा सा गोवंश का भी ध्यान कर लें तो राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पटरी पर आ सकती है। कई बार एक छोटा सा दीया भी सूर्य से ज्यादा मूल्यवान एवं महत्त्वपूर्ण साबित हो सकता है। आओ, हम सब इस प्रक्रिया में लग जाएं, तथा संकल्प लें कि गोवंश की रक्षा एवं सेवा करके अपनी मातृभूमि को जग-मग कर देंगे।

-बी.एल.शर्मा 'प्रेम' पूर्व सांसद,
एस ५६२, स्कूल ब्लाक, शकरपुर, दिल्ली

आर्य साहित्यसेवी विश्वकोश योजना

आदरणीया! ओम् प्रतिष्ठान की ओर से योजना बनायी गयी है कि वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में अपना सर्वस्व आहूत करने वाले साहित्यसेवियों का परिचय एक ही स्थान पर दिया जाए। यह हमारा पवित्र कर्त्तव्य है कि जिन आर्य लेखकों ने विभिन्न विधाओं में साहित्य-सृजन किया है, और जो वर्तमान में कर रहे हैं, उनके प्रति कृतज्ञता का भाव अपनाएं। दो योजनाओं (दिवंगत आर्य साहित्य सेवी एवं वर्तमान आर्य साहित्य सेवी) के अन्तर्गत विश्व भर के तथा विश्व की सभी भाषाओं के लेखकों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों, कवियों, पत्रकारों, समालोचकों, शोधनकर्त्ताओं तथा अन्य विभिन्न विधाओं के साहित्यकारों को सम्मिलित किया जाएगा। जिन विद्वानों ने स्वतन्त्र ग्रन्थों का प्रणयन नहीं किया अपितु लेख लिखे हैं तथा पत्र-पत्रिकाएं और ग्रन्थ सम्पादित किए हैं, सम्पादकीय तथा अग्रलेख लिखे हैं, उन्हें भी इसमें सम्मिलित किया जाएगा। निवेदन है कि सभी भाषाओं के लेखक, कवि, विद्वान साहित्यकारों अपना जीवन-परिचय, अपने साहित्य का परिचय तथा पासपोर्ट आकार का चित्र एवं प्रकाशित साहित्य की छायाप्रति अथवा मूल संलग्न परिपत्र के साथ यथाशीघ्र भेजें। विश्वभर के आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरूकुलों, स्कूलों, कॉलेजों, डी.ए.वी. संस्थाओं, आश्रमों, ट्रस्टों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे वर्तमान लेखकों तथा दिवंगत लेखकों का तथा उन संन्यासी महानुभावों का जो अन्तिम समय तक, उनकी संस्था से सम्बद्ध रहे हैं, का जीवन-परिचय, साहित्य का परिचय तथा पासपोर्ट आकार का चित्र तथा यथासम्भव उनके साहित्य की छायाप्रति अथवा मूल, संलग्न परिपत्र के साथ भेजने की कृपा करें। **-मूलचन्द गुप्त, डॉ. धर्मपाल आर्य, बी-१/२७, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली-४५**

दौहे-चौपायी में

स्वस्ति वाचन

—देवनारायण भारद्वाज

सृष्टि यज्ञ के अग्रणी, अग्नि ईश भगवान।
वन्दनशील कृतज्ञ का, करें ओ३म् कल्याण॥
सृष्टि पूर्व के परम पुरोहित। सृष्टि यज्ञ को करते ज्योतित॥
सृष्टि सृजन के हो तुम होता। हवन-दान गुण शिल्प सँजोता॥
ऋतु-ऋतु श्रेष्ठ पदारथ दाता। प्रभु मृदु रत्न पोष चमकाता॥१॥
पुत्र पिता से ज्यों सुख पाता। पिता पुत्र हित सुमति प्रदाता॥
ज्योति पुञ्ज हे विमल विधाता। हमसे सुखकर जोड़ो नाता॥२॥
सूर्य-चन्द्र घन पर्वत सारे। करें लोक कल्याण हमारे॥
पुष्टि मेघ हो मंगलकारी। अन्तरिक्ष भू हो सुखकारी॥३॥
वायु सूर्य से परिचय पावैं। सोम सुधा औषधियाँ लावैं॥
वेद विज्ञ आचार्य पधारें। शिष्य सहित मंगल उच्चारें॥४॥
पण्डित ज्ञानी सुख बरसावें। अग्नि विविध मंगल सरसावें।
हों संवादी शब्द सुरक्षक। मेधावी हों सारे शिक्षक॥
बसे बसाये विश्व में, वैश्वानर भगवान।
वन्दनशील कृतज्ञ का, करें ओ३म् कल्याण॥५॥
प्राण-अपान सन्तुलन भावे। धेनु सरित धन पन्थ दिखावे॥
विद्युत वायु भूमि सुख दाता। स्वस्ति करें नित अदिति विधाता॥६॥
दानशील अघ रहित अकामी। रवि शशि सम शुचि पथ अनुगामी॥
प्रकृति ज्ञान पाकर निष्कामी। बने सभी सन्मति के स्वामी॥७॥
यज्ञ ज्ञान अनुभवी सुजाना। मननशील उन्नत विद्वाना॥
यही हमें दें शुभ विज्ञाना। रक्षित करें हमें विधि नाना॥८॥
भू माता समधुर पय दाता। गगन मेघ वर जल बरसाता॥
पायें सदा सकल ब्रह्मचारी। बनें दिव्य जग के नरनारी॥९॥
कर्मशील मानव अप्रमादी। प्राप्त अमर जीवन मर्यादी॥
विमल बुद्धिरथ ज्योति प्रकाश। लेंय स्वस्ति पद अनघ अकाश॥
हमको दें आदित्य जन, अमर सुखद विज्ञान।
वन्दनशील कृतज्ञ का, करें ओ३म् कल्याण॥१०॥
तेज, ज्ञान-वय यज्ञ सुपासा। सतत सौख्य द्यौ लोक निवासा॥
आसन उच्च सदा वे पावें। हम सबकी जो स्वस्ति बढ़ावें॥११॥
स्तुति गीत रचाये किसने। यज्ञ भव्य चमकाये जिसने॥
यज्ञ जगत दुःख दूषण त्राता। पालन कर सुमङ्गली प्रदाता॥१२॥
मुख का एक नासिका के दो। दो कानों के आँखों के दो॥
इन सातों होताओं के हित। यज्ञ सुधा आदित्य भरें नित॥१३॥
ज्ञानी जन जग ज्ञाता नामी। जो हैं जड़ जंगम के स्वामी॥
कृत-अकृत सब पाप दुरावैं। शुभ कल्याण पन्थ दिखलावैं॥१४॥
सबल विज्ञ जो पाप मिटाते। विपदा में हम जिन्हें बुलाते॥
शान्ति लाभ अन्नादि सुरक्षा। पायें हम विद्या सद्शिक्षा॥
प्राण, वायु, जल, अग्नि, द्यौ, भू, विद्या का ज्ञान।
वन्दनशील कृतज्ञ का, करें ओ३म् कल्याण॥१५॥
सुन्दर भाँति सुरक्षा वाली। रहित उपद्रव बहु सुखशाली॥
विद्युत यन्त्र विशेष बनायें। अन्तरिक्ष में जिन्हें उड़ायें॥
भ्रमण करें चढ़कर लोकों का। ऐसी दें विज्ञानी नौका॥१६॥
हे विद्वानो दो सद् शिक्षा। करो सदा पीड़ा से रक्षा॥
स्तुति करते आज तुम्हारी। अरि से रक्षा करो हमारी॥१७॥
करो सर्व दुःख दूर हमारे। लोभ मोह मद् असघ अरि सारे॥
यज्ञ हीनता दूर भगावें। रोग, द्वेष अघ निकट न आवें॥१८॥
हे आदित्य सुनीति तुम्हारी। सत्पुरुषों को करे सुखारी॥
पाये प्रजा धर्म हितकारी। विनती तुमसे यही हमारी॥१९॥
अन्न विभव रथ रक्षा करहीं। शूरवीर अरि से रन लरहीं॥
रखकर रक्षित यान विमाना। चढ़ें सदा हम देव सुजाना॥
यन्त्र यान निर्माण कर, देव वरें विज्ञान।
वन्दनशील कृतज्ञ का, करें ओ३म् कल्याण॥२०॥
सजल शुष्क थल स्वस्ति प्रदा हो। आयुध-बल से विजय सदा हो॥
सैन्य सबल गोधन बलदा हो। प्रिय जन्मभूमि सुत सुखदा हो॥२१॥
पृथ्वी सुगम रम्य पथ वाली। धन अन्नादि पूर्ण हरियाली॥
भूमि भवन वन सुखद अनन्ता। रचें धरा पर प्रिय अनियन्ता॥२२॥
हे प्रभु आश्रय हमें तुम्हारा। पशुधन जल हो अन्न अपारा॥
यज्ञ श्रेष्ठ तम कर्म सुखारा। अवध धेनु का लिए सहारा॥
घृत-पय घर-घर भरे अपारा। व्याधि रहित भूमण्डल सारा॥
गौ का अधिपति बने न पापी। रक्षक कब इनका सन्तापी॥
चोर कृतघ्नी निश्चर पापी। ईश बना मत शासक तापी॥
ईश्वर का उपदेश है, करो जीव उत्थान।
वन्दनशील कृतज्ञ का, करें ओ३म् कल्याण॥२३॥
हमें भद्र संकल्प सिखाओ। उत्तम सुखी सुविज्ञ बनाओ॥
सभा मध्य विद्वानों आओ। दुःख दरिद्र सब दूर भगाओ॥२४॥
सहज सुमति दो विद्वानों की। विद्या दो मेधावानों की॥
उनका मित्रभाव हम पायें। वैद्य हमारी आयु बढ़ायें॥२५॥
हे चर अचर जगत पति देवा। करें नित्य प्रति हम जन सेवा॥
रक्षा करिये प्रभो हमारी। वृद्धि पुष्टि दें कीर्ति तुम्हारी॥२६॥
इन्द्र, क्षत्र दें जल-बल वर्षा। वैश्य हर्ष ऐश्वर्य विमर्षा॥
शूद्र स्वेद श्रम साम्य प्रसंगा। वेद बृहस्पति दें सत्संगा॥
अनुभवी वृद्ध प्रभु कृपा, हो समाज उत्थान।
वन्दनशील कृतज्ञ का, करें ओ३म् कल्याण॥२७॥
शुभ शुचि शब्द सुने श्रवणों से। शुभ शुचि रूप लखें नयनों से॥
सम्पुष्ट और दृढ़ अंगी हों। आजीवन हित-सत्संगी हों॥२८॥
(शेष पृष्ठ २५ पर)

वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की वैदिकता

–आचार्य रामनाथ वेदालंकार

[प्रस्तुत सारगर्भित लेख प्रख्यात वयोवृद्ध विद्वान् के सतत स्वाध्याय, अन्वेषण तथा अनुसन्धानरत तत्त्व-विवेचनी प्रज्ञा का सुमधुर फल है। (यद्यपि लेख के शीर्षक से ऐसा प्रतीत होता हैं कि आपने केवल दो आश्रमों पर विचार प्रस्तुत किये हैं, तथापि प्रारम्भिक अनुच्छेदों में मनु की प्रतिज्ञया '**सर्वज्ञानमयो हि सः**' द्वारा मिले संकेतों का अन्वेषण करके मन्त्रोद्धरणवपूर्वक चारों आश्रमों को वेदमूलक सिद्ध किया है उसके पश्चात् विभिन्न शब्दों द्वारा वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रमों पर विशेष विचार प्रस्तुत किया है कि लेखक की प्रमाणपूर्वक उपपत्ति दर्शाने वाली शैली आकर्षक एवं सुग्राह्य है। अन्त में आपने उन दो शंकाओं का समाधान युक्ति-प्रमाण-पूर्वक किया है, जिन्हें विद्धान लोग वेद्‌मन्त्रों के आधार पर उठाते रहे हैं। आपका यह कहना सर्वथा समुचित है कि प्रकारणानुसार 'पूर्ण आयु' का अर्थ 'गृहस्थाश्रम के लिए नियत काल' जो वैवाहिक जीवनारम्भ सापेक्ष है। संन्यास आश्रम अनासक्ति और वैराग्य की अपेक्षा रखता है, इसलिए सामान्य नहीं है। -सम्पादक]

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिन लुप्त प्राचीन परम्पराओं को पुनर्जीवित किया, उनमें आश्रम-व्यवस्था भी है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चारों आश्रमों का धर्मसूत्रों तथा स्मृतियों में विस्तार से वर्णन मिलता है। प्रश्न यह है कि इस आश्रम-परम्परा को वेदों का भी समर्थन प्राप्त है, या नहीं? वेदों में आश्रम शब्द नहीं है गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास और संन्यासी या परिवाट शब्द भी नहीं है। वेदों में जब मूल नाम ही नहीं हैं, तब आश्रम-व्यवस्था को वैदिक कैसे माना जा सकता है? ब्रह्मचर्याश्रम और गृहस्थाश्रम के विषय में यह स्थिति है कि वेदों में श्रम नाम से इनका उल्लेख भले ही न हो, तथापि इन दोनों आश्रमों के सम्बन्ध में विपुल सामग्री प्राप्त होती है। अथर्ववेद काण्ड ११ का सूक्त संख्या ५, जिसमें २६ मन्त्र हैं सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य-सूक्त के नाम से प्रसिद्व है। इसमें उपनयन-संस्कार आचार्य-गरिमा, ब्रह्मचर्य-प्रताप आदि का सुन्दर वर्णन है। अन्यत्र मेखला-बन्धन, तप, श्रद्धा, शिक्षापद्धति आदि की भी सुविस्तृत चर्चा मिलती हैं। ऋग्वेद दशम मण्डल का सूक्त ८५ जिसमें ४६ मन्त्र हैं, पूरा विवाह तथा गृहस्थ विषयक है। अथर्ववेद काण्ड १४, जिसमें दो बड़े सूक्त क्रमशः ६४ तथा ७५ मन्त्रों के हैं, विवाह तथा गृहाश्रम से ही सम्बद्ध हैं। अन्यत्र भी वेदों में गृहस्थाश्रम सम्बन्धी प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। परिणामतः ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थ आश्रमों के अवैदिक होने का प्रश्न ही नहीं उठता। वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों के विषय में अवश्य ही यह शंका उपस्थित है कि वेदों में एतद्विषयक कोई संकेत मिलते हैं या नहीं?

मनु की प्रतिज्ञा है कि मैंने जिसके भी जो धर्म अपनी स्मृति में प्रतिपादित किये हैं, उन सबके संकेत मुझे वेदों से ही प्राप्त हुए हैं। अतः हम कल्पना कर सकते हैं कि मनुप्रोक्त वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों का मूल भी वेद ही हैं। वेदों में सचमुच आश्रम विषयक विभिन्न संकेत प्राप्त होते हैं।

लोक- प्रथम तो आश्रमों के लिए लोक शब्द आया है। पृथिवीलोक, अन्तरिक्षलोक, द्युलोक तथा स्वलोक क्रमशः- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रमों के सूचक हैं। ब्रह्मचर्यलोक में हम अनृण रहें, अगले गृहस्थलोक में भी अनृण रहें और तीसरे वानप्रस्थ लोक में भी अनृण रहें-

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम। अथर्व० (६.११७.३)।।

आप कह सकते हैं कि यहाँ चतुर्थ लोक संन्यासाश्रम का नाम क्यों नहीं आया, क्या उसमें अनृण होना आश्रम की तो सबके लिए अनिवार्यता है ही नहीं, ब्रह्मचारियों को अभी ज्ञात ही नहीं है कि हम संन्यासी बनेंगे या नहीं, क्योंकि संन्यास के अधिकारी तो केवल ब्राह्मण ही होते हैं। एक और मन्त्र देखिए, जिसमें चारों लोकों या आश्रमों का संकेत उपलब्ध है-

पृथिव्या अहमुदन्तरिक्षमारूहमन्तरिक्षाद् दिवमारूहम्।
दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्वर्ज्योतिरगामहम्।। (यजुः० १७.६७)।।

यह मन्त्र संन्यासी की ओर से कहा जा रहा है। वह कह रहा है कि पृथिवीलोक (ब्रह्मचर्याश्रम) से ऊपर उठकर मैं अन्तरिक्षलोक (गृहाश्रम) में पहुँचा, अन्तरिक्षलोक (गृहाश्रम) से ऊपर उठकर द्युलोक (वानप्रस्थाश्रम) में पहुँचा और सुख के पृष्ट द्युलोक (वानप्रस्थाश्रम) से अब स्वर्लोक (संन्यासाश्रम) में आ गया हूँ।

समुद्र- वेद में आश्रमों को समुद्र की संज्ञा भी दी गयी है। ब्रह्मचर्यसूक्त कहता है कि ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्याश्रम

में ज्ञानसलिल के ऊपर तप करता हुआ दर्शन, श्रवण, यश आदि प्राप्त करता है-

तानि कल्पद् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे तपो:तिष्ठत् तप्यमान: समुद्रे।। अथर्व० ११.५.२६ ।।

ऋग्वेद में 'हमें कैसा पुत्र प्राप्त हो' इन्द्र से यह प्रार्थना करते हुए पुत्र का एक विशेषण 'चतुःसमुद्रम्' (ऋ. १०.४७.२) भी दिया गया है, जिसका आशय है कि हमें ऐसा पुत्र दिजिए जो चारों आश्रम-समुद्रों को पार करने वाला हो।

चार पड़ाव - ब्रह्मचर्य-सूक्त में ही ब्रह्मचर्याश्रम को एक पड़ाव मानकर अगले तीन पड़ावों या आश्रमों की चर्चा इस रूप में की गई है-

आचार्यो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी प्रजापतिः।
प्रजापतिर्विराजति विराडिन्द्रोऽभवद्वशी।।
अथर्व० ११.५.१६ ।।

गुरूकुल में आचार्य ब्रह्मचारी के साथ तादात्म्य स्थापित करता है, अर्थात् उसे अपने से अभिन्न मानकर उसके साथ पुत्रवत् व्यवहार करता है। ब्रह्मचारी, स्नातक होने के पश्चात् प्रजापति बनता है, प्रजापति विराड् बनता है और विराड् वशी इन्द्र बनता है। यहाँ प्रजापति, विराड् और वशी इन्द्र क्रमशः गृहाश्रमी, वानप्रस्थ तथा संन्यासी के नाम हैं। सन्तानों को पालक होने से गृहस्थ प्रजापति है, विशेष तेजस्वी-तपस्वी होने से वानप्रस्थ विराट् है, इन्द्रिय-मन-आत्मा का वशकर्ता तथा आध्यात्मिक ऐश्वर्यो का अधिपति होने से संन्यासी '**वशी-इन्द्र**' कहलाता है।

स्वर्ग- पं. बुद्धदेव विद्यालंकार की एक '**स्वर्ग**' नामक पुस्तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की श्रद्धानन्दस्मारक निधि से सवंत् २००० में प्रकाशित हुई थी। लेखक का कथन है कि वेद में तीन स्वर्गों का वर्णन मिलता है, जिनमें प्रथम स्वर्ग ब्रह्मचर्याश्रम, द्वितीय स्वर्ग गृहस्थाश्रम तथा तृतीया वानप्रस्थाश्रम है, जो बुढ़ापे के पश्चात् मिलता है।- 'जरसःपरस्तात् तृतीये नाके सधमादं मदेम' (अथर्व० ६.१२२.४)। ब्रह्मचर्याश्रमरूप स्वर्ग का वर्णन अथर्व० ४.२५ के ब्रह्मोदन-सूक्त में, गृहस्थाश्रमरूप स्वर्ग का वर्णन अथर्व० ४.३४ के विष्टारी ओदन सूक्त में तथा वानप्रस्थाश्रमरूप स्वर्ग का वर्णन अथर्व० ९.५ के अज-नाक सूक्त में उपलब्ध होता है। स्वामी दयानन्द ने भी संस्कारविधि के वानप्रस्थप्रकरण में अज-नाक सूक्त के प्रथम मन्त्र 'अजो नाकमाक्रमतां तृतीयाम्' की व्याख्या में 'तृतीया नाक' से वानप्रस्थाश्रम का ही ग्रहण किया है। चतुर्थ आश्रम 'स्वः' है, तथा पूर्व तीनों आश्रम 'स्वर्ग' (स्वः को ले जाने वाले) हैं।

वानप्रस्थाश्रम पर विशेष विचार - वेदों में मुनि, भृगु, वनी, वनसद् आदि शब्दों से भी वानप्रस्थाश्रम का उल्लेख हुआ है।

मुनि- ऋ० १०.१३६ में मुनियों का वर्णन आता हैं। ये 'वातरशन' मुनि हैं अर्थात् ऐसे मुनि जिन्होंने वायु या प्राण की रस्सी से स्वयं को नियन्त्रित किया हुआ है।

मुनयो वातरशनाः पिशङ्गा वसते मलाः।
वातस्यानु ध्राजिं यन्ति यद् देवासो अविक्षता।।
(मन्त्र-२)

ये वातरशन वानप्रस्थ मुनि पिंगल वर्ण के मटमैले जटाजूट धारण करते हैं और ये प्राण की गति के साथ-साथ आत्मोकर्ष प्राप्त कर लेते हैं, क्योंकि दिव्य शक्तियाँ इनके अन्दर प्रविष्ट हो जाती हैं।

भृगु - 'प्रथिम्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्च' (उणादि १.२८)। 'भृज्जति तपसा शरीरमिति भृगुः, ऋषिः प्रतापी वा' (दयानन्दवृतिः)। तपस्वी वानप्रस्थ ऋषि भृगु कहलाते हैं। 'दधुष्टावा भृगवो मानुषेषु' (ऋ० १.५८.६) हे यज्ञाग्नि ! वानप्रस्थ जन यज्ञ द्वारा तुझे मनुष्यों के मध्य स्थापित करते हैं।

वनि- क्वचिद् वेद में वानप्रस्थों का ग्रहण इस शब्द से भी होता है। यथा - अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता। (ऋ० ३.४०.७)।।

वानप्रस्थ जन अक्षय द्युम्नों (तेजों) को पाने के लिए इन्द्र की शरण में जाते है।

वनसद्- वनवासी वानप्रस्थ। 'वनसदे वेड्' (यजुः० १७.१२) वनस्थ वानप्रस्थ ऋषि को भोजन पहुँचाओ।

अरण्यानी सूक्त- ऋग्वेद १०.१४६ अरण्यानी-सूक्त कहलाता है, अरण्यानी की व्याख्या में यास्काचार्य लिखते हैं- अरण्यानी अरण्यस्य पत्नी (निरू. ९.८) अर्थात् जंगल की पत्नी अरण्यानी कहलाती है। जंगल की पत्नी हो नहीं सकती, अतः लक्षणा प्रवृत्त होकर उरण्यस्थ (वानप्रस्थ) की पत्नी अर्थ निकलता है, उसमें पति सम्भवतः दिवंगत हो चुके हैं, अतः वह अकेली जंगल में निवास कर रही है। प्रथम मन्त्र में कोई नागरिक उससे प्रश्न करता है- ''हे वनदेवी, तुम अकेली इस बीहड़ जंगल में लुकी-छिपी-सी क्यों रहती हो, नगर में क्यों नहीं चलतीं? क्या यहाँ तुम्हें भय नहीं लगता ?'' उसका उतर सुनने योग्य है। वह कहती है - ''वन में तो

बिना तानपूरे के ही संगीत सुनने को मिलता है। वृषारव (मोटी ध्वनी वाले जन्तु) के पास जब चिच्चिक (पतली ध्वनी वाला जन्तु) आकर बैठ जाता है और दोनों अपना आलाप आरम्भ करते हैं तब ऐसा लगता है, मानो यह जंगल वीणाओं पर सरगम के स्वर निकाल रहा है। और देखो, इधर गौएं-सी चर रही हैं, इधर लताकुंज घरों जैसे दिखाई दे रहे हैं। सायंकाल नगर की ओर जाती हुई लकड़ियों से भरी हुई गाड़ियों की पंक्ति का दृश्य भी अनोखा होता है। सम्भवत: तुम सोचते होगे कि जंगल में रहना तो शेर, चीते, हाथी, आदि हिंसक जन्तुओं के कारण निरापद नहीं है।, परन्तु अहिंसा की भावना हो जाने पर हिंसक जन्तु तो मित्र बन जाते हैं। यहाँ तो वन के स्वादु फल खाकर मनुष्य आराम की नींद सोता है। देखो, यहाँ अञ्जन वृक्ष फूलों की सुगन्ध व्याप रही है, बिना किसानों के ही यहाँ अपार जंगली धान उगे हुए हैं। भोले हरिण इधर-उधर फिरते हुए पुत्रवत् प्रतीत होते हैं। भाई, मैं तो इस वन-शोभा पर मुग्ध हूँ।

यह सूक्त वानप्रस्थ आश्रम का जीता-जागता चित्र उपस्थित कर रहा है।

संन्यास आश्रम

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के पञ्चम समुल्लास में लिखा है कि "वेदों में भी यतय:, ब्राह्मणस्य विजानत: इत्यादि पदों से संन्यास का विधान है।" उन्होंने संस्कारविधि के संन्यास प्रकरण में 'यतय:' की निम्न ऋचा उद्धृत की है-

यतय:-

यद् देवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत। यत्रा समुन्द्र आ गूळ्हमा सूर्यमाजभर्तन ॥ (ऋ० १०.७२.७)॥

इसका यह अर्थ हो सकता है-"हे देवो, जैसे संन्यासीगण भुवनों को अपने उपदेशामृत से सींचते हैं, वैसे ही जब तुमने भुवनों को सींचा, तब तुम समुद्र में छिपे हुए सूर्य को बाहर निकाल लाये।" वेदों में क्वचित् यतियों का भृगुओं के साथ वर्णन मिलता है भृगु वानप्रस्थ हैं, यति संन्यासी हैं।

तत् त्वा यामि सुवीर्य तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये।
येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्व माविथ॥
ऋ० ८.३.९॥

"हे इन्द्र, मैं तुमसे वह सुवीर्य माँगता हूँ और पूर्ण जागरूकता के लिए वह ब्रह्मज्ञान माँगता हूँ, जिससे तुम संन्यासियों और वानप्रस्थ के लिए (**यतिभ्यो भृगवे**) अध्यात्म धन प्रदान करते हो और जिससे तुम प्रस्कण्व (अतिशय बुद्धिमान् जन) की रक्षा करते हो।" यहाँ सायण ने 'यति' का कर्मोपरत आयज्ञिक जन अर्थ किया है, जो संन्यासी से मेल खाता है। वैकल्पिक दूसरा अर्थ 'कर्मनिरत अङ्गिरस' लिया है।

य इन्द्र यतयस्त्वा भृगवो ये च तुष्टुवु:।
ममेद्रुग्र श्रुधी हवम्॥ (ऋ० ८.६.१८)॥

'हे इन्द्र, संन्यासी (यतय:) और वानप्रस्थ जन (भृगव:) आपकी स्तुति करते हैं, उनकी पुकार आप सुनते हो, वैसे ही मेरी पुकार भी आप सुनो॥"

'वैदिक इण्डैक्स' के लेखक मैकडानल और कीथ यति के विषय में लिखते हैं कि यजुर्वेद संहिताओं में तथा क्वचिद् अन्यत्र भी यतिगण एक ऐसी जाति के लोग हैं, जिन्हें इन्द्र ने सालावृकों को दे दिया था। परन्तु सालावृकों को देने की बात शाखा-ग्रंथों में मिलती है, मूल संन्यासी का ही वाचक है। तै. संहिता (२.४.९.२) में लिखा है कि इन्द्र ने यतियों को सालावृकों की भेंट कर दिया। जब सालावृक उन्हें खा रहे थे, तब उनके सिर नीचे गिरे, उनसे खजूर उत्पत्र हो गये। खजूरों का रस ऊपर उड़ा तब वे करीर बन गये। करीर सौम्य होते हैं। सौम्य आहुति में ही यह सामर्थ्य होता है कि वह आकाश से वर्षा कराती है। इसीलिए वृष्टियज्ञ में करीरों की आहुति दी जाती है। ऐसे प्रकरणों का आशय अन्वेषणीय है।

ब्राह्मण - अथर्ववेद के (५.१८.१९) सूक्त ब्रह्मगवी-सूक्त है, जिनमें ब्राह्मण की गौ को क्षत्रिय द्वारा खाने का निषेध किया गया है। ब्राह्मण संन्यासी है, गौ उसकी वाणी है, और खाने का आशय उपेक्षा करना है। इस प्रकार इन सूक्तों में यह बताया गया है कि राजा संन्यासी की हितोपदेश की वाणी का अनादर न करे-

नैतां ने देवा अददुस्तुभ्यं नृपते अत्तेव।
मा ब्राह्मणस्य रजन्य गां जिघत्सो अनाद्याम्॥
(अथर्व० ५.१८.१)॥

हे क्षत्रिय राजन्! तुझे विद्वानों ने ब्राह्मण की गौ (संन्यासी की वाणी) खाने (उपेक्षा करने) के लिए नहीं दी है वह खाने योग्य (उपेक्षायोग्य) नहीं है। अत: तू ब्राह्मण की गौ को खाने की इच्छा मत कर।

विजानत:-

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानत:।
यत्र को मोह: क: शोक एकत्वमनुपश्यत:॥
यजु:० ४०.७॥

यजुर्वेरदभाष्य में दयानन्द स्वामी इस मन्त्र का भावार्थ इन शब्दों में लिखते हैं।- " जो विद्वान संन्यासी लोग परामात्मा के सहचारी प्राणिमात्र को अपने आत्मा के तुल्य जानते हैं, अर्थात् जैसे अपना हित चाहते हैं, वैसे ही अन्यों में भी बर्तते हैं, एक अद्वितीय परमेश्वर के शरण को प्राप्त होते हैं।, उनको मोह, शोक और लोभादि कभी प्राप्त नहीं होते।"

तुरीयः आदित्यः- इसका अर्थ है चतुर्थाश्रमी संन्यासी-

कदाचन प्रयुच्छस्युभे निपासि जन्मनी।
तुरीयादित्य हवनं त इन्द्रियमातस्थावमृतं दिवि।
(ऋ० ८.५२.७)।।

हे चतुर्थाश्रमी संन्यासिन्, आप कभी प्रमाद नहीं करते हो, मातृजन्म और विद्याजन्म दोनों जन्मों की लाज रखते हो। आपका हवन-यज्ञ आत्मारूप इन्द्र में स्थित है, क्योंकि आत्मा में यज्ञाग्नियों को समारोपित करके आप संन्यासी हुए हो। देखो, यह आदित्य संन्यासी अन्तःप्रकाश में स्थित है।

एक शंका

ऋग्वेद (१०.८५) के विवाह-सूक्त में एक ऋचा इस रूप में पठित है-

इहैव स्तं वियौस्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।।
(ऋ. १०.८५.४२)।।

इस ऋचा का यह अर्थ किया जाता है- हे पति-पत्नी आप दोनों यहीं (गृहाश्रम में ही) रहो, इससे वियुक्त मत होवो। अपने घर में पुत्र -पौत्रों (तथा पुत्री-दौहित्रों) के साथ खेलते हुए, आनन्दित रहते हुए सम्पूर्ण आयु व्यतीत करो।

परन्तु पूरे प्रकरण को देखते हुए इस ऋचा का यह आशय नहीं हो सकता। इसी सूक्त के २७वें मन्त्र में कहा गया है कि हे पत्नी, तू इस पति से सन्तान उन्पन्न कर, परन्तु जब तुम दोनों पति-पत्नी वृद्व हो जाओगे, तब ज्ञानोपदेश या यज्ञोपदेश किया करना-'अधा जिव्री विदथमा वदाथः'। विदथ का अर्थ निरूक्त में ज्ञान और यज्ञ किया गया है और निघण्टु में सह यज्ञवाचक शब्दों में पठित है। इसी सूक्त के १६वें मन्त्र में वधू को कहा गया है कि तू पतिगृह को जा, जिससे गृहपत्नी बन कर रहे, किन्तु जब तू वशिनी हो जाये, तब (वानप्रस्थ या संन्यास ग्रहण करके) ज्ञानोपदेश या यज्ञोपदेश किया करना।

इस प्रकार वेदोक्त मर्यादा यह सिद्व होती है कि बूढ़े होने के पश्चात् वानप्रस्थाश्रम या संन्यासाश्रम में जाकर ज्ञानोपदेश और यज्ञोपदेश करना है, इससे पूर्व गृहस्थ भोग करना है। इसी परिप्रेक्ष्य में **'इहैव स्तम्'** आदि मन्त्र का अर्थ करना अभीष्ट है। यथा-

हे पति-पत्नि, आप दोनों **इह एव स्तम्**= इसी पूर्वोक्त मर्यादा में रहो, **मा वियौष्टम्**= इससे च्युत मत होवो। **स्वे गृहे**=अपने घर में **पुत्रैः नप्तृभिः**= पुत्र-पौत्रों, पुत्री-दौहित्रों के साथ **क्रीडन्तौ** = खेलते हुए, **मोदमानौ**= आनन्दित होते हुए **विश्वम् आयुः**= [गृहस्थ की मर्यादा में नियत] सम्पूर्ण आयु **व्यश्नुतम्**= व्यतीत करो।

विश्व शब्द सापेक्ष होता है। प्रकरणानुसार उसका आशय समझना होता है। जैसे, किसी के लिए कहा जाये कि 'विश्वं भक्तं भुक्तम् अनेन' इसने सारा भात खा लिया, तो प्रकरणानुकूल यही आशय लिया जाएगा कि बटलोई में जितना भात था वह सब इसने खा लिया। यह तात्पर्य नहीं समझा जाएगा कि संसार भर में जितना भात था वह सब इसने खा लिया। यही स्थिति प्रस्तुत मन्त्र मे 'विश्व' शब्द की है। प्रकरणानुकूल 'विश्वम् आयुः' का यहाँ यही अर्थ बनता है कि गृहाश्रम की मर्यादा में जितनी आयु है वह सब पुत्र-पौत्रों के साथ हंसते-हंसते हुए व्यतीत करो।

गृहाश्रम-मर्यादा की नियत आयु क्या है, इस विषय में मनु ने लिखा है कि गृहस्थ जब देखे कि मेरे शरीर में झुरियां पड़ गई हैं, मै बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी सन्तानों के सन्तानें भी हो गयी हैं, तब वह वानप्रस्थाश्रम ग्रहण कर ले-

सन्तानों की सन्तानें-

गृहस्थस्तु यदा पश्येद् वलीपलितमात्मनः।
अपत्यस्यैव चापत्यं तदरण्यं समाश्रयेत्।।

सन्तानों की सन्तानें हो जाने के पश्चात् कुछ समय उनके साथ हंसे-खेलेंगे भी। वेदोक्त मर्यादा भी यही है कि पति-पत्नि जब बूढ़े हो जाएं तथा पुत्र-पौत्रों के साथ हंस-खेल लें तब वानप्रस्थ हो जाना चाहिए। इस दृष्टि से देखें तो यदि २५ वर्ष की आयु में अपना विवाह हो जाता हैं, तो वानप्रस्थ या सीधे संन्यास ग्रहण करने का समय लगभग ६० वर्ष की आयु ठहरती हैं। वैसे अपना विवाह किस आयु में हुआ हैं, इस पर निर्भर करता है। स्वामी जी ने भी २५, ४५ और ४८ वर्ष का ब्रह्मचर्याश्रम माना है। अतः सबके लिए गृहत्याग करने की कोई एक

निश्चित आयु नहीं है। गृहत्याग की अन्तिम अवधि की प्रतीक्षा करना भी आवश्यक नहीं है। यदि किसी को विवाह के दस वर्ष बाद ही विरक्ति हो जाती है तो वह उसी समय वानप्रस्थ या संन्यास की दीक्षा ले सकता हैं दीक्षा देने वाले को इसकी परीक्षा करनी होगी की सच्ची विरक्ति है या नहीं संन्यास सबके लिए नहीं है जो गुण-कर्मानुसार ब्राह्मण हो तथा संन्यास के कर्त्तव्य पालन करने में जिसकी रूचि हो, उसे ही संन्यासाश्रम में प्रवेश करना चाहिए, अन्यथा वानप्रस्थ रहते हुए आत्मोन्नति भी करें और लोकहित के कार्य भी करें।

दूसरी शंका-

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः।
मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम्।।
(अथर्व० १४.१.५२)।।

"यह वधू मेरी पोष्या है, अर्थात् मेरा उतरदायित्व है कि मैं आजीवन इसका पोषण करूँ। हे वधू! बृहस्पति पुरोहित ने मेरे लिए तुझे दिया है। प्रजावती होकर मुझ पति के साथ शत वर्ष तक जीवित रह।" क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि १०० वर्ष तक गृहाश्रम में ही रहना हैं? इसका उत्तर यह है कि पत्नी पति के साथ शत वर्ष तक रह सकती है, किन्तु पूर्वोक्त वैदिक मर्यादा के अनुसार बूढ़े होने पर उसे गृहस्थाश्रम का त्याग करना होगा। वानप्रस्थाश्रम में १०० वर्ष या आजीवन साथ रह ही सकती है। असल में तो इस मन्त्र के उत्तरार्ध का यह अर्थ है कि मुझ पति से सन्तान वाली होकर तू शत वर्ष तक जीवित रह। गृहस्थाश्रम में तो पत्नी को पति के साथ वृद्धावस्था तक ही रहना होता है-'मया पत्या जरदष्टिर्यथासः'(अथर्व० १४.१.५०)।

वानप्रस्थ की दीक्षा लेने के बाद वन में ही चले जाना अनिवार्य नहीं है। पुत्रों के साथ रहने का विकल्प भी है। किन्तु सब गृहभार पुत्रों पर छोड़कर स्वयं वानप्रस्थ के कर्तव्यों का पालन करना होगा, अर्थात् आत्मोन्नति और परोपकार।

उभे नभसी उभयांश्च लोकान् ये यज्वनामभिजिताः स्वर्गाः।
तेषां ज्योतिष्मान् मधुमान् यो अग्रे तस्मिन् पुत्रैर्जरसि संश्रयेथाम्।।
(अथर्व० १२.३.६)।।

"दोनों नभस् अर्थात् दोनों लोक- इहलोक और परलोक तथा जो यज्वाओं द्वारा जीते जाने वाले स्वर्ग ब्रह्मचर्याश्रम, गृहास्थाश्रम और वानप्रस्थाश्रम है। उनमें जो सबसे अधिक ज्योतिष्मान् तथा मधुमान् वानप्रस्थाश्रम है, उसमें वृद्धावस्थों में पुत्रों के साथ रहो।" किन्तु घर से अनासक्त होकर रहना होगा। यह सामान्य नियम नहीं है, परिस्थितिवश अपवाद है। वैसे आजकल वानप्रस्थ वन में नहीं रहते हैं। आश्रम बने हुए हैं, जिनमें सब सुविधाएं हैं। अतः जहाँ तक सम्भव हो उनमें जाना ही दूरदर्शिता है।

-वेदमन्दिर, ज्वालापुर (हरिद्वार)

अब तो भूगोल बुलाता है

–संजीव द्विवेदी

इतिहास पढ़ लिया बहुत हमें अब तो भूगोल बुलाता है।
हिन्दुत्व सिसकियां भरता है, अधर्म देख मुस्काता है।।

नादिर मयूर सिंहासन को दिल्ली से ले ईरान गया।
जिन्ना की दुरभिवार्ता से भारत अखण्ड गुणगान गया।।

मजहब की मदिरा पीकर जो हिन्दू को काफिर कहते हैं।
जो लूट ले गया सोमनाथ वह उसे मुसाफिर कहते हैं।।

रावलपिण्डी वह बंग प्रान्त भू-भाग कटा सब जाता है।
इतिहास पढ़ लिया बहुत हमें अब तो भूगोल बुलाता है।।

जिसने जजिया कर लगा-लगा हिन्दू की गरिमा ढायी थी।
करने नारी का शीलहरण मीना महफिल सजवायी थी।।

जिसने बाबरी बनाने मंदिर पर भी था वार किया।
गोविन्द सिंह के पुत्रों को जिसने नृशंस संहार किया।।

वह मेट चलो काला नक्शा जो अलगाव बताता है।
इतिहास पढ़ लिया बहुत हमें अब तो भूगोल बुलाता है।।

जिसने संसद पर हमला कर भारत को कड़ी चुनौती दी।
करके अपहरण विमानों को जिसने निर्द्वन्द्व फिरौती ली।।

अफजली जमातें न्यायालय का उड़ा रोज उपहास रहीं।
जन को प्रकाश जो देता था अब उसके पास प्रकाश नहीं।

विषधर को दूध पिलाने से, वह दूध गरल बन जाता है।
इतिहास पढ़ लिया बहुत, हमें अब तो भूगोल बुलाता है।।

-अधिवक्ता, शहीद भगतसिंह विद्या मंदिर,
विशाल खण्ड-१, गोमतीनगर, लखनऊ

गतांक से आगे

दुःख का कारण=अविद्या

–स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

ऐसे ही धन-सम्पत्ति, पुत्रादि के शरीर इत्यादि वस्तुओं के सम्बन्ध में जानना चाहिये कि–ये भी अनात्मा=(आत्मा रूप या हमारी आत्मा का हिस्सा नहीं) हैं। परन्तु अविद्या के कारण लोग इन वस्तुओं को भी अपनी आत्मा का हिस्सा मानते हैं। फिर दुखी होते हैं।

प्रश्न : आप कैसे कह सकते हैं, कि लोग धन-सम्पत्ति आदि को अपनी आत्मा का हिस्सा मानते हैं?

उत्तर : जब व्यापार में या और भी किसी वस्तु कार आदि के टूट जाने पर धन की हानि होती है, तब व्यक्ति के हृदय पर झटका (हॉर्ट अटैक) लगता है। कभी-कभी मृत्यु तक भी हो जाती हैं। यह तभी होता है, जब व्यक्ति उन सम्पत्तियों को अपनी आत्मा की वृद्धि मानता हुआ खुश होता है। जब सम्पत्तियां नष्ट होती हैं, तो आत्मा का नाश मानता हुआ दुखी होता है। ऐसा मानना अविद्या ही तो है। जबकि आत्मा उन कार, मकान, धनादि सम्पत्तियों से बिल्कुल भिन्न वस्तु है। कार आदि के नष्ट होने से आत्मा का कुछ भी नहीं बिगड़ता। वह पूरी तरह सुरक्षित है। परन्तु लोग अविद्या के कारण दुखी होते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि कार आदि सम्पत्तियों की रक्षा नहीं करनी चाहिये, क्योंकि कार आदि के नष्ट होने पर आत्मा तो नष्ट होती नहीं है। हम यह कहना चाहते हैं कि-कार आदि सम्पत्तियाँ जीवन-रक्षा एवं मोक्ष-प्राप्ति का साधन हैं। इन साधनों की सुरक्षा और उपयोग तो करना चाहिये। परन्तु ये साधन अनित्य होने के कारण कभी भी नष्ट हो सकते हैं। पूरी सुरक्षा करने का प्रयत्न करने पर भी यदि ये नष्ट हो जायें, तब दुखी नहीं होना चाहिये। तब विद्यापूर्वक ऐसे सोचना चाहिये–"कार आदि वस्तुएँ अनित्य हैं। कभी न कभी तो नष्ट होंगी ही। हमने इनकी सुरक्षा का पूरा प्रयत्न किया। हमने अपना कर्तव्य पूरा किया। फिर भी यदि नष्ट हो गईं, तो हम=(आत्मा) तो सुरक्षित हैं, फिर दोबारा धन कमा कर पुनः प्राप्त कर लेंगे।" यदि ऐसे सोचेंगे, तो 'विद्या' के कारण दुखी नहीं होंगे। अन्यथा अविद्या के कारण अवश्य दुखी होंगे।

अब अन्त में इसे भी उलट कर देख लीजिये। अर्थात् आत्मा को अनात्मा=(चेतन को जड़) मानना भी अविद्या है। ईश्वर चेतन, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक है। वह हमारी सब भावनाओं व कर्मों को समझता एवं देखता है। तदनुसार ठीक-ठीक न्याय से हमारे कर्मों का फल भी देता है। ऐसे चेतन, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी ईश्वर के बारे में पाप कर्म करते समय ऐसा सोचना, कि मुझे कोई नहीं देख, जान रहा। ईश्वर तो यहाँ है नहीं। या ईश्वर को जड़ मूर्ति के रूप में मानकर हमारे पाप कर्मों का वह दृष्टा=(ज्ञाता/साक्षी) नहीं है', ऐसा सोचना भी अविद्या ही है। इसका आगे दण्ड/दुःख मिलेगा।

इसी तरह से सामने उपस्थित बुद्धिमान् व्यक्ति को भी मूर्ख समझकर ऐसा सोचना–'कि यह व्यक्ति मेरी चालाकी को क्या समझ पाएगा!' यह भी अविद्या ही है। इस अविद्या के कारण व्यक्ति पाप/अपराध कर्म करता रहता है। और आगे चलकर इन कर्मों का दुःख रूप फल ईश्वर एवं अन्य अधिकारी मनुष्यों से प्राप्त करता रहता है। यह चौथे प्रकार की अविद्या की चर्चा पूर्ण हुई। सार यह है कि हमारे दुखों का अधिकतम कारण हमारी अपनी अविद्या ही है।

दर्शनवन रोजड़, सागपुर (साबरकांठा, गुजरात)

दीपोत्सव पर शुभकामनाएं

आदरणीया! दीपोत्सव के पावन पर्व पर शुभकामनाएं। यह पावन पर्व आपकी जीवन यात्रा में, नवोत्साह का सृजन करे। आप आर्यसमाज एवं राष्ट्र की जागृति के लिए जो प्रभावी अभियान चला रही हैं, उसकी सफलता की कामना। **राजपाल एस. कपूर, मानक अध्यक्ष, उत्तरी भारत सभा, स्टेशन रोड़, भांडुर (प.) मुम्बई, ७८**

दीपावली पर्व की शुभकामनायें

आदरणीया, सादर जय श्रीराम! दीपमलिका के नन्हे-नन्हे दीपकों के प्रकाश से हमारा हृदय अज्ञान रूपी अन्धकार से मुक्त हो जाये, हम अपने हृदय में बन्धुत्व की भावना को लेकर अपने दैनन्दनीय कार्य, अपने परिवार एवम् जीवधारियों के कल्याणार्थ करें। अपने प्रतिष्ठान के स्वर्ण जयन्ती वर्ष एवम् इस पावन पर्व पर यही हमारी हार्दिक शुभकामना है। ईश्वर हमारे इस संकल्प को पूरा करने के लिए शक्ति प्रदान करें, यही जगत नियन्ता से प्रार्थना है। **आनन्द स्वरूप, वेदानन्द, विनोदानन्द, विवेकानन्द, विशेषानन्द, विपुलानन्द, आनन्द मसाला कम्पनी, ललिताबाग (हैदराबाद)**

एके साधे-सब सधे।

एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाए।
गर तू साधे मूल को, फूले, फले, अघाए।।

वह एक क्या है?-

जब कभी कहीं कुछ करने-कराने, पढ़ने-पढ़ाने की बात होती है, तो सब से पहले यही प्रश्न उभरता है, कि किस बात को पहले पढ़ा जाए? अर्थात् क्या पढ़ा जाए? ऐसी स्थिति में तब उपनिषदों की इन्द्रियों के विवाद वाली आख्यायिका याद आती है। मैं पहली, मैं पहली- एकबार सारी इन्द्रियों में विवाद छिड़ गया, कि कौन सबसे श्रेष्ठ, ज्येष्ठ- इन्द्रिय है। हर इन्द्रिय अपना-अपना राग अलापने लगी, कि मैं ही सबसे श्रेष्ठ हूं। जब मैं-मैं का विवाद वे आपस में हल न कर सकीं, तो निर्णय पर पहुंचने के लिए वे प्रजापति के पास पहुंचीं और प्रार्थना की, कि आपही हमारा निर्णय कीजिए, हममें से कौन सी इन्द्रिय सबसे श्रेष्ठ है?

प्रजापति ने उनकी बात सुनने के पश्चात् कहा, कि तुम सारी क्रमशः एक-एक वर्ष के लिए शरीर को छोड़ कर चली जाओ। जिसके जाने पर शरीर जीवित न रहे, वस्तुतः वही इन्द्रिय सबसे श्रेष्ठ है, यह स्वतः सिद्ध हो जाएगा। यह कसौटी सभी इन्द्रियों को पसन्द आई और अपनी-अपनी बारी की प्रतीक्षा करने लगीं।

सबसे पहले वाणी गई और उसने एक साल बाद लौट कर देखा, कि उसके बिना भी गूंगों की तरह शरीर जीवित है। अतः शर्मसार होकर अपनी जगह चुपचाप दुबक गई। इसके बाद आंख की बारी आई, जब उसने एक वर्ष के पश्चात आकर देखा, आंख है तो जहान है, वाली उक्ति कहीं चरितार्थ ही नहीं हुई। तो वह लज्जित होकर रह गई, कि अन्धों की तरह शरीर की अन्य क्रियायें चल रही हैं। फिर कान गए उन्होंने आकर देखा, बहरों की तरह शरीर चल रहा है। अतः वे भी शर्मिन्दा होकर चुपचाप बैठ गए। इस प्रकार सबसे अन्त में प्राणों की बारी आई, पर जब प्राण चलने की तैयारी ही करने लगे, तो उनके साथ ही सारी इन्द्रियों के पैर उखड़ गए। अपने पैरों के नीचे से धरती सरकती देख कर एकदम सारी इन्द्रियां हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगीं, कि महाराज! आप न जाइए। आपके तो जाने की तैयारी करते ही हमारी जान निकलने लगी। आप ही हम सब से श्रेष्ठ हैं, आपके कारण ही हमारी सत्ता है, हमारे बिना शरीर को कुछ कष्ट तो होता है, पर किसी रूप में भी गाड़ी नहीं रुकती। अतः हर तरह से ज्येष्ठ और श्रेष्ठ आप ही हैं। (छान्दोग्य ५-१, ६-१५, ६, १, ७-१४)

इस आख्यायिका का यहां यही अभिप्राय है, कि प्राणों की तरह जो भी जीवन के लिए अनिवार्य है और अन्य इन्द्रियों के समान जितने अंश में जो भी उपयोगी है। उसको उतना ही महत्व, स्थान तथा क्रम देना चाहिए। अतः इस आख्यायिका का मूलभाव यही है, कि जो भी जीवन के लिए प्राणवत् अन्यन्त आवश्यक, अनिवार्य है। उसी की ही प्रथम चर्चा, परिणति होनी चाहिए। इस पर पुनः प्रश्न उभरता है, कि **वह क्या है?** जो कि जीवन के लिए अनिवार्य, अत्यन्त आवश्यक है। अनिवार्य शब्द का अर्थ होता है-जिस को हटाया न जा सके अर्थात् जिस से वह हो और उस के बिना वह कार्य न हो। जैसे कि जीने के लिए सांस लेना अनिवार्य है। इसी प्रकार आवश्यक का अभिप्राय है, जो किसी के होने में जरूरी हो, अन्यथा उसके बिना वह बात, व्यवहार कार्य न हो सके। इसलिए ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के यज्ञ प्रकरण में क्या कुछ आवश्यक है, क्या नहीं? ऐसे ही क्या चीज कहां रखी जाए? इत्यादि चर्चा करते हुए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखा है-

'यद् यद् आवश्यकं युक्तिसिद्ध तत् तत् कर्तव्यं नेतरत। यज्ञ सिद्धयर्थं यद्यदावश्यकं युक्तिसिद्धमस्ति, तत्तदेव ग्राह्यम्। कुतः? तैर्विना तदसिद्धेः' (वेदविषयविचार)

जीवन तथा जगत के व्यवहार, गाड़ी को चलाने के लिए कहां क्या आवश्यक, अनिवार्य है? इसकी जब हम पहचान करते हैं, या इस पर विचार करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है, कि जिससे सब कुछ टिका रहता है, चलता है। वह-वह टिकाने वाला, संभालने वाला तत्व उस -उस के लिए आवश्यक सिद्ध होता है। जैसे कि जीने के लिए-जल है। इसीलिए उसका एक नाम जीवन भी है।

इस दृष्टिकोण से जब हम शास्त्रों का स्वाध्याय करते हैं और जीवन के व्यवहार की दृष्टि से सोचते हैं तो हमारे सामने हितोपदेश का यह श्लोक सामने आता है-आहारनिद्राभयमैथुनञ्च सामान्यमेतत् पशुभि र्नराणाम्। धर्मो हि [ज्ञानं हि] तेषामधिको विशेषो धर्मेण [ज्ञानेन] हीनाः पशुभिः समानाः।। प्रस्तावना-२५।।

आहार- इस श्लोक में आहार शब्द चाहे भोजन,

खाने-पीने की चीजों को लिए प्रसिद्ध है, पर मूलत: जीवन को चलाने के लिए बाहर से भौतिक रूप में जो कुछ भी लिया जाता है। (आहियते इति) वह आहार कहलाता है। जैसे कि क्रमशः

वायु, जल आदि पेय पदार्थ और खाद्य

पोष्य-लेह्य रूप में जो पदार्थ अन्न, भोजन नाम से लिए जाते हैं तथा पहनने के वस्त्र, ऊपर से ग्राह्य (ओढ़ने के) चादर, शाल, खेस, रजाई और नीचे बिछाने के विविध प्रकार के वस्त्र, बर्तन, खाट, कुर्सी, प्रभृति वस्तुएं।

निद्रा:- शब्द थकावट दूर करने की सारी चेष्टाओं क्रियाओं के लिए आता है। उत्तिष्ठेयु र्गतक्लमः (मनु-७. २२५)। इसी में तनाव दूर करने के साधनभूत् शवासन आदि स्थितियां और योग में निर्दिष्ट एकाग्रता, ध्यान आदि मुद्रायें भी अधिगृहीत होती हैं।

भय- मनुष्य एक विचारशील सामाजिक प्राणी है। जब समाज में कोई किसी के अनुकूल होता है, तो वह स्थिति उस-उस को अभीष्ट होती है; तब वह उसको तृप्त, सन्तुष्ट सुखी करती है। पर जब कोई स्थिति किसी के लिए किसी रूप में जितने -जितने अंश में प्रतिकूल, अनभीष्ट होती है। तब वह उसको तदनुरूप दूर करने का यत्न करता है। सामान्य की उपेक्षा प्रतिकूलता के अधिक होने पर व्यक्ति मानसिक स्तर पर भय अनुभव करता है।

मैथुन- मैथुन शब्द मिथुन का तद्धित रूप है मिथुन जोड़े रूपी दाम्पत्य सम्बन्ध को सूचित करता है। चेतन प्राणी सामाजिकता में सुख, आशा, प्रसन्नता, अनुभव करता है। अत: उसको चाहता है। आहार, निद्रा, भय की तरह ही सामाजिकता भी जीवन का एक अंग है। जिसकी सामान्य और विशेष स्थिति होती है और विशेष स्थिति में सहवास की भावना भी उभरती है। जिसका स्वाभाविक परिणाम परिवार की प्राप्ति, प्रगति है। पर अब विज्ञान प्रदत्त परिवार नियोजन की सुविधाओं के कारण सहवास-सुख की भावना अधिक आगे आ रही है। दूसरी इच्छाओं की तरह ही एक यह भी इच्छा है। अब प्राकृतिक के स्थान पर कृत्रिम रूप से इस इच्छा को बढ़ाया जा रहा है।

आहार आदि सारी बातें सुख के लिए की जाती है। चाहे इनको लौकिक सुख कहा जाता है। फिर भी शरीर को जीवित रखने के लिए ये सब अपेक्षित हैं। तभी तो सभी में इनकी प्रवृति स्वाभाविक है। हाँ, इनमें कभी, बढ़ोतरी भी होती है।

इन की सिद्धि कार्य में परिणति के लिए अपेक्षित ज्ञान पशु-पक्षी-कृमि आदि में स्वाभाविक है। अर्थात् इनमें यह जन्मजात होता है, तभी तो पशु का बच्चा बिना सीखे ही तैरने लगता है। अत: ये अपना जीवन प्राकृतिक ढंग से जीते हैं। हाँ, पालतू बन जाने पर अन्तर आ जाता है।

पशु-पक्षियों की तुलना में मनुष्य जाति का ज्ञान नैमित्तिक है। जो कि निमित्त से बनता है। यह तीन कारणों में से [समवायी, असमवायी के साथ तीसरा कारण कहलाता है अर्थात्] एक कारण है। जो प्रत्येक मनुष्य में किसी सहयोगी के सहयोग से ज्ञान आता है और विकसित होता है। इसी निमित्त, सहयोगी का ही दूसरा नाम गुरू, शिक्षक, अध्यापक, टीचर आदि है। जो ज्ञान देता है, जीने का ढंग तथा जीवन में बरती जाने वाली चीजों, व्यवहारों को सिखाता है। इसी सीखे के आधार पर व्यक्ति उमयोग की वस्तुओं को वर्तकर सुख प्राप्त करता है। हाँ, कुछ व्यक्ति ईश्वर भक्ति में सुख मानते हैं। तभी तो कहा जाता है- 'सो सुखी जो नाम आधार'। नींद की तरह योग के अभ्यास से प्राप्त एकाग्रता व्यक्ति को तनाव से मुक्त करके सुख प्राप्त कराती है। अर्थात जब व्यक्ति ईश्वर भक्ति में अपने आप को सौंप कर निश्चिन्त हो जाता है। तो वह सुख, शांति, आनन्द अनुभव करता है। हाँ यहां मूल बात सुख की है, वह लौकिक पदार्थजन्य हो या ईश्वरभक्तिजन्य।

इन सुख साधनों की चर्चा के साथ कवि आगे श्लोक में कहता है, कि अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्यों में ज्ञान, धर्म की विशिष्टता है। ज्ञान का महत्व, प्रयोजन विवेक में है तथा धर्म भी कसौटी रूप में यही कार्य करता है। सारे भारतीय साहित्य में धर्म तथा धर्मयुक्त को महत्व दिया गया है। हाँ, धर्म, शुद्ध का अर्थ भी धारण, संभाल ही है। पूर्व चर्चित अनिवार्य, आवश्यक की पहचान के अनुरूप जो जीवन गाड़ी को संभाले रखे, चलाये वही ही धर्म है। इसी लिए ही यह कहा जाता है- धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतम्-तैत्तिरीय आरण्यक-10,62,1 धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा लोके-- धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद्धर्मं परमंवदन्ति- तै. आ. 10,63,1 अर्थात् धर्म ही सब को टिकाये हुए है, टिकाये रखने वाला तत्व है। इसके साथ यह ध्यान देने योग्य बात है, कि सारे भारतीय शास्त्रों में धर्म को सुख का आधार, मूलकेन्द्र माना गया है। ऐसे सबको टिकाये रखने वाले तत्वरूप- धर्म का स्वरूप क्या है? उस की पहचान किस को कहा जा सकता है? यह जानना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है? क्योंकि प्राय: सभी धर्म को जीवन का उद्देश्य, लक्ष्य, प्राप्य, साध्य मानते हैं। क्रमशः

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

-डॉ. कर्णदेव शास्त्री

सन् १८५६ में वीर प्रसविनी पंजाब धरा के जलन्धर जिले के एक ग्राम में पुलिस विभाग के उच्चधिकारी श्री नानकचन्द के कुलदीपक के रूप में जन्म लिया एक बालक ने। माता-पिता ने पंडित पुरोहितों के परमर्शानुसार उसका नाम मुन्शीराम रख दिया।

बालक मुन्शीराम ने वर्णमाला का ज्ञान तलवन की पाठशाला में ही प्राप्त किया। प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा प्राप्त कर उन्होंने जलन्धर नगर से मिडिल की परीक्षा में सफलता प्राप्त की। इन्हीं दिनों श्री नानकचन्द का स्थानान्तरण नगर कोतवाल के रूप में बरेली (उत्तर प्रदेश) हो गया। श्री नानकचन्द जी ने अपने सुपुत्र को उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु काशी भेज दिया।

काशी में विद्याध्ययन करते हुए आपकी धर्म भावना भी जाग्रत हो उठी और आप प्रतिदिन विश्वनाथ मन्दिर में दर्शनार्थ जाने लगे। किन्तु इस मन्दिर में घटित एक घटना ने बालक मुन्शीराम के जीवन में एक प्रबल तूफान ला दिया। एक दिन जब श्री मुन्शीराम प्रतिमा के दर्शनार्थ विश्वनाथ मन्दिर में पहुंचे तो पुजारी ने उन्हें रोक दिया और बोला "अभी रीवां की महारानी देव दर्शन कर रही हैं। तुम अभी ठहर जाओ महारानी के देवालय के बाहर आने के बाद ही तुम्हें भगवान के दर्शनों की अनुमति मिल सकेगी।"

पुजारी के इन शब्दों ने मुन्शीराम के विचारशील मन के महासागर में एक प्रबल प्रभंजन का उद्वेलन कर दिया। वह बिना दर्शन किए ही अपने स्थान पर लौट आए। रात हुई, वे शैया पर शयनार्थ लेट गए किन्तु आज तो नींद ही उड़ गई थी। सारी रात वे यही सोचते रहे जिस भगवान के दरबार में धनी निर्धन के मध्य भेद की दीवार खड़ी हो वह दीनबन्धु, दीनानाथ और दया का सागर कैसे हो सकता है? बस उसी दिन से पत्थर के भगवान पर से उनकी श्रद्धा उठ गई।

आस्था के स्थान पर अनास्था ने उनके मन पर अधिकार जमा लिया। अब व्यसनों ने उन्हें आ घेरा। जूआ उनके जीवन में जड़ जमा गया तो सुरापान भी उन्हें भा गया। कुछ ही दिनों के उपरान्त वे काशी से अपने पिता जी के पास बरेली आ गए।

बरेली में श्री मुन्शीराम के जीवन को एक नया मोड़ और मिला। वहां १४ श्रावण संवत् १८३७ को महर्षि दयानन्द का शुभागमन हुआ। बेगम बाग स्थित कोठी में देव दयानन्द के प्रवचनों का क्रम आरम्भ हुआ। सत्य वैदिक ज्ञान की गंगा प्रवाहित होने लगी। मुन्शीराम के पिता श्री नानकचन्द ने भी एक दिन स्वामी दयानन्द का युग उद्‌बोधक आह्वान सुना। उन्होंने अपने निवास स्थान पर लौट कर मुन्शीराम को भी स्वामी जी का प्रवचन सुनने का निर्देश दिया।

जिज्ञासु मुन्शीराम ने स्वामी दयानन्द के ब्रह्म तेज से उद्दीप्त मुखमंडल को निहारा तो प्रभावित हुए बिना न रह पाए, वे बड़े मनोयोग सहित प्रवचन सुनते रहे। प्रवचन समाप्त हुआ तो जिज्ञासु मुन्शीराम ने परमात्मा और उसके अस्तित्व के सम्बन्ध में कई प्रश्न देव दयानन्द के पूछ डाले। स्वामी जी के तर्क सम्मत उत्तरों से मुन्शीराम की जिज्ञासा का शमन तो हो रहा था, किन्तु अभी भी एक कसक उनके मन में थी। अतएव वह बोल उठे "स्वामी जी आपने मुझे अभी तक ईश्वर के अस्तित्व का तो भान नहीं कराया?"

इस प्रश्न को सुनकर स्वामी जी के मुखमंडल पर हास्य की एक रेखा सी उभरी और वे इस प्रश्न का उत्तर देना टाल गए। मुन्शीराम का स्वामी जी के प्रवचनों को सुनने के लिए प्रतिदिन आगमन का क्रम आरम्भ हो गया। अनेक बार उन्होंने अपना उपरोक्त प्रश्न ही दोहराया। एक दिन जब मुन्शीराम ने अपने प्रश्न का उत्तर पाने की हठ ही ठान ली तो स्वामीजी बोले "भाई! परमेश्वर के अस्तित्व का भान कराना मेरे हाथ की बात नहीं। किन्तु जब समय आएगा तो परमात्मा तुम्हें स्वयं ही अपने अस्तित्व का भान करा देंगे।"

युग पुरूष दयानन्द के संपर्क में आते रहने के फलस्वरूप मुन्शीराम के मानस पटल पर अन्धकार के बादल अब छंटने लगे। दुर्व्यसन, मांस, मदिरा व द्यूतक्रीड़ा के प्रति उनके मन में अरुचिं और घृणा उभरने लगी थी।

अनास्था से आस्था और शंका से स्वधर्म में विश्वास का अंकुर मुन्शीराम जी के हृदय में बरेली में ही पनप उठा था। बाद में मुख्तारी की परीक्षा में सफलता प्राप्त कर मुन्शीराम जी सपरिवार जलन्धर आ गए।

यहीं उनका परिचय आर्य समाज के महान् प्रचारक पं. गुरूदत्त विद्यार्थी से हुआ। इस सम्पर्क से "सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" एवम् वेद

भाष्य आदि ऋषि प्रणीत ग्रन्थों के अध्ययन एवम् मनन् से उनकी जीवनधारा ही बदल गयी। जलन्धर में मुन्शीराम जी जहां मुख्तार के रूप में अपना व्यवसाय चला रहे थे, वहां आर्यसमाज से भी अपना सम्पर्क बढ़ा रहे थे।

मुन्शीराम जी ने सत्यार्थ प्रकाश में निहित स्वामी जी की राष्ट्रीय भावनाओं को पहचाना और उनके विचारशील मस्तिष्क में इस सत्य का आरोपण हो गया कि राष्ट्र के कल्याण का एकमात्र मार्ग है स्वामी दयानन्द प्रणीत समाज सुधारों का क्रियान्वयन।

दृढ़ संकल्प ग्रहण कर मुन्शीराम कर्मक्षेत्र में कूद पड़े। समाज की तन्द्रा झकझोर कर कर्त्तव्य और स्थिति का भान कराना ही उनका लक्ष्य था।

समग्र आर्य जाति को एकता के सूत्र में आबद्ध करने की दृष्टि से मुन्शीराम जी ने जन्मजात जाति भेद को त्यागने का हिन्दू समाज से आह्वान किया। प्रचंड जन विरोध की उपेक्षा कर उन्होंने अपनी पुत्री वेदकुमारी को १८ अक्टूबर, १८८८ ई. को अंग्रेजों द्वारा संचालित कन्या पाठशाला में भर्ती करा दिया। किन्तु वेद कुमारी को एक दिन जब उन्होंने "ईसा ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल" यह वाक्य गुनगुनाते हुए सुना तो उन्होंने समझ लिया कि इस प्रकार तो अंग्रेज ईसाइयों के स्कूल में आर्यकन्यायें भ्रष्ट हो जायेंगी। इस स्थिति से निपटने के लिए उन्होंने आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना का निश्चय कर लिया।

इसी समय आर्यसमाज के कर्मठ सेनानी लाला देवराज उनसे मिले। दोनों ने मिलकर प्रयास किया और एक आर्य-कन्या पाठशाला की स्थापना कर दी जो आज भी जलंधर में कन्या-महाविद्यालय के नाम से विद्यमान है।

तदुपरान्त वैदिक पद्धति से स्त्री शिक्षा दिये जाने की दिशा में आपने एक और प्रयास किया और देहरादून में कन्या-गुरूकुल की स्थापना की।

पर्दाप्रथा का भी आपने विरोध किया और सर्वप्रथम अपनी पत्नी शिवदेवी से ही पर्दा छुड़वाया। साथ ही शिवदेवी को वे वेद आदि धर्मग्रंथों की शिक्षा भी देने लगे और स्वाध्याय भी कराने लगे।

राष्ट्रीय विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने के लिये उर्दू में प्रकाशित होने वाले आर्यसमाज के मुख पत्र 'सद्धर्म-प्रचारक' को आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ करके भी अपनी दूर-दर्शिता प्रदर्शित की।

जातीय-एकता के लिए मुन्शीराम जी ने अपनी पुत्री अमृतकला और दोनों पुत्रों, इन्द्र विद्यावाचस्पति और पं. हरिशचन्द्र विद्यालंकार का विवाह भी जाति-बन्धन तोड़कर किया।

सन् १८९६ से वकालत छोड़कर मुन्शीराम जी तन-मन-धन से आर्य जाति, आर्यसमाज और आर्यावर्त की सेवा में ही जुट गए। इसी बीच १८८१ में उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी ने भी उनसे चिर विदाई ले ली।

इन्हीं दिनों अपने पत्र 'सद्धर्म-प्रचारक' में उन्होंने गुरूकुल की स्थापना पर जोर देते हुए अपनी योजना प्रत्येक आर्य-जन तक पहुंचाने का भी प्रयास किया।

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के समक्ष भी यह योजना विचारार्थ प्रस्तुत की गई। २६ नवम्बर, १८९७ को आर्य प्रतिनिधि सभा ने यह मत व्यक्त किया कि प्रस्तावित योजना के दोनों चरणों के लिए आठ-आठ हजार रुपये एकत्रित हो जाएं तो कार्य आरम्भ किया जा सकता है।

योजना के दो चरण थे (१) वेदानुकूल शिक्षा के लिए गुरुकुल की स्थापना तथा (२) महर्षि दयानन्द द्वारा अधूरे छोड़े गए वेद-भाष्य को पूरा करना।

अगस्त, १८९८ में मुन्शीराम जी ने घोषणा की थी कि जब तक उक्त दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तीस हजार रुपये जमा न कर लेंगे घर में पांव न रखेंगे, और भीष्म-प्रतिज्ञा कर वे अपने कन्धे पर एक झोली लटकाकर निकल पड़े। एक वर्ष से भी कम समय में मुन्शीराम जी ने तीस नहीं वरन् चालीस हजार रुपये एकत्र कर लिए और वापस लौटे।

मुन्शीराम जी की वैदिक-शिक्षा के प्रति निष्ठा व लगन ने नजीबाबाद के रईस चौधरी अमनसिंह को गुरुकुल की स्थापना के लिए १२० बीघा जमीन और ११ हजार रुपये दान में देने हेतु प्रेरित किया।

अन्ततः २१ मार्च, १९०२ को होलिकोत्सव पर्व पर हरिद्वार के निकट गुरूकुल कांगड़ी का विधिवत् उद्घाटन हुआ। इसके प्रथम मुख्याधिष्ठाता और आचार्य पद पर पं. मुन्शीराम जी ही प्रतिष्ठित हुए।

लार्ड मैकाले ने उसी काल में लोगों पर अंग्रेजी पद्धति से शिक्षा थोपकर उन्हें सदा के लिए अपना दास बनाये रखने के लिये एक नई शिक्षानीति जारी की। गुरुकुल की स्थापना कर उसकी शिक्षानीति को खुली चुनौती देने का साहस मुन्शीराम जी ने ही प्रदर्शित किया।

अपने मार्ग में अड़ंगा पड़ने से अंग्रेज सरकार पहले से मुन्शीराम जी पर खार खाये बैठी थी। अत: जब वे भारत के दौरे पर निकले तो सरकार ने अपने गुर्गों को सतर्क कर दिया।

अपने व्याख्यानों और 'सद्धर्म-प्रचारक' के लेखों द्वारा पं. मुन्शीराम जी ने जन-जागरण का अभियान जारी रखा।

'सद्धर्म-प्रचारक' में 'अब क्या करना चाहिये?' 'आर्यसमाज वेद प्रचारिणी सभा है या पोलिटिकल सोसाइटी?' ऐसे शीर्षकों के लेखों के अन्तर्गत खुल्लम खुल्ला अंग्रेजों की राज्य सत्ता के विरूद्ध वे विद्रोह की अग्नि धधकाते रहे। इस पत्र के लिए कोई भी क्यों न लिखे सरकारी आपत्ति होने पर पं. मुन्शीराम उसकी सारी जिम्मेदारी स्वयं ले लिया करते थे।

भारत-आगमन के पश्चात् गांधी जी जब प्रथम बार गुरुकुल में गए तो पं. मुन्शीराम जी ने गुरुकुल की ओर से जो अभिनन्दन -पत्र उन्हें दिया था उसमें उनके नाम के आगे 'महात्मा' शब्द लगाया था। यहीं से गांधी जी 'महात्मा' के रूप में जाने-जाने लगे।

इसके बाद तो वे कई बार गुरुकुल गए और मुन्शीराम जी से भेंट कर विचार विमर्श किया।

सन् १९२० में अमृतसर में कांग्रेस का अखिल भारतीय अधिवेशन होने जा रहा था। अंग्रेजों के आतंक से कोई भी नेता स्वागत-समिति का अध्यक्ष पद स्वीकार करने का तैयार नहीं था। निराशा के इस वायु मंडल में मुन्शीराम जी सामने आये। उन्होंने न केवल इस पद-भार को ग्रहण किया वरन् बड़े ही सुन्दर ढंग से उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निभाई और कांग्रेस अधिवेशन में हिन्दी में भाषण की परम्पराओं को भी जन्म दिया।

मुन्शीराम जी ने अखिल भारतीय दलितोद्धार सभा की स्थापना की। गांधी जी के हरिजनोद्धार आन्दोलन में भी इस संस्था ने अभूतपूर्व योगदान प्रदान किया।

बाल विवाह निषेध, पुनर्विवाह तथा अस्पृश्यता उन्मूलन ये सामाजिक सुधार कार्य क्रांतिकारी नहीं तो और क्या थे? वे स्वयं तो कार्य करने को सदैव तत्पर रहते थे दूसरों का मार्ग भी प्रशस्त करते थे।

एक बार दिल्ली में एक मुसलमान युवक ने मुन्शीराम जी से पूछा, वेद और कुरान में आप किसे अच्छा समझते हैं? आपको इनमें से कौन सा ग्रन्थ प्रिय लगता है?

यद्यपि इसका सीधा और स्पष्ट उत्तर होता "वेद"। पर मुन्शीराम जी ने कहा, 'मुझे वे सभी ग्रन्थ प्रिय हैं जिनमें वर्णों की प्रधानता के बजाय कर्मों को प्रधानता दी गई हो।'

इतने सरल शब्दों में मानव-धर्म की इतनी गहन और सूक्ष्म व्याख्या क्या और कहीं देखने को मिल सकती है?

४ अप्रैल, १९१९ में स्वामीजी ने दिल्ली की जामा मस्जिद में अपना भाषण दिया। यह एक ऐतिहासिक घटना थी, क्योंकि तब तक जामा-मस्जिद से किसी हिन्दू ने व्याख्यान न दिया था और न उनके बाद आज तक किसी को यह अवसर प्राप्त हुआ। अपना व्याख्यान स्वामीजी ने एक वेद-मंत्र के उच्चारण के साथ आरम्भ किया और इसमें हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल दिया।

सन् १९१३ में स्वामीजी के प्रयासों से दो दैनिक-पत्रों का प्रकाशन दिल्ली से आरम्भ हुआ। हिन्दी में 'अर्जुन' और उर्दू में 'तेज'। एक साप्ताहिक-पत्र 'लिबरेटर' भी उन्होंने निकाला पर उसके ३६ से अधिक अंक न निकाल सके 'श्रद्धा' नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन भी किया पर कुछ अंक निकलने के बाद कई कारणों से उसे बन्द कर देना पड़ा।

स्वामीजी ने १९२४ में हिन्दू महासभा का अध्यक्ष पद भी ग्रहण किया और हिन्दू संगठन के महायज्ञ के वे प्रमुख पुरोधा बन गए।

गुरूकुल में अपने शिष्यों के सम्मुख व्याख्यान देते हुए स्वामीजी अक्सर कहते, 'हमें उस विद्रोह को जगाने की आवश्यकता है जिसका निर्देश महर्षि दयानन्द दे गए हैं।'

स्वामीजी की लेखनी भी आर्यो को जगाने तथा उनके उत्थान का मार्ग प्रशस्त करने के लिए निरन्तर अबाध गति से चलती रही। अपने एक प्रेरणास्पद लेख में उन्होंने लिखा, "इसी जन्मभूमि के लिए कष्ट सहन करना, इसी की सेवा में समस्त पुरूषार्थ लगाना और इसी पर सर्वस्व न्योछावर करना यदि एक-एक भारतवासी अपना धर्म समझ ले तो परमात्मा की भी उन पर असीम कृपा हो जाए किन्तु यहां तो यही कमी है। सत्य की वेदी पर विश्वास से सिर रखने वाले कहां दिखाई देते हैं? क्या आर्यावर्त की पवित्र भूमि धर्मवीरों से शून्य हो गई है?

आर्य कुमार सभा, दिल्ली के अधिवेशन में तरूणों व किशोरों को संबोधित करते हुए स्वामी जी ने २२ आश्विन संवत् १९७० को कहा था '**सेवक बनने का यत्न करो, क्योंकि लीडरों की अपेक्षा आर्य जाति को सेवकों की बहुत अधिक आवश्यकता है।** जब कभी आपके कदम डगमगाने लगें तो राम सेवक हनुमान

का स्मरण कर लिया करो। नवयुवकों, मैं पूछता हूं? क्या तुममें से कभी किसी ने दयानन्द रूपी राम का सेवक हनुमान बनने का प्रयत्न किया है।? महावीर के बिना दयानन्द का काम अधूरा है मुझे पूर्ण आशा है कि दयानन्द के कार्य को पूर्ण करने हेतु पाप की लंका का विध्वंस करने के लिए, तुम्हीं में से महावीर निकलेंगे।

एक बार एक अंग्रेज अफसर ने स्वामी जी से कहा, 'जिस निष्ठा व लगन से आप आर्यसमाज के लिए कार्य-करते हैं अगर इसका तृतीयांश भी अंग्रेजों के लिए करें तो सरकार आपको महान् लोगों की पंक्ति में खड़ा कर दें।

स्वामीजी ने तुरन्त जवाब दिया, '**मैं आत्मा को नीलाम चढ़ा कर महानता नहीं खरीदना चाहता।"**

आर्यसमाज के लिए गुरुकुल के अधिवेशनों में एक के बाद एक पहले 'सद्धर्म-प्रचारक' अखबार व प्रेस, फिर धनादि और अंत में अपना निवास स्थान दान कर स्वामी जी ने महान् दानवीरता का जो परिचय दिया उसका उदाहरण भी शायद ही मिले।

धौलपुर में आर्यसमाज मन्दिर के एक भाग को सरकारी भूमि बता कर जब अंग्रेजों ने मन्दिर गिरवाने का प्रयत्न किया तो स्वामी जी ने अपने नेतृत्व में आंदोलन छेड़ दिया। अंतत: सरकार को झुकना पड़ा और अपना घृणित इरादा त्याग देना पड़ा।

ऐबटाबाद (सीमा प्रांत) आर्यसमाज के प्रधान पं. धनीराम के खिलाफ सरकार ने राजद्रोह का मुकदमा चलाया तो स्वामी जी ने श्री धनीराम की पैरवी के लिए आर्यसमाजी वकीलों की पूरी सेना ही खड़ी कर दी और अंग्रेजों के मंसूबों को धूलधूसरित कर दिया।

वस्तुत: राष्ट्रीयता का जो बीज आर्यसमाज में महर्षि दयानन्द ने बोया था उसे स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने अथक परिश्रम से सींच कर पुष्पित-पल्लवित किया।

स्वामी जी के क्रांतिकारी व्यक्तित्व का ही परिणाम था जिसे देखकर अंग्रेजों ने आर्यसमाज को एक क्रांतिकारी संगठन के रूप में स्वीकार किया। और तो और उन दिनों जो भी व्यक्ति अंग्रेजी सरकार के खिलाफ विद्रोह करता उसे ही अंग्रेज आर्यसमाजी कह देते थे। आर्यसमाज का अर्थ ही अंग्रेजों ने सत्ता-विद्रोही लगा दिया था।

एक अंग्रेज लेखक वैलेण्टाइल शिरोल ने अपनी पुस्तक 'अनरैस्ट इन इंडिया' में आर्यसमाज के स्वरूप की व्याख्या कुछ इस तरह से की, 'जहां-जहां आर्यसमाज का जोर है, वहां राजद्रोह प्रबल है।'

जब भाई परमानन्द और लाला लाजपतराय जैसे महान् क्रांतिकारी बर्मा-निर्वासन के कई वर्ष बाद लाहौर लौटे तो उनका सार्वजनिक अभिनंदन करने का साहस भी किसी में नहीं हुआ। आखिर यह कार्य भी स्वामी जी ने सम्पन्न किया और लाहौर में उनका सम्मानपूर्वक जुलूस निकाला।

आर्यसमाज पर बड़ी-बड़ी विपत्तियां आयीं, अंग्रेजों ने इस पर प्रबल प्रहार किए। पर स्वामी श्रद्धानन्द अत्याचारों की इस आंधी में भी अडिग खड़े रहे। हिम्मत हारना और धीरज खोना तो उन्होंने सीखा ही नहीं था।

दिल्ली में सन् १९१८-१९ में असहयोग आंदोलन के समस्त भारत में संचालन के लिए जो समिति बनी उसके प्रधान महात्मा गांधी और उप-प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द थे। बाद में गांधी जी से सैद्धांतिक मतभेद के कारण स्वामी जी ने समिति के उप-प्रधान पद से इस्तीफा दे दिया था। किन्तु इसके बावजूद हर राष्ट्रीय आन्दोलन में भारत की जनता का नेतृत्व करने के लिए वे सदा अग्रणी रहे और युवकों को इसके लिए प्रेरित करते रहे।

७ मार्च, १९१९ को रौलट-एक्ट के विरुद्ध जब वे एक जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे तो चांदनी चौक घंटाघर में अंग्रेज भक्त गोरखा सिपाहियों ने उन्हें रोककर हर तरह से डराया धमकाया और उनके सीने पर बन्दूक की संगीने भी टिका दीं। किन्तु निर्भीकता की मूर्ति श्रद्धानन्द किसी से रुकने और दबने वाले तो थे नहीं, अपनी छाती का वस्त्र हटाकर उन्होंने सिपाहियों को ललकार कर कहा, 'लो, चलाओ गोली। यह स्वामी जी के व्यक्तित्व की दृढ़ता ही थी कि बिना किसी अप्रिय घटना के उन्होंने ४० हजार लोगों की भीड़ को नियन्त्रित किया, वरन् उनके एक इशारे पर दिल्ली में दूसरे विद्रोह का दृश्य उपस्थित होते देर न लगती।

अमृतसर में 'गुरू का बाग' आंदोलन के जोर पकड़ने का समाचार सुनकर स्वामी जी १० दिसम्बर, १९२२ को अमृतसर पहुंचे।

आंदोलनकारियों के नेताओं से मिलकर उन्होंने दिल्ली की ओर से एक सौ आंदोलनकारी और पांच हजार रूपये की सहायता का वचन भी दिया। किन्तु उसी दिन अंग्रेजों ने स्वामी जी को गिरफ्तार कर लिया।

(शेष पृष्ठ २५ पर)

देवतास्वरूप भाई परमानन्द

भारत की ऐतिहासिक नगरी दिल्ली के ऐतिहासिक फव्वारे पर आरे से शीश चिरवाकर स्वधर्म की रक्षा का महान् संकल्प पूर्ण कर हुतात्मा बने भाई मतिदास के कुल में ही १८७६ में, जेहलम जिले में एक महान् पुरुष ने जन्म ग्रहण किया था। वह महापुरुष थे भाई परमानन्द।

अपने पूर्वजों के बलिदान का तमगा मात्र छाती पर चिपटा कर स्वयं के बड़प्पन का ढोल पीटने वाले नेता नहीं थे भाई परमानन्द, अपितु श्रद्धा निष्ठा और निर्भीकता भी उन्हें अपनी वंश परम्परा से ही प्राप्त हुई थी। वीरता का प्रदर्शन कर फांसी की रेशमी डोरी को चूम लेना तो महानता का द्योतक है ही, किन्तु आजीवन अपनों और परायों का वैर विरोध सहन करते हुए भी अपने जीवन में कभी निराशा को क्षण मात्र के लिए भी प्रभावी न होने देना और भी अधिक महानता है। भाई जी का समग्र जीवन इसी महानता की ज्वलंत गाथा है।

किशोरावस्था में जब भाई परमानन्द चकवाल (जिला जेहलम) में मिडिल स्कूल के छात्र थे, तब आर्य समाज के सम्पर्क में आए। वहीं आपने सारा जीवन आर्य जाति की सेवा में लगा देने का संकल्प भी ग्रहण कर लिया।

यही कारण था कि एम.ए. की उपाधि प्राप्त कर आपने ऐश्वर्य और सुख सुविधाओं का जीवन यापन करने की दृष्टि से अंग्रेजी सरकार की नौकरी करने के प्रलोभन को अपने मन से सर्वथा के लिए दूर हटा दिया। उसके स्थान पर उन्होंने केवल ७५ रूपया मासिक के गुजारे भत्ते पर डी.ए.वी. कॉलेज की आजीवन सदस्यता ग्रहण कर ली।

उन दिनों आर्यसमाज पंजाब में राष्ट्रीय जागृति का अग्रदूत था और डी.ए.वी. कॉलेज (जो सरकारी सहायता के बिना बनाया गया था) वह माहौल प्रस्तुत कर रहा था जिसमें आत्मनिर्भरता का प्रस्फुरण होता है। भाई परमानन्द और लाला लाजपतराय के सम्मिलित श्रम का ही यह प्रतिफल था कि यह कॉलेज शुष्क हृदय में भी राष्ट्रभक्ति और सामाजिक सुधार की भावनाओं को अंकुरित किया करता था।

उन्हीं दिनों अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों की ओर से एक मिशनरी वहां भेजने का अनुरोध प्राप्त हुआ। इससे पूर्व के तीन वर्षों में पंजाब के प्रत्येक आर्य समाज में भाई परमानन्द की अमरवाणी गूंज चुकी थी। उनके हृदय में धधक रही आर्य जाति को जगाने की प्रचण्ड अग्नि से उस समय के सभी प्रमुख आर्यजन अवगत थे। ऐसे में महात्मा हंसराज ने भाई जी को ही विदेशों में आर्य समाज के प्रचार और प्रसार के लिए सर्वाधिक योग्य प्रचारक समझा। भाई जी अफ्रीका देशों में आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रचारार्थ प्रस्थान कर गए। इस प्रकार उनके जीवन में एक नाटकीय मोड़ आ गया।

वैदिक मिशनरी के रूप में अपने प्रथम अफ्रीका प्रवास के दौरान गांधी जी से भी उनकी भेंट हो गई और वह जोहान्सबर्ग में एक मास तक उन्हीं के पास ठहरे। ये दोनों एक दूसरे की ध्येय निष्ठा से प्रभावित हुए बिना न रह पाए। जब राजनैतिक चिंतन के अन्तर ने इन दोनों महापुरूषों के जीवन और एक दूसरे के विचारों में काफी दूरी ला दी तब भी उनका मैत्री भाव पूर्ववत् ही बना रहा।

गांधी जी ने भाई परमानन्द के सम्बन्ध अपने पत्र 'यंग इंडिया' में उनका परिचय महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त एंव क्रांतिकारियों के प्रमुख मार्गदर्शक श्याम जी कृष्ण वर्मा से भी कराया। बताया जाता है कि श्री वर्मा ने ही भाई जी को बम बनाने की तरकीब से सम्बंधित एक कागज दिया था, जो उनके थैले से बरामद होने के कारण उनके विरूद्ध प्रथम मामला दायर होने का आधार बना।

भाई जी को राष्ट्रभक्ति के पावन अपराध में मृत्युदंड सुनाया गया था, किन्तु बाद में उनकी सजा आजन्म कारावास में बदल गई और इस महान् राष्ट्रवादी नेता को अंडमान की कालकोठरी में अपनी जवानी गलाने पर बाध्य होना पड़ा।

उन्हीं दिनों सरकारी प्रकोप से भयभीत कॉलेज के अधिकारियों ने भाई जी की आजीवन सदस्यता भी समाप्त कर दी और उनके परिवार ने उन दिनों जो अवर्णनीय यातनाएं झेलीं उनका रोमांचक वर्णन ख्यातिनामा भारतभक्त श्री. सी.एफ. एन्डूज ने किया है। उन आपदा के दिनों में भाई जी की धर्मपत्नी के पास वे अनेकों मानपत्र और प्रशंसापत्र ही अपने पति की एकमात्र धरोहर थे जो भाई परमानन्द को अफ्रीका के विभिन्न देशों में वहां के प्रवासी भारतीयों द्वारा समर्पित किए गए थे।

भाई जी को अंडमान की कालकोठरियों में वर्षों तक यातनाएं सहन करनी पड़ी। भाई जी ने महायुद्ध की समाप्ति के बाद स्वजीवन को स्वेच्छया समर्पित करने के

लिए अन्नजल का भी त्याग कर दिया था। किन्तु एक सप्ताह के बाद ही उन्हें बलात् भोजन दिया जाने लगा। इसी ढंग से दो मास बीते और उनका वजन ८२ पौंड घट गया। दीनबंधु एन्डूज भाई जी को अंडमान से मुक्ति दिलाने हेतु प्रयत्नशील थे और अन्तत: वे अंडमान की कालकोठरी से रिहा कर दिए गए। उनकी रिहाई पर विदाई देने के लिए जो लोग उपस्थित थे उन सभी के नेत्र सजल हो उठे थे।

इस प्रकार भाई जी अपने कष्टों से जर्जर हुई क्षीण काया लिए १९१९ में पुन: स्वदेश आ गए। किन्तु काले पानी की कठोर यातनाएं भी स्वराष्ट्र को स्वतन्त्र देखने की उनकी दुर्दम्य आकांक्षा को पराभूत नहीं कर पाई थी। अत: उन्होंने स्वधर्म और स्वदेश सेवा के अपने व्रत के पालनार्थ एक नवीन योजना बनाई। वे अपने व्यवसाय में एक समय के सहयोगी सरदार हुकमसिंह के पास हरिद्वार पहुंचे और उनके समक्ष अपनी योजना इन शब्दों में प्रस्तुत की, "सरदार जी, ऐसा प्रतीत होता है कि इस जीवन में तो मुझे यह सरकार स्वदेश की सेवा का कार्य नहीं करने देगी। अत: आप मेरे साथ गंगोत्री यमुनोत्री की यात्रा के बहाने चलिए। बाद में आप यह समाचार भिजवा देना कि पर्वतीय भाग में भाई परमानन्द का निधन हो गया। फिर मैं वापस लौट कर किसी अन्य नाम से पुन: देश सेवा का कार्य आरम्भ कर दूंगा।"

जिस नाम के लिए आज के नेता मारे-मारे फिरते हैं, उसे भी भुला और भुलवाकर भाई जी के राष्ट्र कार्य के लिए जीवन न्यौछावर की प्रबल आकांक्षा का ही परिचायक थी उनकी यह योजना।

भाई जी ने स्वदेश को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने हेतु हिन्दू रियासतों का सहयोग पाने और विशेषत: नेपाल के शासकों को इस दिशा में सक्रिय बनाने की दृष्टि से भी कई ठोस कदम उठाए थे।

भाई परमानन्द ने देव दयानन्द के महान् विचारों से प्रेरणा प्राप्त की थी। उनके जीवन का आदर्श वह महान् कर्मयोगी ही था जिसने सत्य की पूजा हेतु सत्ता और सम्मान को सदैव ठुकराया था।

जब गांधी जी ने विदेशी शिक्षा के बहिष्कार का आन्दोलन छेड़ा तो लाहौर में भी नेशनल कॉलेज की स्थापना हुई। स्वयं गांधी जी, लाला लाजपतराय एवं प्रान्तीय कांग्रेस, शिक्षा मंडल का अध्यक्ष व इतिहास का प्राध्यापक पद स्वीकार कर लिया। इसी कॉलेज में उन्होंने अमर हुतात्मा सरदार भगतसिंह के हृदय में देश भक्ति का बीजारोपण किया।

किन्तु जब मुसलमानों को कांग्रेस में लाने की आकांक्षा से महात्मा गांधी ने खिलाफत के साम्प्रदायिक उद्देश्य से स्वयं को जोड़ दिया तो भाई ही की आत्मा विद्रोह कर उठी। उन्होंने समझ लिया कि वर्ग विशेष के तुष्टीकरण का यह मार्ग राष्ट्रीयता के आन्दोलन को गतिमान करने के स्थान पर क्षतिग्रस्त ही करेगा। अतएव पद, सम्मान सभी से विमुख होकर उन्होंने गांधी जी से अपना मतभेद स्पष्टत: व्यक्त किया। वे अभी तक ब्रिटिश सरकार के ही कोपभाजन थे। उन्होंने उस समय बह रही गांधीवाद की प्रचण्ड आंधी को भी सहन करना सहर्ष स्वीकार कर लिया और वे हिन्दू संगठन, शुद्धि और समाज सुधार कार्यक्रम को नवीन गति प्रदान करने के लिए हिन्दू महासभा के मंच पर आ गए। उन्हें क़ेन्द्रीय असेम्बली का सदस्य बनने का अवसर मिला तो वहां भी वह निर्भीतापूर्वक सत्य राष्ट्रीयता का ही उद्घोष करते रहे। उन्होंने साम्प्रदायिकता का आरोप सहकर भी समय के प्रवाह में बह चलने और सस्ती ख्याति की प्राप्ति को अपना जीवन लक्ष्य न बनने दिया।

गांधी जी ने जब इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया कि 'हिन्दू-मुस्लिम एकता के बिना स्वराज्य की प्रगति संभव नहीं" तो इस महान् देश भक्त ने अपनी अडिग मान्यता के आधार पर यह उद्घोष किया कि हिन्दुओं का प्रबल संगठन ही स्वराज्य प्राप्ति का एकमात्र मार्ग है। क्योंकि यदि हिन्दू समाज संगठित हुआ तो अन्य सम्प्रदाय के लोग भी स्वाभाविक रूप से ही स्वराज्य के अनुष्ठान में सहयोगी बनेंगे। किन्तु यदि उनके तुष्टीकरण की प्रक्रिया जारी रही तो उनकी मांगों का सिलसिला बढ़ते-बढ़ते पृथक् होमलैंड की मांग तक पहुंचेगा और हिन्दू संगठित न होने से उनका पृथक होमलैंड बनने से रोक न सकेंगे'

वे हिन्दू सहासभा के आन्दोलन में जी-जान से जुट गए किन्तु हिन्दू समाज के संगठित न हो पाने के कारण इस दूरदर्शी नेता की आशंका ही अन्तत: सही सिद्ध हुई। १९३२ में जब कांग्रेस ने साम्प्रदायिक अवार्ड को स्वीकार किया तो भाई जी हिन्दू महासभा के लिए पूर्णत: समर्पित हो गए। १९३४ में वे हिन्दू सहासभा के अध्यक्ष भी बने और फिर जीवन की अन्तिम घड़ी तक वे इसी संस्था के साथ जुड़े रहे।

भारत के विभाजन की आशंका उन्होंने १९४५ में ही

व्यक्त कर दी थी। यद्यपि गांधी जी यह घोषणा कर रहे थे कि पाकिस्तान उनकी लाश पर बनेगा तो जवाहर लाल पाकिस्तान की कल्पना को मूर्खतापूर्ण बता रहे थे। किन्तु उसी वर्ष ७ अक्टूबर को भाई परमानन्द ने लिखा था:-

"एक ओर श्री जवाहर लाल नेहरू यह घोषणा कर रहे हैं कि वह तथा उनके मित्र देश का विभाजन कदापि नहीं होने देंगे। किन्तु दूसरी ओर उसी सांस में यह भी कहा जा रहा है कि यदि मुसलमान भारत में नहीं रहना चाहते तो उन्हें रहने के लिए बाध्य भी नहीं किया जा सकता। अत: मैं यहां और अब यह कहने की अनुमति चाहूंगा कि वह समय निकट आ रहा है कि जब इन सब बातों के बावजूद यही नेता पाकिस्तान के निर्माण की स्वीकृति प्रदान कर देंगे।

इतिहास ने भाई जी की भविष्यवाणी को ही अन्तत: सिद्ध कर दिया। काश! ऐसा न होता।

भारत विभाजन के दुःख को यह महान् नेता न सह पाया १८ दिसम्बर, १९४७ जलंधर में उनका प्राणांत हो गया।

प्रात: स्मरणीय देवता स्वरूपभाई परमानन्द उस महान् देश के उन गिने चुने महापुरूषों में से एक थे जिन्होंने एक उच्चकोटि के संन्यासी के तुल्य अपने जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सूर्य के तुल्य दूसरों को सही मार्ग दर्शन दिया। स्वयं धार्मिक जीवन की उपलब्धि कर हजारों को सन्मार्ग पर चलाया। परोपकार ही उनका जीवन व्रत था और आर्यजाति व स्वदेश की हितकामना ही एक मात्र साधना।

मेरे पिता थे बहुत महान

-आभा शुक्ला

मेरे पिता थे बहुत महान
क्रांतिकारी गया प्रसाद-विद्यावती की
थे वे बहादुर संतान
मेरे पिता थे बहुत महान
भारत ने जब भारत को देखा गुलाम
बालपन से ही ली थी मन में ठान
देश के लिए निसार दूंगा।
अपना तन मन धन औ प्राण
सचमुच मेरे पिता थे बहुत महान
सुशील, जीवटता, जुझारूपन
कर्मठ, कर्त्तव्यपरायण
ऐसे गुणों की थी जो खान
राकेश रानी है जिनका नाम
ऐसी सहकर्मिणी, सहधर्मिणी को पाकर
जीवन का संघर्षपथ हो गया
और भी आसान
दोनों ने मिलकर किया
जीवन का संग्राम
केवल यही नहीं था उनका मुकाम
ऋषि दयानन्द के अधूरे कार्य को
आगे बढ़ाने का था उनका
उद्देश्य महान।

जन-जन में ज्ञान का दीप
प्रज्ज्वलित करने के लिए
शुरू कर दिया मासिक 'जनज्ञान'
'जनज्ञान' के माध्यम से
हृदय मंदिर के लेखन से
अपनी ओजस्वी, क्रांतिकारी विचारधारा से
युवाओं का किया आह्वान
सोई हुई आर्य जनता में फूंक दिए प्राण
मेरे पिता थे बहुत महान
वैदिक साहित्य व परमात्मा की भर वाणी
चारों वेदों का देकर अनुपम दान
घर-घर में पहुंचा दिए वेद के मंत्रों का गान
संस्थापित कर दिया दयानंद संस्थान
चहुं ओर फैल रही थी अराजकता
धर्म और मजहब के नाम
धधक रहा था इस आग में सारा हिंदुस्तान
सबको लेकर साथ
किया हिन्दू रक्षा समिति का निर्माण
इस भरतश्रेष्ठ 'भारत' ने छेड़ी तान
गाना होगा सबको वंदे मातरम् का गान
करना होगा सब जन को भारत माता का सम्मान
मेरे पिता थे बहुत महान्।

वे कहते थे कि समय कम है

-स्वामी धर्मप्रेमानंद

"हिन्दू रक्षा समिति" की स्थापना के बाद एक दिन मैंने महात्मा वेदभिक्षुः जी से पूछा कि क्या आप नहीं समझते कि लड़ाई विषम है? हिन्दू विरोधी शक्तियों के पास धन, बल, सत्ता, विदेशी सहयोग सभी कुछ तो है। क्या साधनहीनता और हिन्दू नेतृत्व के बिखरे रहने पर कोरी भावनाओं से लड़ाई जीती जा सकेगी?"

वे बोले "कौन कहता है कि हिन्दू अशक्त, साधनहीन, तेजहीन है, उसे केवल आवाज देने की जरूरत है, उसमें आज भी ऐसी शौर्य परम्परा है कि दुनिया की सारी शक्तियों के विरोध के बावजूद वह विजयी होगा।" और सचमुच उन्होंने थोड़े से ही समय में प्रखर आत्मविश्वास, जूझारू कर्मशक्ति, तेजस्वी संकल्प के बल पर "हिन्दू रक्षा समिति" के रूप में एक देशव्यापी संगठन खड़ा कर दिया। एक कदम के पीछे हजारों कदम चल पड़े। हिन्दू रक्षा समिति के बड़े-बड़े पोस्टरों, विज्ञापनों, समाचारों और प्रचार साहित्य की चर्चा सुन-देखकर एक दिन एक मित्र ने पूछा, "इतनी तेजी से कार्य विस्तार के पीछे क्या कारण दीखता है आपको? क्या कोई विदेशी सहायता थी?" मैंने कहा, एक ही बात देख सका हूं मैं और वह साथ ले चलने वाले लोगों के प्रति उनकी सहजता। नेता का बड़प्पन नहीं बल्कि मित्र की सहजता ही हजारों लोगों के हृदयों को स्पंदित करती है। दुर्भाग्य यही है कि श्रेष्ठ और बड़े कार्यों में जुटे लोग नेतृत्व के अहं से ग्रस्त हो जाते हैं। जबकि इतिहास साक्षी है कि राम और कृष्ण के युगान्तर परिवर्तनकारी कार्य से लेकर स्वातन्त्र्य आंदोलन के कर्मक्षेत्र तक वही नेतृत्व सफल रहा है जो नेतृत्व के अहं से मुक्त रहकर समाज से मित्रवत् नाता जोड़ सका।

उस दिन की घटना मुझे स्मरण आती है तो लगता है कि वे वास्तव में ही जल्दी में थे, शायद इस बात का उन्हें आभास भी था। वे अपनी बेटी को डांट रहे थे "कितनी शिथिल हो, तुमसे दिन भर में इतना भी काम नहीं हुआ? क्या जिंदगी में आगे बढ़ोगी....।" निकटता का अधिकार जताते हुए मैंने कहा, "काफी तो कर डाला है आप यह क्यों भूल जाते हैं कि सब लोग आप जितने ही कार्य क्षमता वाले नहीं हो सकते?" आप यह आशा क्यों करते हैं कि सब लोग आप जितनी ही कर्मठता, बेचैनी और कार्यक्षमता हर व्यक्ति में होगी?" वे मेरी बात पर हंस पड़े और बात को टालने की गरज से बोले "तारीफ और वकालत करके आप दिमाग बिगाड़ रहे हैं बेटी का।" फिर उन्होंने बड़े स्नेह से उसे गले लगाते हुए कहा, "मेरी बिटिया बड़ी अच्छी है, बडी कर्मठ भी, लेकिन आप जानते ही हैं, समय थोड़ा है, हम सबको गति तेज तो करनी ही चाहिए।" वेदभिक्षुः ६० मील की रफ्तार से चलते थे जिन्दगी के सफर में, और यही चाहते थे कि शेष सहकर्मी, मित्र-बंधु और लक्ष्य के साथी भी इसी रफ्तार से उनके साथ चलें। वे जानते थे कि सबके लिए उनकी रफ्तार सम्भव नहीं पर उनकी व्यग्रता, बेचैनी और लक्ष्य के प्रति छटपटाहट उन्हें तेज चलने और सबको तेज चलने का आग्रह करने के लिए विवश करती थी।

वह उत्सवधर्मी दृष्टि

मैंने जब भी घर में प्रवेश किया, ऊंचे स्वर गूंज उठता, 'अरे आभा ऋचा, देखो कौन आया है।" और उसके बाद आता अनिवार्य आतिथ्य का क्रम! मेरे मना करने पर कहते, "यह नखरेबाजी जरूरी है क्या? कुछ न कुछ लेंगे जरूर, लेकिन मना करेंगे।" जबकि वस्तुस्थिति यही थी कि आतिथ्य के बिना उनका मन न मानता! आते रहने वाले आत्मीय का भी वे ऐसे स्नेहावेग से स्वागत करते मानो वह बरसों बाद आया है। इस पर भला कौन उनसे न जुड़ जाता! ऐसी मित्रों और सहयोगियों की अनन्त श्रृंखला जुड़ गई थी जो उनके किसी भी आह्वान का उपेक्षा करना अशक्य समझते। उनके सान्निध्य में बैठे रहने पर ऐसा लगता जैसे आज कोई उत्सव हो, मंगल पर्व हो या कोई घटना घटित हुई हो। इसलिए उनके सानिध्य में रहने वाले लोगों का हर पल ही उत्सव जैसा रहता हो तो क्या आश्चर्य! वे उत्सवधर्मी थे। समग्र जीवन उनके लिए उत्सव था। हां, जीवन के हर क्षण में, हर मोड़ पर, हर आदमी के साथ उत्सव की सी चहल-पहल उन्हें अभिप्रेत थी। ऐसा महापुरूष यदि चला जाए तो यह अनुभूति होना स्वाभाविक ही है कि उनके जाने पर किसी महोत्सव का अवसान हो गया हो। और अगर लक्ष्य साधना, जीवन्तता और विराट मानव की दृष्टि से देखूं तो कहूंगा कि वे एक ऐसी जिंदगी जी गए जो क्षणिक थी, एक अणुबम के समान। लेकिन जिसके विस्फोट ने निश्चित रूप से दुरभिसंधियों और षड्यंत्रों की प्राचीनों को एक ही आघात में ऐसा हिला दिया कि उसका कम्पन सदैव अनुभव किया जाता रहेगा और उसकी ऊर्जा दीर्घकाल तक कर्मपथिकों को ऊर्जस्वित करती रहेगी। ❑

महात्मा वेदभिक्षुः ज्योतिष्मान् स्तंभ

–डॉ. धर्मपाल आर्य

महात्मा वेदभिक्षुः (पं. भारतेन्द्रनाथ) का स्मरण करते ही एक भव्य व्यक्तित्व के धनी, महाधन, महापुरुष, आर्यसमाज, वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति समर्पित, सरस्वती के वरदपुत्र, दैदीप्यमान नक्षत्र और ज्योतिष्मान् स्तंभ का आकार आँखों के सम्मुख आकर खड़ा होकर पूछता है कि आर्य समाज कहाँ जा रहा है? महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों के अनुरूप देश की भावी पीढ़ी का कितना निर्माण हो रहा है और कौन कर रहा है? इन प्रश्नों का उत्तर भी, भले ही वे आज हमारे सामने मूर्त्त रूप में उपस्थित न हों, पर उनका व्यक्तित्व और कृतित्व दे रहा है। उनकी लेखनी से निःसृत विचार सरणि हमें बता रही है कि वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा वे नहीं कर सकेंगे जो पद प्रतिष्ठा की दौड़ में हैं अथवा वे जो मातृ संस्था का दोहन कर रहे हैं। यदि राष्ट्र रक्षा का मार्ग ढूंढ़ना है, यदि वेद प्रचार का मार्ग प्रशस्त करना है, यदि वेदानुकूल मानव का निर्माण करना है, यदि इस संसार चक्र में फंसे रहते हुए भी परमपिता परमात्मा का साक्षात्कार करना है तो महात्मा वेदभिक्षुः प्रणीत ग्रंथों का अध्ययन करना होगा। यदि आर्यसमाज के संगठन का उत्थान अपेक्षित है, यदि गौरक्षा का प्रश्न आपके सामने है, यदि अछूतोद्धार दलितोद्धार का प्रश्न आपके सामने है, यदि आप नारी जाति का सम्मान और उद्धार करना चाहते हैं तो आप वेद को पढ़िये, वेद के अनुसार आचरण कीजिए और इस कार्य को सुगम बनाया था महात्मा वेदभिक्षुः ने।

पं. भारतेन्द्रनाथ जी ने 'आर्य', 'आर्यमित्र' और 'आर्योदय' का सम्पादन किया था। उनके अग्रलेख ऐसे अग्निस्फुलिंग होते थे जो सुप्त आत्मा को चेतना प्रदान करने में सक्षम थे। उनके लेख ऐसे निर्झर होते थे जो दग्ध हृदय को शीतलता प्रदान करते थे। मैंने बचपन से ही उनके लेखों को पढ़ना प्रारम्भ कर दिया था। उनके हृदय मन्दिर से निकले उद्गार आज भी हृत्तन्त्री को झंकृत करते हैं। वे शक्तिशाली विचार जो तत्काल उभर कर आते थे और उनके वे विचार जो हृदय में न जाने कब से हलचल मचा रहे होते थे और सहसा ही सफेद कागज पर काली-नीली-हरी स्याही से एक चित्र सा अंकित कर देते थे। उनका एक-एक शब्द चक्षुओं के माध्यम से हृदय तक, मस्तिष्क तक रक्त शिराओं के माध्यम से सिरहन सा भरता चला जाता था एक अनुपम, अप्रतिम संदेश।

उन्होंने दयानन्द संस्थान की स्थापना १९७२ में किन परिस्थितियों में की, इसके विस्तार में जाने की अपेक्षा यह जानना आवश्यक है कि उनके किए कार्य का कितना मूल्यांकन हुआ है। उस आग्नेय व्रती का कार्य स्वयं बोल रहा है। महाभारत का प्रत्येक पात्र स्वयं बोलता है। महात्मा वेदभिक्षुः का कार्य स्वयं बोल रहा है। जिस प्रकार वृक्ष की पहचान उसके फलों से होती है, वैसी ही पहचान उनके कृतित्व से होती है, हो रही है और होती रहेगी। उनकी कीर्ति जीवित है तो समझिये कि वे हमारे बीच में हैं। उनकी कविताएं, उनके लेख, उनके द्वारा प्रकाशित साहित्य उनका स्मारक है।

मैं व्यक्तिगत रूप से उनका ऋणी हूँ। दिल्ली में १९६५ में आया था। आर्यसमाज रामकृष्णपुरम्, सैक्टर ३ से जुड़ा। वहाँ मंत्री भी रहा। पण्डित जी वहाँ अनेक बार व्याख्यान देने आए। पं. ब्रह्मदत्त स्नातक-आर्यसमाज के प्रधान थे। उनके निमंत्रण पर पण्डित जी सारे पूर्व निश्चित कार्यक्रम छोड़कर भी आ जाया करते थे। बाद में हमने आर्यसमाज शालीमार बाग की स्थापना की। मुझे प्रथम प्रधान के रूप में कार्य करने का सुअवसर मिला। मैं हरध्यानसिंह मार्ग पर उनके कार्यालय में जाया करता था। अप्रैल १९८१ में हमने डी.डी.ए. की आर्यसमाज के लिए प्रदत्त भूमि पर प्रथम बार यज्ञ किया। पं. भारतेन्द्रनाथ जी ने ओ३म् ध्वजा फहराई थी तथा उस प्रथम समारोह की अध्यक्षता की थी। उस दिन यज्ञ के ब्रह्मा थे आचार्य यशपाल जी सुधांशु।

ये चित्र इस समय भी मेरी आँखों के सम्मुख स्पष्ट रेखाएं लिए हुए हैं। उस अमर सेनानी ने उस दिन हम सभी को वेदामृत का पान कराया था। वे स्मृतियाँ हमारी स्थायी थाती हैं, धरोहर हैं।

महात्मा वेदभिक्षुः जी द्वारा सम्पादित आर्योदय का वेदांक (श्रावणी, रक्षा बन्धन, संवत् २०२३) मेरे सामने हैं। यह विशेषांक मेरी अनेक यात्राओं का साथी रहा है। यह देश-विदेश में घूम आया है और मेरे लिए जब कभी वेद पर बोलने का अवसर आया, मेरा आधार रहा है। कनाडा, अमेरिका, हालैण्ड की आर्यसमाजों में बोलते समय [illegible] यही मेरा अवलम्ब रहा है। मैं स्वयं पं. भारतेन्द्र जी का चिर ऋणी हूँ। [illegible] दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मंत्री बनने से पहले, आर्यसमाज [illegible] नगर में अपने जीवन काल का पहला व्याख्यान देना था, तब भी [illegible] विशेषांक मेरा सहायक बना। पं. शिवकुमार जी शास्त्री, पूर्व सांसद

की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ था।

अब भी प्रत्येक वर्ष पण्डित जी को स्मरण करने के लिए मैं समय-समय पर वेदमन्दिर, इब्राहीमपुर, बुराड़ी, दिल्ली में जाने के लिए लालायित रहता हूँ। मैं परमपिता परमात्मा से कामना करता हूँ कि आदरणीया श्रद्धेय माता राकेश रानी जी को शक्ति और साहस दे, उन्हें पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे जिससे वे उस दीपक को सतत जलाए रख सकें जो आदरणीय पं. भारतेन्द्रनाथ जी ने जलाया था। उनका आर्य जाति को जगाने का संकल्प, उनका घर-घर में परमात्मा की वाणी वेद को पहुँचाने का संकल्प, 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का संकल्प, सामाजिक कुरीतियों को तथा ढोंग और पाखण्ड को मिटाने का संकल्प, सामाजिक विषमता को दूर करके सामाजिक समरसता लाने का संकल्प शीघ्र पूर्ण हो।

वेद सेवको मुख्य: वेदकार्य तत्पर:।
जयत्यद्यापि कार्यैः स्वै:वेदार्पित जीवन:।।

सत्य और स्वाध्याय की मशाल लेकर चलने वाले उस महामना तपोनिष्ठ महात्मा वेदभिक्षु:-पं. भारतेन्द्रनाथ के प्रति मेरे श्रद्धासुमन अर्पित हैं।

पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
ए/एच-१६, शालीमार बाग, दिल्ली-११००८८,
०११-२७४७२०१४, ०११-२७४७१७७६

(पृष्ठ ७ का शेष)

अग्नि रूप परमेश प्रशंसित। करें तुम्हारे सद्‌गुण संचित।।
नित्य यज्ञ में होता साजो। हृदय कक्ष में आन विराजो।।२९।।
ज्योति पुञ्ज परमेश्वर श्रेष्ठा। तुम ही विश्व यज्ञ उपदेष्टा।।
पावन प्रभा छटा में अपनी। हृदय पधारो स्वागत अगनी।।३०।।
सत रज तम गुण वाली सत्ता। रवि शशि तारक भूमि महत्ता।।
अहंकार महतत्व प्रकृति धर। तन्मात्रायें पञ्च युक्त कर।।
तीन सात का गुणित प्रवक्ता। एक विंश है यही त्रिसप्ता।।
भूत पाँच दस कर्म ज्ञान की। इन्द्रिय गणना पञ्च प्राण की।।
अन्त:करण एक यह सारे। शुद्ध पुष्ट हों सभी हमारे।
तीन वचन विभक्तियाँ सात। मिलकर इक्किस करते बात।।
प्रभु वाचस्पति जगदाधारी। दें वाणी हमको अविकारी।।
देव दया का धाम ध्रुव, दें हमको वरदान।
वन्दनशील कृतज्ञ का, करें ओ३म् कल्याण।।३१।।

-अध्यक्ष वेद मनीषा न्यास, 'वरेण्यम्'
अवन्तिका (ए.डी.ए.-१), रामघाट मार्ग, अलीगढ़-२०२००१

(पृष्ठ १९ का शेष)

५ अक्टूबर, १९२३ तक मुकदमा चलाने के बाद अंतत: धारा ११७ के अंतर्गत एक वर्ष तथा धारा १४३ के तहत ४ माह कैद की सजा स्वामी जी को सुना दी गई।

किन्तु २३ दिसम्बर को स्वामी जी सहसा रिहा कर दिग गए। २३ जुलाई, १९२३ को स्वामी जी ने कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। कांग्रेस के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. मोतीलाल नेहरू को अपना इस्तीफा भेजते हुए उन्होंने लिखा- 'इस इस्तीफे का यह अर्थ नहीं कि मैं कर्म-क्षेत्र से संन्यास ले रहा हूं। अपनी योग्यता, सीमा और सामर्थ्य के अनुसार मैं अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक देश-सेवा के कार्यों में पूरी लगन व निष्ठा से प्रवृत रहूंगा।' तदुपरांत आपने हिन्दू संगठन आंदोलन का नेतृत्व ग्रहण किया। दलितोद्धार पर आपने 'मुक्ति सोपान' नाम से एक पुस्तिका लिखकर उसे प्रकाशित कर मुफ्त बंटवाई। अंग्रेजी में इस पुस्तिका का शीर्षक था, **हिन्दू संगठन सेवियर आफदी डाइंग रेस।** सन् १९२३ में ही आपने आगरा में एक शुद्धि सभा की भी स्थापना की।

यद्यपि स्वामी जी की अवस्था ७० वर्ष की हो चली थी तथापि अपने समस्त कार्यों को वे जिस उत्साह से करते थे, उसे देखकर तो युवक स्तम्भित रह जाते।

सन् १९२६ में असगरी बेगम नामक एक मुसलमान महिला कराची से दिल्ली आई। उसके साथ उसके दो बच्चे और भतीजा भी था। आर्यसमाज में आकर उसने शुद्धि की पेशकश की तो स्वामी जी ने उसका शुद्धिकरण सम्पन्न करा दिया। इस महिला का नाम शांतिदेवी रखकर उन्होंने उसे 'वनिता आश्रम' भेज दिया।

कुछ काल बाद उस स्त्री के पति और पिता उसे ढूंढते हुए दिल्ली आए। उन्होंने आर्यसमाज और स्वामी श्रद्धानन्द पर उस स्त्री को बहका कर धर्म भ्रष्ट करने का आरोप लगाते हुए दिल्ली में अभियोग करा दिया।

पर सांच को आंच क्या?

४ दिसम्बर, १९२६ को स्वामी जी तथा उनके साथियों को, ६ मास तक मुकदमा चलने के बाद, अदालत ने समम्मान बरी कर दिया।

२३ दिसम्बर, १९२६ की दोपहर को स्वामी जी की प्रकृति ठीक न होने से वे अपने कक्ष में आराम कर रहे थे जब अब्दुल रशीद नामक एक धर्मान्ध स्वामी जी से मिलने के बहाने अन्दर आया और गोली चलाकर स्वामी जी की हत्या कर दी। इस तरह स्वामी जी की दिव्य, प्रेरणामयी, राष्ट्रकल्याणकारी जीवन लीला समाप्त हुई।

(आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली)

चिर प्रेरक रहेंगे-डा. कृष्ण स्वरूप श्रीवास्तव

–राकेश रानी

व्यक्ति आता है-अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर परमपिता परमात्मा की शरण में चला जाता है। यही है सृष्टि के शुभारम्भ से चला आ रहा शाश्वत नियम। इस क्रम से बंधे हैं सभी। अधिसंख्य जन अपनी नश्वर काया का परित्याग कर चिर विदाई लेते हैं तो उनके परिजनों के नेत्र ही सजल होते हैं। उनकी स्मृतियों से भी काल प्रवाह के साथ-साथ वे विस्मृत से भी हो जाते हैं। पौराणिक परम्परा के अनुसार श्राद्ध पक्ष में उनका स्मरण करने की परम्परा परिवारों में निभाई जाती है। उस परिपाटी में भी उस पक्ष का अंतिम दिवस विस्मृत परिजनों की स्मृति को समर्पित है।

एक अन्य वर्ग उन व्यक्तित्वों का है, जिनके निधन पर उनके परिजनों के ही नहीं अन्य अनेक जनों के लिए, समाज के लिए भी वे चिरस्मरणीय रहते हैं। क्योंकि वे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के वैदिक आह्वान् को अपनी व्यवहार विधा बनाकर अपनी जीवन यात्रा का समापन करते हैं। उस व्यवहार विधा के अनुयायी का परिवार सतत विस्तार पाता जाता है। इसी श्रेणी में आते हैं चिरस्मरणीय भाई डॉ. कृष्णस्वरूप श्रीवास्तव।

डॉ. श्रीवास्तव जी के दर्शन का सौभाग्य मुझे प्रथम बार तब प्राप्त हुआ था जब चि. धर्मवीर जी राजक्षमा (टी.बी) जैसे भीषण रोग से ग्रस्त होने के कारण उपचारार्थ डॉ. राजन प्रसाद चिकित्सालय में भर्ती कराए गए थे। डॉ. श्रीवास्तव के उपचार से धर्मवीर जी को पूर्ण स्वास्थ्य लाभ की अवस्था मिली। एक मास के लगभग डॉ. श्रीवास्तव की देखरेख में उनका उपचार हुआ। इस अवधि में डॉक्टर साहब से सम्पर्क बना। उनके जनहितेषी स्वभाव, आत्मीयता पूर्ण व्यवहार का यह चमत्कार था कि वह हमारे लिए अपने परिवार के ही वरिष्ठ सदस्य हो गए। परिवार के हर सुख दुःख में वे सहभागी रहे। साथ ही दयानन्द संस्थान और 'जनज्ञान' परिवार के भी वे अभिन्न सदस्य हो गए। परिवार में कोई भी व्यक्ति अस्वस्थ होता तो उन्हें इस बारे में सूचित किए जाते ही वे उसको देखते और उपचार में तत्परता बरतते। इतना ही नहीं अपितु दयानन्द संस्थान के वेद प्रचार और धर्म जागरण अभियान में भी वे प्रसन्न मना पूर्ण निष्ठा सहित सहयोगी रहे। उन्होंने इस अभियान को गतिमान रखने में मनसा-वाचा-कर्मणा सक्रिय योगदान किया। जब कभी उनके इस योगदान के लिए संस्थान के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षुः आभार व्यक्त करते तो उस महान इन्सान (डॉ. श्रीवास्तव) की वाणी से यही शब्द उच्चारित होते थे "पंडित जी-मैंने तो अपने कर्त्तव्य का पालन मात्र किया है, अहसान तो नहीं किया।"

महात्मा वेदभिक्षुः जी जब अपनी जीवन यात्रा का अन्तिम चरण पूर्ण कर रहे थे तो उन्हें राजधानी के जयप्रकाश नारायण चिकित्सालय में चिकित्सा हेतु भाई डॉ. श्रीवास्तव ही लेकर गए थे और वहां महात्मा जी से अपना सम्बन्ध डॉ. के पूछने पर इन शब्दों में व्यक्त किया था (मेरे बड़े भाई, गुरु एवं हमारे परिवार के सभी सदस्य महात्मा जी को इस युग का ब्रह्मा मानते हैं क्योंकि चारों वेद हिन्दी भाष्य सहित का इन्होंने ही दर्शन सुलभ कराया है) इसके बाद भी डॉ. श्रीवास्तव अस्पताल में परिवार से निरन्तर संपर्क में रहे।

मैंने तो उनके रूप में अपना एक बड़ा भाई पा लिया था। एक ऐसा भाई जिसकी स्नेह की छाया ने मुझे विपरीत स्थितियों के ताप-संताप में अपनी सहानुभूति और सहयोग भावना से राहत अनुभव कराई। जब भी कभी कोई समस्या मेरे सामने आई, बड़े भाई के रूप में सदैव उन्हें अपने सामने खड़ा पाया। हमारी भारतीय संस्कृति में भाई-बहन के पर्व 'रक्षाबन्धन' पर हाथ में राखी बांधते समय तथा 'भाई दूज' पर मस्तक पर टीका लगाते समय की उनकी स्नेहभरी मुस्कान सदैव उनका स्मरण कराती रहेगी।

उनकी चिर विदाई के बाद वह सशरीर तो हमारे मध्य नहीं रहे किंतु उनकी स्मृतियां समय-समय पर उनके द्वारा किया गया मार्गदर्शन हर उलझन को सुलझाने

में सहायक तो होता ही है। साथ ही उनकी उपस्थिति का भी अहसास दिलाता है।

जब अपनी वाणी और लेखनी से कटु सत्य और तथ्य का दिग्दर्शन कराने और समाज तथा राष्ट्र को आसन्न संकटों के प्रति सतर्क करने के पत्रकारिता धर्म को निभाने के पावन अपराध में मैं अभाव अभियोगों (मुकदमों) के चक्रव्यूह में ग्रस्त और त्रस्त थी तो वे मेरा मनोबल बढ़ाने वाले वरिष्ठ पारिवारिक जन की प्रभावी भूमिका निभाते थे। राष्ट्र के प्रति उनका अनन्य निष्ठा का भाव मेरे लिए प्रेरक रहा है और रहेगा।

डॉ. श्रीवास्तव ने अपनी कर्म साधना से अपने नाम को सार्थक किया था। उनमें श्रीकृष्ण के तुल्य सत्य पथ प्रदर्शन क्षमता, न्याय की राह के हर पथिक के प्रति ममता और समता की जो वरेण्य भावना थी उससे वे वास्तविक अर्थों में कृष्ण स्वरूप ही हो गए थे। उनकी जीवन संगिनी हम सबके लिए आदरणीय भाभी उमा जी वास्तव में श्री स्वरूप ही हैं। उनका स्नेह और अपनत्व मेरे लिए अमूल्य है। उनकी पुत्रियों में अभिलाषा जी, प्रिया जी, श्री जी हैं। अपने माता-पिता के आदर्श जीवन दर्शन के अनुगमन में उनकी सभी पुत्रियां निष्ठा सहित संलग्न रह कर सुयोग्य पिता की योग्य संतान हैं। उनका व्यवहार किसी को भी डॉ. श्रीवास्तव के गरिमामय जीवन की झलक कराता है। हम तथा हमारे परिवार का प्रत्येक सदस्य उस साधु स्वभाव पुण्यात्मा का चिरऋणी है। परमपिता परमात्मा डॉ. श्रीवास्तव द्वारा प्रदर्शित सेवा पथ के अनुगमन का सभी को साहस प्रदान करे, यही है प्रार्थना।

-अध्यक्ष दयानंद संस्थान, वेद मंदिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६

वेद मन्दिर की गौशाला : एक आग्रह एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर दयानन्द संस्थान विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर **''चारों वेदों का हिन्दी भाष्य''** तथा अन्य वैदिक साहित्य अब तक दो लाख से भी अधिक परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने का भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमन्दिर इब्राहीमपुर, दिल्ली में लगभग १५ वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था। इस गौशाला में गौओं की संख्या इस समय एक दर्जन हो गई है। इस गौशाला में उत्पादित गौ दुग्ध का वितरण आश्रमवासियों तथा समय-समय पर आने और ठहरने वाले अतिथि गण में किया जाता है।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर गौ रक्षा के अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। जो भी सहयोगी जन चारा प्रदान करेंगे उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन में भी ठोस योगदान सिद्ध होगा। अतः आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है। यदि आप राजधानी से दूरस्थ स्थान के निवासी हैं तो गौओं हेतु अपने योगदान की राशि **''दयानन्द संस्थान''** के नाम बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं।

दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्त के नाम और राशि को 'जनज्ञान' मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें :-

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५ फोन : ९८१०२५७२५४

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती *(आचार्य)* **राकेश रानी** *(अध्यक्ष)*

शुद्धि का अर्थ और महत्ता

—पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

शुद्धि का अर्थ है, पवित्रता। संसार में कोई वस्तु ऐसी नहीं है, जो अन्य वस्तुओं के संसर्ग में आकर अपवित्र न होती हो, परन्तु हर एक वस्तु को पवित्र करने की विधि है। अपवित्र सोने को आग में तपाकर शुद्ध कर लेते हैं। अशुद्ध बर्तन को मिट्टी से मांजकर और जल में धोकर शुद्ध करते हैं। मनु जी महाराज का कथन है कि—

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥

मनुष्य के शरीर का मल जल में स्नान करने से दूर होता है। मन में यदि दोष आ जाये, तो सत्य के आचरण से शुद्ध होता है। विद्या की प्राप्ति और तप का जीवन व्यतीत करने से अन्तरात्मा शुद्ध होती है और बुद्धि ज्ञान से निर्मल होती है।

काल प्रवाह के चलते आर्य जाति पर भी स्वभावतः आलस्य और प्रमाद ने अपना प्रभाव डाला। लोगों ने वेदों का पठन-पाठन छोड़ दिया। आपस में लड़ाई-झगड़े होने लगे। भारतवर्ष के लोगों ने बाहर प्रचारार्थ जाना बन्द कर दिया और अन्य देशों के लोग अनेक प्रकार के वेदविरोधी धर्मों के अनुयायी हो गए। भारतवर्ष में अवश्य वैदिक धर्म का प्रचार था और जो लोग बाहर से आ जाते थे, वह वैदिक संस्कृति से लाभ उठाते थे, उनके साथ किसी प्रकार भेद भाव नहीं था। वह उसी प्रकार अपने धार्मिक कृत्यों में भाग ले सकते थे, जैसे अपने देश के लोग।

परन्तु अधःपतन जब एक बार आरम्भ हो जाता है, तो बड़ी कठिनता से रुकता है। कुछ दिनों पीछे हिन्दुओं की यह अवस्था भी नहीं रही। पहले धार्मिक पतन हुआ। फिर सभ्यता का ह्रास हुआ। फिर नैतिक विप्लव की बारी आयी। क्षत्रिय बल कम हो गया। आपस की फूट के कारण बाहर वालों के आक्रमण पर आक्रमण होने लगे। पराजित लोगों की उच्च से उच्च बातों को भी विजेता लोग घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं। जब मुसलमानों ने आक्रमण किया और हिन्दू उनसे पराजित होकर अपना देश खो बैठे, तो मुसलमानों ने अपने धर्म का इन पर अध्यारोप किया।

उस समय उनको यही एक बात सूझी कि जिस प्रकार हो सके अपनी बची बचाई पूंजी की रक्षा करनी चाहिए। इसलिए उन्होंने विजातीय लोगों से तथा उनकी संस्कृति से असहयोग करना आरम्भ कर दिया। मुसलमानों के हाथ का जो खायेगा या उनके साथ कोई व्यवहार करेगा, वह हिन्दू धर्म से बहिष्कृत समझा जाएगा। इस नियम ने उस समय हिन्दुओं की कुछ रक्षा अवश्य की। उस समय दूसरों को अपने धर्म में मिलाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था। हिन्दुओं की चोटी मुसलमानों के हाथ में थी। मुसलमान शासक थे, उनको यह कब सह्य था कि कोई उनके धर्म की मीमांसा करता।

परन्तु इस बात ने हिन्दुओं को हानि भी बहुत पहुंचाई। जो छूत छात मुसलमानों के प्रति दिखाई गयी, वह शनैः शनैः हिन्दुओं ने परस्पर एक-दूसरे के लिए भी दिखानी आरम्भ की।

होते-होते ऐसा युग आ गया कि हिन्दू लोग सर्वथा भूल गए कि कभी वह भी दूसरों को अपने धर्म में दीक्षित किया करते थे।

कश्मीर में पहले मुसलमानी राज न था। उत्तर से मध्य एशिया के एक विजेता ने कश्मीर को जीता। परन्तु वह मुसलमान न था, उसने गीता का उपदेश सुना और हिन्दू होना चाहा। परन्तु पण्डितों ने उनको अपने धर्म में लेने से इनकार कर दिया। तब वह मुसलमान हो गया। और उसमें इतनी कट्टरता आ गयी कि कश्मीरी ब्राह्मणों को वहां से भागना पड़ा। कश्मीर में हिन्दू ह्रास का बीज तभी बोया गया।

2. अकबर बादशाह को हिन्दू धर्म प्रिय था। उसने कई बार हिन्दू होने की इच्छा प्रकट की। कहावत है कि बीरबल ने एक गधे को साबुन से धोना शुरू किया। अकबर ने पूछा, "क्या कर रहे हो।" बीरबल ने कहा, "मैं इसे साबुन लगाकर बछड़ा बनाऊंगा।" अकबर बोला, "क्या गधा साबुन लगाकर बछड़ा हो सकता है?" बीरबल ने उत्तर दिया, "क्या मुसलमान भी कभी हिन्दू हो सकता है?" सम्भव है कि यह केवल कहानी मात्र हो, परन्तु इस से हिन्दुओं के दृष्टिकोण का वास्तविक रूप मालूम हो जाता है। हिन्दुओं की बहुत दिनों से ऐसी धारणा रही है कि बछड़ा तो गधा हो सकता है, परन्तु गधा बछड़ा नहीं हो सकता।

इस निर्बलता को दूसरे मतवालों ने देखा और उससे लाभ उठाया। मुसलमान और ईसाइयों ने तो खूब ही लूट मचाई। उनका काम सुगम हो गया। यदि हिन्दुओं में यह दोष न होता, तो मुसलमान और ईसाइयों को अपने धर्म की उत्कृष्टता दिखाने के लिए शास्त्रार्थ करना पड़ता, समझाना पड़ता।

हिन्दुओं ने छोटी-छोटी बातों पर अपने भाइयों को निकाल दिया और वे जाकर मुसलमानों में मिल गए। यदि किसी मुसलमान को यह आवश्यकता हुई कि अमुक हिन्दू को मुसलमान बनाया जाए, तो उसने झूठ-मूठ खबर उड़ा दी कि इसने हमारे हाथ का पानी पी लिया है। यह सुनते ही उसके परिवार वालों ने उसे निकाल दिया और उसने रो-रोकर अपने धर्म का परित्याग किया। ईसाइयों ने दक्षिण में रात्रि के समय कुओं में रोटियां डाल दीं और गांव के लोगों ने बिना जाने उन कुओं का पानी पी लिया। दूसरे दिन इन पादरियों ने प्रसिद्ध कर दिया कि अमुक लोगों ने हमारी रोटियों से दूषित पानी पीया है। जाति वालों ने तुरन्त उनको निकाल दिया और कहा कि बस तुम ईसाई हो गये। जो स्वयं गिरना चाहे, उसे कौन बचावे।

ऋषि दयानन्द ने इन सब अवस्थाओं को देखा और उन्होंने हमारा दृष्टिकोण बदला। उन्होंने तीन बातें बताईं—
१. पहले पृथ्वीतल के सभी मनुष्य वैदिक धर्मी थे।
२. अज्ञान और आलस्यवश अन्य धर्मों का प्रचार हुआ।
३. फिर से सब वैदिक धर्मी हो सकते हैं। कोई ऐसा पतित मनुष्य नहीं है, जो अपना सुधार न कर सके।

यह तीनों बातें हिन्दुओं के मुर्दे शरीर में जीवन डालने के लिए काफी थीं। जो स्वामी दयानन्द के अनुयायी होकर आर्य समाज में शामिल हो गए, उन्होंने अपना कर्तव्य समझा कि वैदिक धर्म के अमृत उपदेशों का न केवल हिन्दुओं, किन्तु ईसाई और मुसलमानों में भी प्रचार किया जाए, जिससे मनुष्य मात्र की उन्नति हो। उधर जब कुछ ईसाई, मुसलमानों या नव-मुस्लिमों ने सुना कि हम भी वैदिक धर्म से लाभ उठा सकते हैं, तो उन्होंने वैदिक धर्म ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की। एक शुद्धि भी अलखधारी जी की महर्षि दयानन्द ने स्वयं की थी।

पण्डित लेखराम ने तो शुद्धि का दरवाजा ही खोल दिया। जिन लोगों को वैदिक धर्म प्रिय लगा, वह झट से शुद्ध होकर आर्य हो गए। यह बड़ा उपकार का कार्य था। परन्तु क्या कोई ऐसा भी अच्छा काम है, जिसका कोई विरोध न करे। चांदनी रात सभी को प्रिय नहीं होती। कुछ काली रात के भी इच्छुक होते ही हैं। शुद्धि का विरोध पहले तो हिन्दुओं की ओर से हुआ, फिर मुसलमानों की ओर से। जिन्होंने लोगों को शुद्ध किया था, उनका बहिष्कार किया गया।

अब बाहर का विरोध सुनिए। [illegible] अब तक मुसलमान और ईसाई हिन्दुओं की ओर से निःशंक थे। वे हिन्दुओं को कच्चा धागा समझते थे, जब चाहा झटक दिया। अब इस नयी शक्ति को देखकर उनकी भी आंखें खुलीं। इससे पहले उनके लिए हिन्दू धर्म का दरवाजा बन्द था। आर्यों ने यह घोषणा कर दी कि ईसाई और मुसलमान भी वैदिक धर्मी हो सकते हैं। एक प्रकार से आर्यसमाज ने उनको वे अधिकार दिला दिए, जो अब तक उनको प्राप्त न थे। परन्तु ईसाई पादरी और मुसलमान मौलवियों को यह अधिकार अच्छे न लगे। उनको शंका हो उठी कि इससे हमारी संख्या कम हो जाएगी। वे इस प्रश्न को जो सर्वथा धार्मिक और सामाजिक था, राजनैतिक बना बैठे। पहले तो हिन्दुओं में दूसरों को मिलाना नयी बात नहीं है। छत्रपति शिवाजी ने कई मुसलमानों को हिन्दू बनाया था। नए रोग की नयी दवा की जाती है। जब धार्मिक स्वतन्त्रता है, तो वह सभी के लिए होनी चाहिए। जिसका जी चाहे उस धर्म का पालन करे।

लाखों मलकाने जो पहले क्षत्रिय थे, किसी समय नाम के मुसलमान बना लिये गए थे। वे पचासों वर्षों से अभ्यर्थना करते थे कि हिन्दू क्षत्रिय लोग हमें अपने में मिलायें। इसमें न तो जबरदस्ती थी और न लालच, मलकानों की यह इच्छा स्वाभाविक थी। जो बिछुड़ा भाई आपसे मिलना चाहता है, उसका स्वागत करना आपका परम कर्तव्य है। इस समय हिन्दुओं को अपनी जाति तथा संस्कृति की रक्षा करने के लिए इस जटिल समस्या पर पूरा विचार करना चाहिए। क्योंकि मुसलमान और ईसाई दोनों भरसक हिन्दुओं को हड़प करने की कोशिश कर रहे हैं। सैकड़ों ईसाई मिशनरी यूरोप और अमेरिका से आते हैं और करोड़ों रुपया ईसाई बनाने में व्यय करते हैं। अगर ऐसा ही हाल रहा, तो हिन्दू संस्कृति के मिट जाने का भय है। इस लिए हिन्दुओं को सावधान होना चाहिए।

इसके लिए दो बातों की आवश्यकता है। एक तो यह कि सर्वसाधारण में अपने धर्म का प्रचार कर दिया जाए कि कोई विधर्मी होने ही न पावे। दूसरे यदि कोई विधर्मी हो जाए और फिर पश्चाताप करे, तो उसको शुद्ध होने और हिन्दू सोसायटी में हिल-मिल जाने के लिए पूरी सुविधायें हों।

नीच और दलित जातियों को उठाओ। उनसे अच्छा व्यवहार करो और उनमें धर्म का प्रचार करो, जिससे कोई उनको बहका न सके। यदि कोई पतित हो जाए, तो उसे प्रेम से समझाओ। नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में शुद्धि सभायें खोलो और उनका ठीक प्रबन्ध करो।

वेद सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

प्रश्न कर्त्ता – अमरेन्द्र अमृत शीर्ष

उत्तरदाता – ज्ञानचन्द्र

प्र.१. वेदों में प्राचीन सभ्यता की झलक मिलती है। कैसे?

उ. जब वेद प्राचीन ग्रन्थ हैं तो स्पष्ट ही उसमें प्राचीन सभ्यता की झलक होगी और वह है भी। प्राचीन काल के आचार-व्यवहार, परिवार, विवाह, संतानोत्पत्ति, राज्य शासन, उपचार, भ्रमण तथा धर्म भावना व संस्कृति सभ्यता के पर्याप्त वर्णन वेद में उपलब्ध हैं।

प्र.२. वेदों में विज्ञान विस्तृत रूप में फैला हुआ है। कैसे?

उ. "विज्ञान" एक बहु-अर्थी शब्द है। एक पुरातन विज्ञान है तथा एक आधुनिक विज्ञान है। पुरातन विज्ञान में संसार सहैतुक है, आधुनिक विज्ञान में जगत् दुर्घटना है। अत: किस विज्ञान की दृष्टि से उत्तर दिया जाए। आत्मोन्मीलन, आत्म विस्तारण, आत्म सघनत्व तथा आत्म-उर्ध्वीकरण आदि वेद के विज्ञान के स्पष्ट लक्ष्य हैं और उसकी प्रक्रिया भी उसमें है। आज के विज्ञान का सा यन्त्र ज्ञान व रसायन ज्ञान भी पर्याप्त मात्रा में वेद काल में विद्यमान था। पर मूलत: भिन्न था।

प्र.३. वेदों में वर्णित ज्ञान को जानकर पाश्चात्य विद्वान चकित रह जाते हैं। कैसे?

उ. चकित होने के दो प्रमुख कारण हैं। एक तो इतने प्राचीन और प्रागैतिहास काल में इतनी श्रेष्ठ भाषा, इतना उत्तम साहित्य तथा इतनी गहन व मनोरम अभिव्यंजना कैसे हो पाई-ये जड़-विकासवादी वैज्ञानिकों को बहुत आश्चर्य चकित करता हैं। वे इसी जगत् के इसी जीवन को जानते हैं जवकि भारत में यह सातवां जगत माना जाता है। भारतीय परम्परा का प्रारम्भ प्रथम जगत-स्वायंभुव मवंतर के काल से है।

प्र.४. वेदों में वर्णित जीवन-नियम को दर्शायें।

उ. वेद में वर्णित जीवन शैली तो बहुत विस्तृत है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र, विषय और प्रसंग पर मंत्र प्राप्त हैं। फिर भी मुख्य रूप से वेद का लक्ष्य है पृथ्वी का स्वर्गीकरण व मानव का दैवीकरण। इसी लक्ष्य को लेकर समस्त वैदिक परिपाटी निर्मित हुई है। वेद सामुदायिक प्रगति के हामी हैं। व्यक्तिगत मुक्ति और व्यक्तिगत विकास भी समुदाय के निमित्त होना चाहिए। व्यक्तिगत मुक्ति और उन्नति "व्यक्ति के लिए" [illegible] ... [illegible] पद का दृष्टि में कोई अर्थ नहीं है।

प्र.५. वेदों की कल्पना मात्र से एक अति विशालकाय ग्रन्थ का रूप उभरने लगता है। क्यों?

उ. वेदों में प्राय: बीस हजार पांच सौ मंत्र हैं। वे योग वशिष्ठ व महाभारत से भी छोटे ग्रंथ हैं। अत: वेदों के अतिविशाल होने की अवधारणा मिथ्या है।

प्र.६. क्या वास्तव में आज वेदों में गमन का रास्ता कठिन रह गया है?

उ. वेदों का रास्ता प्रचलित धर्मों की तुलना में अति सरल है। मानव अन्तर-प्रभु तथा प्रकृति के अन्तर में विकसित परमात्मिक शक्तियों को जगाने व अनुभव करने का वैदिक मार्ग सरल है। वेद में धर्मों वाली जटिलता अधिक नहीं है। यदि उपयुक्त प्रशिक्षक प्राप्त हो तो वेद मार्ग को समझना सुगम है।

प्र.७. वेद में प्रवेश आरण्यक में प्रवेश है।

उ. वेद से आरण्यक का क्या प्रयोजन? आरण्यक एक प्रकार से वेद की बौद्धिक व्याख्याएं हैं जो विवादग्रस्त ही हैं। वेद को आरण्यक से ही समझा जाना संभव नहीं है। आरण्यक बहुत बाद के ग्रंथ हैं। कुछ सहायता अवश्य मिलती है।

प्र.८. क्या केवल वेदों का ज्ञान मानव को दिव्य बना सकता है?

उ. बिल्कुल सही है। वेदों का ज्ञान निर्मूल व निष्पक्ष रूप से प्राप्त हो सके और उसका सतत् अभ्यास व प्रयोग हो सके तो वेद का पूरा मन्तव्य ही मानव को दिव्य बनाने का है।

प्र.९. वेदों में आध्यात्मिकता का पुट किस हद तक है?

उ. वेद की आध्यात्मिकता और व्यावहारिकता आपस में इतनी परस्पर निर्भर हैं कि एक को दूसरे से अलग किया ही नहीं जा सकता। वेद की आध्यात्मिकता है पृथ्वी का विकास और पृथ्वी पर आदर्श जीवन। [illegible] पद की व्यावहारिकता का ध्येय है [illegible] मृत्यु पर विजय तथा जब तक यह विजय न हो अन्य लोकायामों में निवास और आत्म विकास। वेद की आध्यात्मिकता ही वस्तुत: आध्यात्मिकता है जहां लौकिक [illegible] जीवन व व्यावहारिक जीवन से आध्यात्मिकता का विरोध है ही नहीं।

प्रश्नावली (ख)

प्र.१. वेदों में प्राचीन "सभ्यता का दर्शन" किस प्रकार किया जाए?

उ. वेदों को ठीक अनुवाद व समुचित व्याख्या के साथ पढ़ने से उसमें प्राचीन, अति प्राचीन व पुरातन सभ्यता-संस्कृति का उत्तम दिग्दर्शन होता है। इसके लिए अध्ययन-पुनर्अध्ययन व मनन अपरिहार्य है।

प्र.२. "वेदों की संस्कृति का स्वरूप" पर प्रकाश डालें?

उ. वेद की संस्कृति है कि पृथ्वी, ब्रह्माण्ड, देश और काल-ये सब एक ही तत्व के भिन्न स्तरीय व भिन्न चेतनाकार स्वरूप हैं। मानव, चेतना व ब्रह्माण्ड पदार्थ के सम्मिश्रण से बना है। मानव मानव के सुसंगत सम्बन्ध, मानव व पर्यावरण के सांमजस्यपूर्ण सम्बन्ध तथा प्रत्येक तत्व, पदार्थ व प्राणी का सतत् और अविरल परिवर्धन व रूपान्तर होते होते पूर्ण प्रकाशपूर्णता की स्थिति को प्राप्त कर पाना ही वैदिक संस्कृति का आत्मरूप है।

प्र.३. वेदों में मानव विज्ञान किस रूप में विद्यमान है?

उ. वेद का मानव प्रकृति के माध्यम से उत्पन्न परमात्मा की प्रतिच्छाया है परन्तु अभी अल्प, लघु, सीमित व अपूर्ण छाया है। उसे महत्, दीर्घ, असीम और परिपूर्ण बनना है। इसी लक्ष्य के आधार पर मानव के शरीर, प्राण, मन व आन्तरात्मिक तत्वों पर वेद का मानव विज्ञान स्वयं की अभिव्यक्ति करता है।

प्र.४. वेदों में वर्णित आधारभूत मनोवैज्ञानिक तत्व क्या है?

उ. वेद में सतत कर्म और अस्खलित कर्मठता के साथ सैंकड़ों वर्ष जीने की संकल्पवादिता है। समाज का अंग होकर समाज के हित विकास का सतत प्रयत्न वेद की मानसिकता का उच्चतम स्वरूप है। मन को अशिव व अशुभ संकल्प से शिव और शुभ संकल्पाघृत कर देना वेद के मनोविज्ञान का चरम लक्ष्य है। विश्वलीन चैतन्याग्नि का साक्षात्कार तथा उसके आश्रम से स्वयं का और समुदाय का विकास ही वेद का शुद्ध मनोवैज्ञानिक तत्व है।

प्र.५. वेदों में प्रयुक्त अलंकारों को समझने में मदद हेतु अपने विचारों से अवगत कराएं?

उ. वेदालंकार समझने के लिए निरूक्त, कोष, प्रतिशाख्य, व्याकरण के साथ महर्षि दयानन्द, श्री अरविन्द एवं सातवलेकर जी तथा अन्य व्याख्याकारों के ग्रन्थ पढ़ने से ही उपयुक्त होगा। मुझसे कोई विशेष प्रश्न पूछोगे तो उसका विशेष उत्तर मैं प्रस्तुत करूंगा। सर्वसाधारण और व्यापक प्रश्न का उत्तर देना बहुत दीर्घ हो जाएगा। प्रश्नावली के साथ असम्बद्ध हो जाएगा।

प्र.६. "वेद वाणी" स्वयं की वाणी हो जाए, इसके लिए क्या करना चाहिए।

उ. सतत् वेद पढ़ना चिन्तन, मनन करना, विश्व व्यापक अग्नि-शक्ति से अभीप्सा प्रकट करना, वैदिक साहित्य पढ़ना तथा वैदिक विद्वानों से वाद-संवाद करना, साथ ही सस्वर वेद मंत्रों का पाठ करते रहना चाहिए। इस से धीरे-धीरे वेद वाणी अन्तर्मन में उतरती जाएगी तथा अपने स्वकीय गुरूत्वाकर्षण से आपकी वाणी में भी वेद-परिमल विकचने लगेगा। संयत, संतुलित एवं प्रेमित हृदय से अभ्यास करना चाहिए, मात्र बौद्धिकता से वेद में प्रवेश कुपंथ पर भी डाल सकता है।

प्र.७. वेदों में वर्णित शुभताओं से विस्तार में परिचय कराएं?

उ. वेद में तो शुभताएं व शुभताएं ही वर्णित हैं। अपौरूषेय वाक् में अशुभताएं कहां से आएंगी। परन्तु वेद के कुछ स्थलों में अशुभता की झलक सी दिखलाई पड़ती है सो उसके कुछ विशिष्ट कारण हैं। एक तो देश, काल, पात्र व परिस्थिति के कारण आचार-विचार व परम्पराएं बदल जाती हैं। अत: सारा का सारा वेद ज्यों का त्यों आज के काल में नहीं लिया जा सकता । आधुनिक विज्ञान की अत्यन्त चमत्कारी खोजों व आविष्कारों को भी तुच्छ या अल्प मानना अज्ञान का चिन्ह होगा। दूसरे वेद में अनेक स्थल अतीव प्रतीकात्मक एवं अलंकारिक हैं। वहां शाब्दिक अर्थ के स्थान पर गहन-गूढ़ भावनात्मक अर्थों को ग्रहण करना होगा। ऐसा होने पर वेद में शिव ही शिव है तथा शिव ही शुभ है।

प्र.८. वेदों के ऋषियों के चिंतन में प्रौढ़ता कहां पर सर्वाधिक दृष्टिगोचर होती है?

उ. वेद अत्यन्त गहन और तीक्ष्ण मस्तिष्क तथा प्रेमपूर्ण व अहंशून्य हृदय में ही उतरते हैं अत: किसी भी ऋषि के किसी भी वचन में प्रौढ़ता ही प्रौढ़ता मिलेगी। ऋषि तो मात्र ग्राह्यकर्ता है। भाव-भावनाएं तो उच्चतर आयामों से अवतरित हुई हैं। फिर भी वेद के जो गहन-उच्च आध्यात्मिक स्थल हैं वे अत्यन्त प्रौढ़ एवं अतीव उच्च ज्ञान व प्रज्ञा के शैल शिखर हैं। उदाहरणार्थ यजुर्वेद का चालीसवां सूक्त जोकि इशोपनिषद् नाम से प्रसिद्ध है। (शेष पृष्ठ ३४ पर)

राम आस्था ही नहीं इतिहास के तथ्य भी हैं

–डॉ. धर्मवीर

कभी–कभी घटना या दुर्घटना किसी तथ्य को उजागर करने का कारण भी बन जाती हैं। पिछले दिनों जब केन्द्र सरकार ने रामसेतु के सम्बन्ध में सर्वोच्च न्यायालय में अपना शपथ पत्र प्रस्तुत किया तो सरकार और विपक्ष दोनों की असलियत सामने आ गई। भारतीय अस्मिता इतिहास परम्परा क्रो नष्ट करने, लाञ्छित करने की ईसाई यूरोपीय मानसिकता की समर्थक सरकार की सोच जनता के सामने आ गई और दूसरी ओर जो राम का झण्डा उठा कर सत्ता के शिखर पर चढ़ना चाहते हैं उनकी दयनीय स्थिति से सबको परिचित होने का मौका मिल गया। इनके भगवान बने राम औंधे मुँह गिर गए जब ये दोनों हाथ खड़े करके चिल्लाने लगे राम इतिहास या विज्ञान की कसौटी के विषय नहीं हैं वे तो आस्था के विषय हैं। आस्था को विज्ञान से प्रमाणित नहीं किया जा सकता, वह तो केवल विश्वास का विषय हैं, उसे चैलेंज नहीं किया जा सकता।

सोचने की बात है कि यदि राम ऐसी आस्था के विषय हैं जिसे सत्य सिद्ध नहीं किया जा सकता, तो यह उस राम के लिए सोच हो सकता है केवल भगवान बना पत्थर की मूर्तियों तक सिमटा बैठा है जिसकी सेना में बन्दर और रीछ हैं। यह ठीक है उस आस्था को सत्य साबित नहीं किया जा सकता जो चमत्कारों पर टिकी हो और असम्भव गप्पों से भरी पड़ी हो। जिस आस्था में हनुमान को पूंछ लगाकर और बन्दर को लंगोट पहनाकर पूजा जाता हो भला उस आस्था को कौन वैज्ञानिक सिद्ध कर सकता है? ऐसी आस्था तो निश्चय ही अवैज्ञानिक होगी। परन्तु जो लोग ये कहते हैं कि राम का कोई अस्तित्व ही नहीं है। राम नाम का कभी कोई व्यक्ति हुआ ही नहीं है, वे भी अवैज्ञानिक हैं और दुराग्रह से ग्रस्त हैं तथा जो राम को केवल आस्था का विषय मानकर इतिहास से भागते हैं वे भी अज्ञान से ग्रस्त हैं।

यदि राम केवल आस्था का विषय हैं तो इस देश के लोगों की आस्था रोज बदलती रहती है। जिसकी आज राम पर आस्था है क्या कल उसकी आस्था ईसा पर नहीं होती? तो क्या आस्था के बदल जाने से सत्य और तथ्य, बदल जाते हैं? किसी की आस्था राम से हटकर बुद्ध या महावीर में हो जाएगी तो क्या राम का अस्तित्व उसके लिए समाप्त हो जाएगा? पाकिस्तान में मुसलमानों की आस्था मुहम्मद और खुदा में हो गई है तो क्या वहां के इतिहास से पाणिनि का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा? क्या तक्षशिला के अस्तित्व के लिए आस्था की अनिवार्यता लागू होगी? आपकी आस्था बदल सकती है, परन्तु इतिहास कभी नहीं बदलते। हमारी इस्लाम में आस्था नहीं है, तो क्या अकबर औरंगजेब का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा? इसलिए यह कहना कि राम इतिहास के तथ्य नहीं अपितु भावना और आस्था के विषय हैं तो यह मूर्खता से भरा हुआ कथन है। यह कथन अपने इतिहास की अज्ञानता का द्योतक है तथा सत्य की खोज से इन्कार करने की प्रवृति का परिचायक है।

आस्था चमत्कारों पर पाखण्डों पर टिकी हो तो उसे सत्य साबित नहीं किया जा सकता, परन्तु तथ्यों को विरोधी भी नहीं झुठला सकता। विचारने की बात है राम आस्था के विषय हैं, इतिहास के नहीं, तो क्या अयोध्या का अस्तित्व आस्था पर टिका है, सरयू नदी क्या धरती पर नहीं आस्था पर बह रही है? लंका का अस्तित्व क्या आस्था में है, धरती पर नहीं है? लाहौर और लखनऊ आपकी काल्पनिक आस्था में हैं? अत: यह कहना कि राम इतिहास के नहीं आस्था के विषय हैं, अज्ञानता और कायरता से भरा हुआ कथन है। क्या कृष्ण आस्था है? यदि कृष्ण भी आस्था है तो राम के रहते कृष्ण की दूसरी आस्था कहाँ से आ गई? फिर द्वारका भी आस्था और मथुरा भी आस्था का विषय बनकर रह जाएंगे। इनकी सत्ता तो केवल आस्था के कारण स्वीकार नहीं की जा सकती। हाँ जिनका इतिहास नहीं, जो कपोल कल्पना पर खड़े हैं वे इस तर्क का सहारा लें तो समझ में आता, परन्तु इतिहास के जीवित रहते राम को कल्पना और आस्था का विषय बताया जाए तो आश्चर्य की बात है। जिसकी आस्था नहीं है वह राम को विज्ञान और इतिहास के तथ्यों से परे कहे, तो कौन आश्चर्य की बात है?

हमें अपना इतिहास जानने में उसकी खोज करने में कोई रूचि नहीं है। हम अंग्रेजों के लिखे इतिहास को ही अपना वास्तविक इतिहास समझते हैं। जिसकी अपनी मान्यतायें, अपनी धारणायें और अपनी कसौटियाँ हैं। उनका सारा इतिहास ईसा के खूंटे से बंधा हुआ है, उसी के चारों ओर घूमता है। उनको यदि आप आधार मानोगे तो उनके निर्णय को भी स्वीकार करना ही पड़ेगा, नहीं

तो अपनी खोज को प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करना होगा। अपने तथ्य रखिये, विद्वानों को स्वीकार करना होगा। राम के बारे में ऐसे तथ्य हैं जिन्हें हम रख सकते हैं और उसकी ऐतिहासिकता प्रमाणित कर सकते हैं। यह ठीक है इतिहास के पुराने खण्ड को यथावत् प्रस्तुत करना कठिन हो सकता है परन्तु हम रास्ते पर चलेंगे तो हमें प्रमाण भी मिलेंगे। आज भी इतिहास खोजने के जो उपाय हैं उनका उपयोग किया जा सकता है। यूरोपीय इतिहासकारों का सबसे आपत्तिजनक प्रयास है वे हमारे समस्त साहित्य को अप्रामाणिक मानकर बात करते हैं जबकि अपनी घटिया पुस्तकों को प्रमाण मानते हैं। उनका काल निर्धारण भी भारतीय मानकों से मेल नहीं खाता, ऐसी परिस्थिति में अपने प्रमाण और मानदण्डों को फिर से स्थापित करने की आवश्यकता है। जो अज्ञानता का शिकार बने लोगों के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी परिस्थिति में यदि कोई हमें गलत साबित करता है तो हमारे पास आस्था की दुहाई देने के अतिरिक्त बचता ही क्या है?

संसार में कहीं भी जहां इतिहास की खोज होती है वहां लेख मुख्य आधार होते हैं। पहले लेख तो प्राचीन ग्रन्थ ही होंगे, सबसे प्राचीन ग्रन्थों के रूप में हमारे पास ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् और इनसे जुड़ा वैदिक साहित्य है जिसमें राम की चर्चा और कथानक है। राम व कृष्ण को बताने वाले मुख्य ग्रन्थ रामायण और महाभारत हमारे पास उपलब्ध हैं। आर्ष वाड्मय, दर्शन, वेदांग आदि के रूप में विपुल वैदिक-लौकिक साहित्य है, जो इतिहास की खोज का आधार है। इसके बाद खुदाई में जो लेख मिलते हैं, शिला लेख, ताम्रलेख, सिक्के, मोहरें, ईंटें हैं, मूर्तियाँ व मूर्ति लेख जिनसे इतिहास की घटनाओं की पुष्टि होती है। सामाजिक परम्परायें, गोत्र, वंश, जातियां जिनके इतिहास से पुराने सूत्रों को पकड़ा जा सकता है। समाज में प्रचलित कथायें, जन श्रुतियाँ, कहावतें, मुहावरे, भाषा के शब्द जिनसे इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। इन सब को एकदम अवैज्ञानिक कहकर नकारा नहीं जा सकता, ये सब तथ्यों को प्रकाशित करने के महत्वपूर्ण साधन हैं। इतिहास में जो सामग्री रामायण व महाभारत पर भारत में प्राप्त है वह बहुत पुरानी है। खुदाई की सामग्री ब्राह्मी लिपि में मिलती है जो लगभग तीन हजार साल पुरानी है- एटा जिले के कटिंघर स्थान से रामायण की ४३ मूर्तियाँ मिली हैं जिसमें १५-२० राम, जामवन्त आदि रामायण के पात्रों के नाम अंकित हैं। एटा से ही राम द्वारा बाली का वध करते हुए राम की मूर्ति मिली है, जिस पर ब्राह्मी लेख अंकित है। हिसार के नचार खेड़ा से ईंटें प्राप्त हैं जिस पर हनुमान के चित्र के साथ 'अशोक वाटिका हन्ता हनुमान' यह वाक्य अंकित हैं। नचार खेड़ा से त्रिशिरा की चार पाँच मूर्तियाँ मिली हैं एक मूर्ति पर राम को खर-दूषण के साथ वार्तालाप करते हुए दिखाया गया है तथा उसपर जो लिखा है उसमें राम ने चौदह राक्षसों को मारा ऐसा उल्लेख है- **चतुर्दश राक्षसान् जितवान् रामः।**

नचार खेड़ा से ही मिली मूर्ति पर अंकित है- **अथ पञ्चवटीं गच्छन् अन्तरा रघुनन्दनः आससाद महागृध्रम्...।** हरियाणा में जीन्द से प्राप्त मूर्ति पर बाली सुग्रीव का युद्ध अंकित है। यमुनानगर के पास कपालमोचन तीर्थ के पास संघाय नामक जगह से एक मूर्ति में शूर्पणखा के नाक काटने का चित्र अंकित है। मूर्ति पर मक राक्षस के साथ राम का युद्ध दिखाया गया है, यह मूर्ति भादरा के पास मिली है। इसी प्रकार प्रयाग से 42 मील दूर कौशाम्बी में यमुना के किनारे से खुदाई में इसी प्रकार की सामग्री प्राप्त हुई है। बरेली के ऐतिहासिक खेड़ा अहिच्छत्र से रावण द्वारा सीताहरण का दृश्य खुदाई में मिला है।

इसी प्रकार की सामग्री भारत से बाहर जावा, सुमात्रा आदि में प्राप्त होती है। जावा द्वीप में परमब्रह्म का मन्दिर है, इस मन्दिर के चारों ओर रामायण के चित्र अंकित हैं। वहां मूर्तियों की पूजा नहीं होती परन्तु बाली, राम, सीता, हनुमान की मूर्तियाँ मिलती हैं।

थाईलैण्ड में आयोध्या है, वहां का राजा राम कहलाता है, आज दसवां राम राजा है। मुस्लिम शासक अकबर ने सोने के सिक्के बनवाये थे जिनपर राम व सीता के चित्र अंकित हैं। भारत में धार स्टेट ने अपने सिक्कों पर हनुमान का चित्र चित्रित किया था। इसी प्रकार रतलाम राज्य ने भी राम-सीता के सिक्के चलाये थे। दिल्ली के सफदरजंग मदरसे में रामायण के दृश्य अंकित हैं। ऐतिहासिक राजा कनिष्क के सिक्कों पर हनुमान जिसे वोडा अर्थात् वायु देवता कहा जाता है, अंकित है। यह हनुमान का चित्र बिना पूंछ का है। दो सौ साल पहले साधुओं ने राम, लक्ष्मण, सीता के सिक्के चलाये थे। अपनी ऐतिहासिक घटनाओं पर सिक्के जारी करने की प्रथा पुरानी है। सिक्खों ने भी जपुजी में अंकित सन्त निरंकार कर्ता, अली, अस्मान, अबूबकर आदि से

अंकित सिक्के बनाये। व्यापारी लोगों ने प्राप्त बहुत सारी सामग्री विदेशों में बेच दी फिर भी देश के कण-कण में राम रचे बसे मिलते हैं। उसे कहां तक कोई इन्कार करेगा?

साहित्य में रामायण महाभारत इतिहास ग्रन्थ हैं, इसके अतिरिक्त हजारों ग्रन्थ इनको आधार बनाकर लिखे गए हैं। कालिदास ने रघुवंश की उन्नीस पीढ़ियों का अपने काव्य में वर्णन किया है। बौद्ध-जैन साहित्य में रामायण की विस्तार से चर्चा मिलती है। हिन्दी में रामचरित्र मानस जैसा ग्रन्थ राम के अस्तित्व का बखान कर रहा है। और तो और आज की सरकार के पूज्य महात्मा गांधी जीवन भर 'रघुपति राघव राजा राम' गाते रहे और 'हे राम' कहकर प्राण त्याग दिए, इसको इतिहास से कैसे निकाल दोगे?

रामायण के युद्ध काण्ड में राक्षस, वानर आदि सभी मनुष्य थे। वहां सुग्रीव पक्ष के लोगों को मनुष्य के रूप में युद्ध न करने का आदेश देकर केवल सात लोग पुरुष बनकर लड़ेंगे, शेष वानर रूप धर कर लड़ेंगे, ऐसा स्पष्ट लिखा है- युद्ध काण्ड सर्ग 37 श्लोक 33, 34, 35

न चैव मानुषं रूपं कार्यं हरिभिराहवे।
एषा भवतु नः संज्ञा युद्धेऽस्मिन् वानरे बले।।
वानरा एव नश्चिहं स्वजनेऽस्मिन् भविष्यति
वयं तु मानुषेणैव सप्त योत्स्यामहे परान्।।
अहमेव सह भ्रात्रा लक्ष्मणेन सहौजसा।
आत्मना पञ्चमश्चयं सखा मम विभीषणः।।

इससे अधिक क्या प्रमाण हो सकता है? हमें तथ्यों पर जाना है तो इतिहास विद्या का ही आश्रय लेना होगा। राम में चमत्कार बताकर या हनुमान को बन्दर बनाकर तो आपको अपनी आस्था का ही सहारा लेना होगा। क्यों कि कोई बन्दर न तो लंगोट बांध सकता है न वेद पढ़ सकता है, न किसी मनुष्य को बन्दर जैसी पूंछ हो सकती है, युद्ध में कृत्रिम पूंछ लगा लेना अलग बात है। सोचने की बात है बन्दर और रींछ मनुष्य की भाषा कैसे बोल सकते हैं? फिर हनुमान को बन्दर बताने वाले लोग बन्दर और रींछ की स्त्रियों को मनुष्य स्त्री के रूप में क्यों दिखाते हैं? रामायण को पढ़कर देखिये हनुमान को व्याकरण का पढ़ा लिखा, युद्ध वेद संगत बोलने वाला, वेदज्ञ विद्वान् बताया है, यही राम हनुमान का ऐतिहासिक रूप हो सकता है। रामायण की निम्न पंक्तियाँ हनुमान की शास्त्रीय योग्यता को दिखाने के लिए पर्याप्त हैं-

ना ऋग्वेदविनीतस्य ना यजुर्वेदधारिणः।
ना सामवेदविदूषः शक्यमेवं प्रभाषितुम्।।
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनने बहुधा श्रुतम्।
बहुव्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम्।।

इस प्रकार आवश्यकता अपने बौद्धिक साहस से इतिहास की कसौटी पर राम की वास्तविकता सिद्ध करने की है।

(पृष्ठ ३१ का शेष)

प्र.९. वेद, गीता की तरह दार्शनिक ग्रन्थ के रूप में लोकप्रिय क्यों नहीं हो सका?

उ. गीता लोकार्थ प्रस्तुत, एक व्यक्ति द्वारा कथित तथा दूसरे व्यक्ति के समक्ष प्रस्तुत, सुगम भावनाओं की पुस्तक है। विशेष परिस्थिति में विशेष मस्तिष्क वाले योद्धा से कहे हुए वचनों की पुस्तक है। अतः वेद के समान सम्पूर्ण ग्रंथ और उच्चतर प्रज्ञा की पुस्तक कैसे हो सकती है। वेद भारतीय ऋषियों का सर्वोच्च ज्ञान है वह साधारण कारोबारी मानव की समझ में तब तक नहीं आ सकता जब तक वह कठिन तपस्या, साधना व आत्म निवेदन, आत्म समर्पण एवं उपासना न करता हो। परन्तु ऐसे काल थे जबकि पशु-पक्षी तक वेद मंत्रों का उच्चारण करते थे। प्रत्येक गृह में शिशु और शिशु-जननियां वेदोच्चारण में रत रहती थीं। बाद में महाभारत जैसे भयानक युद्ध एवं परवर्ती संन्यास प्रभाव व श्रमणजनों के मुक्तिवादी, परलोकवादी तथा पृथ्वी विरोधी सिद्धान्तों के अति सघन प्रभाव से वेदाभ्यास कम होते होते समाप्त हो गए। इसके अनेक ऐतिहासिक कारण हैं, जो अध्ययन के योग्य हैं।

इसके अतिरिक्त सर्वलोकप्रिय होना कोई वैशिष्ट्य तो नहीं है। प्रायः अति लोकप्रिय चीजें वही होती हैं जो कि हल्की, सस्ती और वासना उत्तेजक होती हैं। जैसे फिल्म संगीत तथा फास्ट-फूड आदि। गीता में महानता है परन्तु अर्जुन को लक्ष्य करके सरलता से प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुति- **अरविन्द मोहन देवशीर्ष**
श्री अरविन्द चेतना समाज-६५६२/१, चमेलियन रोड, दिल्ली-6

पत्रकार श्री कैलाश गुप्ता के पिता श्री का निधन

नई दिल्ली। 'जनज्ञान' एवम् दयानन्द संस्थान के प्रमुख सहयोगी श्री कैलाश गुप्ता जी के पिता श्री राधेश्याम का लम्बी बीमारी के बाद ७६ वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके शोक संतप्त परिवार में तीन पुत्र एवम् दो पुत्रियां। चंदौसी में जन्मे श्री राधेश्याम का निधन अलीगढ़ में हुआ। शोकाकुल परिवार के प्रति 'जनज्ञान' परिवार की संवेदना।

समय की मांग-प्रखर हिन्दुत्व

–उदयन नम्बूदिरी

> 'समय आ गया है कि अब हिन्दू समाज को संगठित होकर दुनियाभर में हिन्दुत्व पर हो रहे प्रहारों का प्रतिकार करना होगा। केरल और प. बंगाल के कम्युनिस्टों से ही शुरूआत हो तो बेहतर।

आज हिन्दुत्व के सामने जो चुनौतियां दिख रही हैं वे कालखण्ड की चुनौतियों से कहीं अधिक गंभीर हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विरूद्ध मैं हमेशा सक्रिय रहा हूं और पूरा जीवन रहूंगा। मेरा पूरा ध्यान इस आसुरी राजनीतिक ताकत द्वारा हिन्दुत्व पर किए जाने वाले प्रहारों में प्रयुक्त हो रहे हथियारों पर केन्द्रित है। भारत के ये कम्युनिस्ट शत्रु कोई और नहीं, इसी धरती के दिशाभ्रमित लोग हैं। हालांकि उनकी भौतिक ताकत हिन्दू समाज की संगठित शक्ति के सामने बहुत क्षीण है, मगर संगठन की दृष्टि से वे मजबूत दिखते हैं। उनकी ताकत अंग्रेजी भाषा पर उनकी पकड़, स्कूल और कॉलेज की किताबों में भारत विरोधी दुष्प्रचार किसी तरह भरने, शिक्षकों और नौकरशाही में नियुक्तियों में भाई-भतीजावादी नीति में निहित है। मीडिया को अपनी तरफ झुका लेने का भी उन्हें लाभ मिलता है। मीडिया को प्रभावित करने की उनकी योग्यता उनके तुणीर का सबसे बड़ा हथियार है क्योंकि मीडिया के जरिए वे बडी संख्या में लोगों को अपने पीछे चलाते हैं और युवाओं के कोरे मस्तिष्कों को प्रभावित करके उन्हें अपना जीवन भर का निष्ठावान 'मिट्ठू' बना लेते हैं।

कम्युनिस्ट से मेरा अर्थ केवल बंगाल और केरल के राजनीतिक दलों से ही नहीं है, माकपा और वाम फ्रंट में उसके सहयोगी भले ही भारत के कुछ राज्यों तक सीमित हों मगर वे अपनी ताकत व्यापक साम्यवादी आन्दोलन से प्राप्त करते हैं, जिसका राजनीतिक समर्थन इन दलों से आता है। वे कभी 'प्रगतिवादी' के नाम से जाने जाते हैं तो कभी 'उदारवादी', राजनीतिक रूप से निष्ठावान 'मार्क्सवादी' के रूप में पहचाने जाते हैं। देश के कुछ बौद्धिक संस्थानों पर उनकी पकड़ व्यापक है, भले वे कुछ राज्यों में ही सत्ता में बैठे हों।

मैं मध्यकाल में हिन्दू प्रतिरोध के बारे में अपने आकलन के आधार पर कम्युनिस्टों के खतरे को अधिक गम्भीर मानता हूं। इन निम्नलिखित बिन्दुओं पर दृष्टि डालने के बाद मैं पाठकों से स्वतंत्र भारत में इससे ठीक उलट परिस्थिति पर गौर करने का आग्रह करता हूं-

१. मेरे साथी लेखक शायद यह कहें कि हिन्दू सभ्यता ने इस्लामी शासन में सबसे अधिक आघात सहे थे। यह कुछ हद तक सही है परन्तु यह याद रखना चाहिए कि लाखों लोगों की हत्याओं और बड़ी संख्या में लोगों को मतान्तरित करने के बावजूद भारत का हृदय वास्तविक अर्थों में हिन्दू ही रहा है। यह मतान्तरण के आंकड़ों से साफ झलकता है। इतिहासकार रिचर्ड ईवान्स के अनुसार इस्लामी शासन के केन्द्र स्थल, में मुस्लिम अल्पसंख्यक ही बने रहे हैं। यह तो केवल सीमांत क्षेत्रों जैसे, बंगाल, पंजाब, उत्तर पश्चिम और दक्षिण पश्चिम (आज का केरल) में ही उनकी संख्या हिन्दू समाज के लिए एक चुनौती बनी है।

२. उपरोक्त बिन्दू से हिन्दुओं द्वारा इस्लामी सुदृढ़ीकरण के सामाजिक प्रतिकार का सबूत मिलता है। यह ध्यान रखना होगा कि लाखों लोगों ने धर्म छोड़ने की बजाए, अपमान सहे, बलात्कार सहे, मौत सही और जजिया तक चुकाया। 'इंडियन मुस्लिम्सः हू आर दे?' में इतिहासकार के.एस. लाल एक उदाहरण देते हैं कि कैसे बर्द्धवान (बंगाल) के राजा ने इस्लामी शासक को राजस्व अपनी ओर से नहीं बल्कि कृष्णनगर के राजा की ओर से चुकाया क्योंकि कृष्णनगर के राजा अपना कर चुकाने में विलम्ब कर चुके थे और तत्कालीन कानूनों के अनुसार उन्हें और उनके पूरे राज्य को इस्लाम में जबरदस्ती मतांतरित होना पड़ता। कान्हादाड़े प्रबंध में १५वीं सदी के लेखक पद्मनाभ उल्लेख करते हैं कि कैसे गुजरात के लोगों ने पीढ़ियों तक खिलजियों का प्रतिकार किया था।

३. जौहार की कुछ घटनाओं से ही यह साफ हो जाता है कि हिन्दुओं ने सदा अपने अपमान के विरूद्ध संघर्ष किया है। संस्कृत, योग, कर्मकाण्ड और अनेक दूसरे हिन्दू जीवन पद्धति के प्रतीक यथावत रहे।

अब २००७ में ठीक उससे विपरीत परिस्थिति पर नजर डालें, जब भारत आजाद है और हिन्दू राजनीति, अर्थतंत्र और समाज जीवन के अन्य अनेक पहलुओं में एक प्रभावशाली स्थिति में हैं। आज हिन्दुओं को मुस्लिम और ईसाई बनाने के लिए किसी हिंसक ताकत को झोंकने की जरूरत नहीं है। भारत सरकार और राज्य में मौजूद उसके तंत्र आक्रामक मतान्तरण को पोषित कर रहे हैं। धोखा, दबाव, घूस और नशीली दवाओं तक का प्रयोग बड़े पैमाने पर मतान्तरण में किया जा रहा है। पूरे के पूरे जिलों और राज्यों तक के जनसंख्यिक स्वरूप बहुत तेजी से

बदल रहे हैं, जैसा कि पहले की १० सदियों में भी नहीं हुआ था। ये नए जमाने के इस्लामी आक्रमणकारी घोड़े की पीठ पर सवार होकर नहीं आ रहे हैं। बल्कि घुसपैठियों के रूप में आ रहे हैं, जिनका भारतीय राजनीतिक पार्टियां, विशेषकर पश्चिम बंगाल में माकपा और उसके सहयोगी दल तथा असम में कांग्रेस स्वागत करती हैं। २ करोड़ से भी ज्यादा विदेशी भारतीय तंत्र में कहीं गहरे समा चुके हैं और तेज गति से बढ़ते जा रहे हैं जो कि उनको सन् २०२० तक राजनीतिक सत्ता का दावेदार बना देगी। वामपंथियों के नियंत्रण वाला मीडिया, जो सेकुलरवाद की परिभाषाएं खुद से ही गढ़ता है, हर उस राजनीतिक व्यवस्था को ठुकराता है जो विदेशी मिशनरियों और आतंकवादियों की गतिविधियों पर सवाल खड़े करती हैं। जो विद्वान भारतीय इतिहास की कम्युनिस्ट व्याख्या पर उंगली उठाता है उस पर कीचड़ उछाली जाती है और यह आरोप लगाते हुए, कि उसने इतिहास का 'भगवाकरण' करने की कोशिश की है, सेवानिवृति के बाद उसकी पेंशन तक रोक दी जाती है। मगर अफसोस, इस अन्याय के विरूद्ध भी ज्यादातर हिन्दुओं का ध्यान नहीं जाता।

२. मध्यकालीन भारत में हिन्दू, आमतौर पर, धर्म के अपमान की बजाय मौत स्वीकारते थे। यही कारण है कि दिल्ली, राजपूताना, दोआब, अवध, गुजरात, हैदराबाद, मालवा आदि के ज्यादातर लोग, जो इस्लामी सत्ता केन्द्रों के निकटतम थे, निष्कलंक ही रहे। राजपूत महिलाएं किसी के द्वारा छुए जाने से पहले खुद को जला लेती थीं मगर, स्वतंत्र भारत में, अगर कोई अपने सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने के अपने अधिकार की बात करता है तो उसे अपमानित करने योग्य माना जाता है। आज वेलेन्टाइन डे उत्सव बन गया है। विवाह पूर्व प्रेम सम्बंधों और अश्लीलता के सार्वजनिक प्रदर्शन का विरोध करने पर किसी भारतीय को 'हिन्दू जिहादी' कहा जाता है। कश्मीरी हिन्दुओं की घाटी में वापसी के उनके अधिकार की बात करना 'कट्टरवाद' है। आतंकवादियों को पकड़ने और उन पर मुकदमा चलाने के लिए एक प्रभावी कानून की मांग करने को 'साम्प्रदायिक' कहा जाता है। आखिर यह राष्ट्र विरोधी शब्दावली कहां से आई? निश्चित रूप से कम्युनिस्टों के कोष से!

3. मध्यकालीन भारत में मुगल शासन के चरम के दौरान भी संस्कृत के कुछ विद्यालय चलाए जाते थे। हिन्दुओं ने अपनी कला, ग्रन्थों, परम्पराओं, संगीत, नृत्य आदि का संरक्षण किया था। आज संस्कृत को 'मृत भाषा' माना जाता है। हिन्दू माता-पिता मानने लगे हैं कि अपने बच्चों को रामायण और महाभारत पढ़ने के लिए प्रेरित करना 'पुरातनपंथी' होना है और इससे बढ़कर तो हैरी पॉटर की किताब के लिए लाइन में लगना अच्छा है।

आज हमें पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि उन महान लोगों को याद करना चाहिए जिन्होंने हिन्दुओं को एकजुट करने के लिए अपना खून बहाया था। आज के हिन्दू, पता नहीं क्यों, इस्लामी आतंकवादी संगठनों से जुड़े गुटों को मुख्यधारा में लाने और यहां तक कि केन्द्र में मंत्री तक बनाने की होड़ करते दिखाई दे रहे हैं। यह है वह सेकुलरवाद जिसका सपना भारत की कम्युनिस्ट पार्टियों ने देखा था। १९७६ में, जब भारत का आधा राजनीतिक वर्ग जेल में था, इमरजेंसी का काला दौर था, उन्होंने संविधान की भूमिका में भारत को 'सेकुलर' राष्ट्र बना दिया था। उन्होंने भारत को 'समाजवादी व्यवस्था' के अन्तर्गत ला खड़ा किया था। फिर भी पश्चिम बंगाल के कम्युनिस्ट मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य पूरी निर्लज्जता से कहते हैं कि उन्होंने पूंजीवाद को गले लगा लिया है। समाजवाद उनके राज्य में कारगर नहीं है।

'साम्यवाद मानवीय सभ्यता के लिए सबसे बड़ा कलंक है। यह ऐसी शैतानी विचारधारा है जो पूर्वी यूरोप में पैदा हुई, जो कि दुनिया के सबसे हिंसक समाजों में से एक था।

विश्व की प्राचीनतम सभ्यता पर कम्युनिस्ट आक्रामकों द्वारा किए जा रहे प्रहारों के बारे में कितना कुछ कहा -सुना जा सकता है। साम्यबाद मानवीय सभ्यता के लिए सबसे बड़ा कलंक है। यह ऐसी शैतानी विचारधारा है जो पूर्वी यूरोप में पैदा हुई, जो कि दुनिया के सबसे हिंसक समाजों में से एक था और जो इतने उत्पीड़न और मौतों का जिम्मेदार रहा है। विडम्बना है कि एक व्यक्ति खुद को कम्युनिस्ट कहने में गर्व करता है मगर अपने सनातन मूल्यों के प्रदर्शन पर संकोच करता है। आज कितने हिन्दुओं को इस बात की पीड़ा है कि दुनिया के एकमात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल में आपराधिक माओवादी प्रभावी हो गए हैं और वही नेपाल की हिन्दू पहचान को खत्म करने में सहयोगी हो रहे हैं? वे खुशी-खुशी अपना देश आई.एस.आई. के भेजे मुल्लाओं और ईसाई मिशनरियों के हवाले कर रहे हैं। भारत के हिन्दुओं को इसकी चिंता करनी ही पड़ेगी। समय आ गया है कि अब हिन्दू समाज को संगठित होकर दुनियाभर में हिन्दुत्व पर हो रहे प्रहारों का प्रतिकार करना होगा। केरल और प. बंगाल के कम्युनिस्टों से ही शुरूआत हो तो बेहतर है। ❑

हिमालय में बांधों का औचित्य

–रोशन लाल शर्मा

हिमालय के आंचल में बसी देवभूमि हिमाचल में विकास के नाम पर प्रकृति से जो खिलवाड़ किया जा रहा है, वह चौंकाने वाला है। विकास की दुहाई देकर बड़े-बड़े बांध बनाए जा रहे हैं, सीमेंट कारखाने लगाए जा रहे हैं, जहर उगलने वाले भीमाकार उद्योग लगा रहे हैं, पहाड़ों का सीना छलनी करके कंकरीट के जगल खड़े किए जा रहे हैं और प्राकृतिक संपदा का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। भविष्य में उसके कितने खतरनाक नतीजे होंगे, अभी हम उसकी कल्पना नहीं कर सकते हैं। हिमालय वह संवेदनशील क्षेत्र है जिसकी हिफाजत करना हम सबका दायित्व है। हिमालय की पारिस्थिकी से किया जा रहा खिलवाड़ विकास नहीं, बल्कि विनाश को न्योता है। स्वामी विवेकानंद ने इसी हिमालय के महत्त्व को लक्षित करते हुए एक जगह लिखा है, "हिमालय के उदात्त शिखरों पर संसार की सर्वोतम दृश्यावली के दर्शन होते हैं। यदि कोई वहां कुछ समय रहे, निश्चय ही उसे मानसिक शांति मिलेगी, वह पहले कितना भी बेचैन क्यों न रहा हो, सचमुच हिमालय हमारे जीवन का सुरक्षा कवच है। इसके शिखरों पर न केवल संसार की सर्वोतम दृश्यावली है बल्कि इसके गर्भ से निकलने वाली नदियां और इसकी संपदा हमें धन-धान्य करती है। हिमालय हमारे जीवन का आधार है, लेकिन हम इस की उदात्तता को भूलकर इसकी संपदा का बेजा इस्तेमाल कर रहे हैं।"

जीवनदायिनी नदियों को मां कहा जाता है। इन पर बड़े-बड़े बांध बनाकर हम उनके रास्ते मोड़ रहे हैं। उन्हें खत्म कर रहे हैं। सतलुज और व्यास के उदाहरण सामने हैं। कहां रह गई हैं ये पौराणिक नदियां। पंडोह से नीचे व्यास का रास्ता है, नदी को बांधकर उसका पानी सतलुज में डाल दिया गया है। फिर सतलुज का तो जैसे नामोनिशान मिटाया जा रहा है। पहले भाखडा, फिर एनजेपीसी, अब कोल डैम और आगे न जाने कौन-सी परियोजना। कहाँ रह गई है सतलुज, जिसे नदी कहा जाए। एक पौराणिक नदी विकास की बलि चढ़ गई और हम सब देखते रह गए। बहरहाल, सवाल नदियों पर विशाल बांध बनाने के औचित्य का है। बांध जैसी परियोजनाओं से विस्थापित होने वाले लाखों लोगों का कैसा पुनर्वास होता है, इसे जानने के लिए दूर न जाते हुए भाखड़ा, पौंग, चमेरा और रणजीत सागर बांधो के विस्थापितों का उदाहरण पर्याप्त होगा। इन बांधों के बनने से बेघर और बेजर हुए लाखों लोग आज दशकों बाद भी पुनर्वास के लिए भटक रहे हैं। उनका पुनर्वास राजनीति के पालने में झूल रहा है। सरकारें कोरे आश्वासन देकर और विस्थापितों से अन्याय के लिए पूर्ववर्ती सरकारों को दोषी ठहराकर अपना कर्तव्य पूरा समझ लेती हैं।

विस्थापित होने का दर्द क्या होता है, अपनी माटी से जुदा होने की पीड़ा कैसी होती है, इसे वही समझ सकते हैं जिन्होंने अपनी जमीन, मकान और रोजी-रोटी का जरिया बडी-बडी परियोजनाओं की भेंट चढ़ाया है, जो अपने रिश्तेदारों और सगे-सम्बंधियों से दूर जाकर बेगाने बनकर जीने को अभिशप्त हैं। वातानुकूलित कमरों में बैठकर निर्देश देने और ऊंची हांकने वाले नेता और नौकरशाह विस्थापन की पीड़ा नहीं समझ सकते। उन्हें तो फाइलों पर आदेश देने होते हैं। उनके आदेशों से कौन बरबाद होता है, उन्हें कोई परवाह नहीं। भारत जैसे आध्यात्मिक देश में आज हर चीज बाजारवाद और भौतिकवाद की भेंट चढ़ रही है। बांध सरीखी परियोजनाएं कैसे और किस तरह प्राचीन सभ्यता और संस्कृति को मिटा देती हैं, इसके जीते-जागते सुबूत हिमाचल में बांधों के रूप में मौजूद हैं। ये बांध प्राचीन नगरों, गांवों, ऐतिहासिक महत्त्व की धरोहरों और उपजाऊ भूमि को जिस तरह लील रहे हैं, वह बताने की जरूरत नहीं है। हिमाचल से थोडा बाहर निकल कर टिहरी बांध को लें तो सदियों से करोड़ों-करोड़ों लोगों की आस्था का आधार गंगा नदी विकास के नाम पर बांध दी गई है। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही तो है। क्या हमारी जरूरतें इतनी बढ़ गई हैं कि हमें अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहरों का भी सौदा करना पड़ रहा है। अगर गंगा पर टिहरी में बांध नही बनता तो क्या देश रसातल में चला जाता या कोई अनहोनी हो जाती। विकास का कोई विरोध नहीं करता, लेकिन विनाश करके जो तामझाम खड़ा किया जा रहा है उसका समर्थन भी तो नहीं किया जा सकता है। हर चीज के कुछ कायदे-कानून होते हैं, उन्हीं के भीतर रह कर काम किया जाना चाहिए। लेकिन हमारे राजनेताओं को शायद इसकी परवाह नहीं है। उनके लिए किसी प्रकार के कायदे कोई मायने नहीं रखते।

बहरहाल, प्रकृति के खिलाफ जाकर बड़े-बड़े बांध बनाना विनाश की राह तैयार करने जैसा है। तरक्की

के नाम पर हम अपनी संततियों को विनाश से भरा भविष्य देने का सामान तैयार कर रहे हैं। विकास की आड़ में चल रहे विनाश का जो तांडव हम रोज देखते हैं, वह यह बताने के लिए काफी है कि हमारा कल कैसा होगा, लेकिन आंखों पर तथाकथित विकास की पट्टी बांधे हमारे राजनेताओं, नीति-नियन्ताओं और नौकरशाहों को सिर्फ आज की चिन्ता है। उन पर 'कल किसने देखा है' वाली कहावत सटीक बैठती है। ये लोग शायद जन्म से मरण पर्यन्त ही जीवन मानते हैं, तभी 'खाओ, पियो और मौज करो' उनके जीवन का मूल मन्त्र बनता जा रहा है। ऐसी सोच पाश्चात्य चिन्तन का आधार है। भारतीय सोच तो सामाजिक सरोकारों पर टिकी हुई है। हम सिर्फ अपनी नहीं बल्कि अपनी संततियों को भी सोचते हैं। भारतीय दर्शन के अनुसार जीवात्मा बार-बार जन्म लेती है, इसलिए अगर हम आज बेहतर समाज बनाएंगे तो कल प्रकारान्तर से हम ही उसका सुख और आनन्द उठाएंगे। लेकिन आज हमारी सोच से यह दर्शन गायब होता जा रहा है। तभी बेहतर समाज और बेहतर पर्यावरण हमारे एजेंडे से दूर है। हमें मात्र आज की चिन्ता रह गई है। हमें इस सोच को बदलकर समाजिक सरोकारों को सबसे ऊपर रखना होगा, तभी हम अपने भविष्य को सुखकर बना पाएंगे।

जरूरतें पूरा करने के लिए हमें बड़े बांधो की जगह छोटे-छोटे बांध बनाने चाहिएं, नदियों के बहाव पर आधारित बिजली प्रोजेक्ट लगाने चाहिए और ऊर्जा के पारम्परिक तरीकों को विकसित करना चाहिए। हजारों-लाखों लोगों को विस्थापित और प्रकृति का विनाश करके किया जाने वाला विकास हमें नहीं चाहिए। विकास चाहिए, लेकिन प्रकृति से तालमेल बनाकर। अगर हम आज नहीं चेते तो कल हमें अभिशाप देगा। रसूल हमजातोव के शब्दों में कहें तो, 'अगर तुम अतीत पर पिस्तौल से गोली चलाओगे तो भविष्य तुम पर तोप से गोले बरसाएगा।'

श्री मद्दयानंद वेदार्थ महाविद्यालय गौतम नगर, नई दिल्ली

नई दिल्ली। श्री मद्दयानंद वेदार्थ महाविद्यालय, गौतम नगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव एवं ऋग्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ २ दिसम्बर से प्रारम्भ हो गया है, जो १६ दिसम्बर तक चलेगा। यज्ञ के ब्रह्मा परोपकारिणी सभा एवं दयानंद संस्थान के मंत्री डॉ. धर्मवीर हैं। उत्सव क्रम में ११ दिसम्बर को आर्य महिला सम्मेलन आयोजित होगा, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती शकुन्तला आर्य (पूर्व महापौर करेंगी) १६ दिसम्बर को समापन समारोह के अध्यक्ष श्री बृजमोहन मुंजाल होंगे।

वेदार्थ महाविद्यालय के प्रधान चौ. मामचंद एवं आचार्य स्वामी प्रणवानंद ने उत्सव को सफल बनाने हेतु आर्यजनों से आग्रह किया है।

आर्यसमाज पंचदीप, सम्राट एन्कलेव

दिल्ली। आर्यसमाज पंचदीप, सम्राट एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली का छटा वार्षिकोत्सव २३ नवम्बर से २५ नवम्बर तक आयोजित हुआ। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ की पूर्णाहुति २५ नवम्बर को हुई।

आर्यसमाज, नोएडा

नोएडा (उ.प्र.)। आर्यसमाज व आर्य गुरुकुल नोएडा का वार्षिकोत्सव २६ नवम्बर से २ दिसम्बर तक आयोजित हुआ। इस अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन भी हुआ।

आर्यसमाज, न्यू मुल्तान नगर, नई दिल्ली

नई दिल्ली। आर्यसमाज न्यू मुल्तान नगर, नई दिल्ली में २६ नवम्बर को आर्य महिला सम्मेलन आयोजित हुआ। जिसमें स्वामी दयानन्द की विचारधारा और परिवारों के टूटने के कारण पर वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए।

धर्मपाल आर्य, केन्द्रीय सभा, दिल्ली के पुनः प्रधान

नई दिल्ली। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का साधारण सभा अधिवेशन आर्यसमाज मन्दिर, पटेल नगर, नई दिल्ली के समागम् में १८ नवम्बर को आयोजित हुआ। इस अवसर पर सभा का निर्वाचन भी सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री धर्मपाल आर्य सर्वसम्मति से पुनः प्रधान चुने गए। निर्वाचन अधिकारी श्री राज सिंह भल्ला थे।

अधिवेशन में पारित एक प्रस्ताव में रामसेतु जैसी ऐतिहासिक धरोहरों को अक्षुण रखने का सरकार से अनुरोध किया गया। एक अन्य प्रस्ताव में स्कूल छात्रों को यौन शिक्षा देने के प्रयास पर कड़ा विरोध व्यक्त किया गया।

छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा

दुर्ग। छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में त्रिदिवसीय वैदिक सम्मेलन ७ से ९ दिसम्बंर तक घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय, आर्य नगर, दुर्ग में सम्पन्न हुआ।

क्या राम-रावण युद्ध आण्विक युद्ध था

–प्रमोद भार्गव

विभिन्न रामायणों, रामायण विषयक सन्दर्भ-ग्रंथों से यह साफ हो जाता है कि रामायण काल में वैज्ञानिक आविष्कार चरमोत्कर्ष पर था। वायुयान, प्रक्षेपास्त्र और ब्रह्मास्त्र, जिन्हें हम वर्तमान सन्दर्भ में परमाणु बम कह सकते हैं, का आविष्कार हो चुका था। राम और रावण दोनों के सेनानायकों ने इन भयंकर आयुधों का खुलकर प्रयोग भी किया।

लंकाधीश रावण ने नाना प्रकार की विधाओं के पल्लवन के लिए यथोचित धन व सुविधाएं भी उपलब्ध करायी थीं। रावण के पास लड़ाकू वायुयानों और समुद्री जलपोतों के बेड़े थे। प्रक्षेपास्त्र और ब्रह्मास्त्रों का अकूट भंडार व उनके निर्माण में लगी अनेक वेधशालाएं थीं। दूरसंचार के यंत्र भी लंका में उपलब्ध थे, किन्तु राम-रावण युद्ध केवल राम और रावण के बीच न होकर एक विश्वयुद्ध था। जिसमें उस वक्त की समस्त विश्व-शक्तियों ने अपने-अपने मित्र देश के लिए लड़ाई लड़ी परिणामस्वरूप ब्रह्मास्त्रों के विकट प्रयोग से लगभग समस्त वैज्ञानिक अनुसंधान शालाएं और उनके अध्येता काल-कवलित हो गए। यही कारण है कि हम कालांतर में हुए महाभारत-युद्ध में भी वैज्ञानिक आविष्कारों को रामायण-काल की तुलना में उत्कृष्ट व सफल नहीं देख पाते हैं।

मदनमोहन शर्मा 'शाही' के उपन्यास 'लंकेश्वर' को पढ़ने से एकाएक विश्वास नहीं होता कि राम-रावण युद्ध के दौरान विज्ञान चरमोत्कर्ष पर था लेकिन लेखक ने पुराणकालीन ग्रन्थों और विभिन्न रामायणों व अनेक विद्वानों की खोजों का जो फुटनोटों में ब्योरा दिया है: वह बताता है कि उस युग में विज्ञान चरमोत्कर्ष पर था। राम-रावण युद्ध दो संस्कृतियों के अस्तित्व के लिए लड़ा गया भीषण आण्विक युद्ध था। जिसमें विश्व की समस्त शक्तियों ने भागीदारी की थी। सभी रामायण निर्विवाद रूप से स्वीकारते हैं कि रावण के पास पुष्पक विमान था और रावण सीता को इसी विमान में बिठाकर अपहरण कर ले गया था। 'लंकेश्वर' में वायुयानों का उस युग में उपलब्ध होने का विस्तृत ब्योरा है- गंधमादन पर्वत, जहां गृध्रों की नगरी थी, गृध्रराज भूमि, समुद्री व आकाशीय मार्ग पर भी अधिकार रखते थे। यह नगरी सम्राट सम्पाती के पुत्र सुपार्श्व की थी। सम्पाती राजा दशरथ के सखा थे। सम्पाती वैज्ञानिक था, उसने छोटे-बड़े वायुयानों और अंतरिक्ष यात्री की वेषभूषा का निर्माण किया था। सुपार्श्व ने ही हनुमान को लघुयान में बिठाकर समुद्रलंघन कराकर त्रिकुट पर्वत पर विमान उतारा था। त्रिकुट पर्वत लंका की सीमा परिधि में था। सुपार्श्व के पास आग्नेयास्त्र भी थे, जिससे प्रहार कर हनुमान ने नागमाता सुरसा को परास्त किया था। इस अस्त्र के प्रयोग से समुद्र में आग लगी और नाग जाति जलकर नष्ट हो गयी। त्रिकुट पर्वत के पहले मैनाक पर्वत था, जिसमें रत्नों की खानें थीं, रावण इन रत्नों का विदेश-व्यापार करता था। लंका की सम्पन्नता का करण भी यही खानें थीं। सुपार्श्व ने राम-रावण युद्ध में राम का साथ दिया।

लंका में ऐसे वायुमान भी थे, जो आकाश में खड़े हो जाते थे और लोप हो जाते थे। इनमें चालक नहीं होता था, ये स्वचालित थे। उस समय आठ प्रकार के विमान थे जो सौर ऊर्जा से संचालित होते थे। वेदों में विमान निर्माण की विधि बतायी गयी है। भारद्वाज ऋषि द्वारा लिखित 'आशु बोधिनी' में भी वायुयान निर्माण व उनके संचालन की विधियों का उल्लेख है, रावण के पुत्र मेघनाथ की निकुम्भिला वेधशाला थी, जिसमें प्रतिदिन एक दिव्य रथ अर्थात एक लड़ाकू विमान का निर्माण होता था। मेघनाथ के पास ऐसे विचित्र विमान भी थे जो आंख से ओझल हो जाते थे और फिर धुंआ छोड़ते थे। जिससे दिन में भी अंधकार हो जाता था। यह धुंआ विषाक्त गैस अथवा अश्रु गैस होती थी। ये विमान नीचे आकर बमबारी भी करते थे।

मेघनाथ की वेधशाला में 'शस्त्रयुक्त स्पंदन' (रॉकेट) का भी निर्माण होता था, मेघनाथ ने युद्ध में जब इस स्पंदन को छोड़ा तो यह अंतरिक्ष की ओर बहुत तेज गति से बढ़ा, इंद्र और वरुण स्पंदन-शक्ति से परिचित थे, उन्होंने मतालि को संकेत कर दूसरा शक्तिशाली स्यंदन छुड़ाया और मेघनाथ के स्पंदन को आकाश में ही नष्ट कर दिया और उसके अवशेष को समुन्द्र में गिराया, लंका में यानों की व्यवस्था प्रहस्त के सुपुर्द थी। यानों में ईंधन की व्यवस्था प्रहस्त ही देखता था, लंका में सूरजमुखी पौधे के फूलों से तेल (पेट्रोल) निकाला जाता था, (अमेरिका में वर्तमान में जोजाबा पौधे से पेट्रोल निकाला जाता है) अब भारत में भी रतनजोत के पौधे से तेल

बनाये जाने की प्रक्रिया में तेजी आयी है। इन लड़ाकू विमानों को नष्ट करने के लिए रावण के पास भस्मलोचन जैसा वैज्ञानिक था जिसने एक विशाल 'दर्पण यंत्र' का निर्माण किया था। जिससे प्रकाशपुंज वायुयान पर छोड़ने से यान आकाश मे ही नष्ट हो जाते थे।

लंका से निष्कासित किए जाते वक्त विभीषण भी अपने साथ कुछ दर्पण यंत्र ले आया था, इन्हीं 'दर्पण यंत्रों' में सुधार कर अग्निवेश ने इन यंत्रों को चौखटों पर कसा और इन यंत्रों से लंका के यानों की ओर प्रकाशपुंज फेंका जिससे लंका की यान-शक्ति नष्ट होती चली गयी। बाद में रावण ने अग्निवेश की इस शक्ति से निपटने के लिए सद्धासुर वैज्ञानिक को नियुक्त किया।

श्री शाही का कहना है, रामायणकाल में इन अद्‌भुत शक्तियों को आलौकिक व ऐंद्रिय कहकर इनका महत्व ही समाप्त करने की साजिश की गयी। जबकि ये शक्तियां ज्ञान का वैज्ञानिक बल थीं, जिसमें मेघनाथ ब्रह्म विद्या का विशारद था। उसका पांडित्य रावण से भी कहीं बढ़कर था, जिसे वाल्मीकि ने 'मायावी' शब्द की टोपी पहनाकर तत्त्वदर्शन के मूल तत्त्व को ही नष्ट कर दिया।

विस्फोटक व विध्वंसक अस्त्रों का तो इस युद्ध में खुलकर प्रयोग हुआ. जिससें ब्रह्मास्त्र सबसे खतरनाक था. इंद्र ने शंकर से राम के लिए दिव्यास्त्र और पशुपतास्त्र मांगे थे. इन अस्त्रों को देते हुए शंकर ने अगस्त्य को चेतावनी देते हुए कहा, " अगस्ताय, तुम ब्रह्मास्त्र के ज्ञाता हो और रावण भी. कहीं अणुयुद्ध हुआ तो वर्षों तक प्रदूषण रहेगा. जहां भी विस्फोट होगा, वह स्थान वर्षों तक निवास के लायक नहीं रहेगा. इसलिए पहले मानव-कल्याण के लिए युद्ध को टालना ?" लेकिन अपने-अपने अहं के कारण युद्ध टला नहीं. ब्रह्मास्त्र के प्रस्तुत परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि ब्रह्मास्त्र परमाणु बम ही था।

राम द्वारा सेना के लंका-प्रयाण के समय द्रुमकुल्य देश के सम्राट ने रावण से मैत्री होने के कारण राम को अपने देश में मार्ग नहीं दिया तो राम नै अगस्त्य के अमोघ अस्त्र ब्रह्मास्त्र को छोड़ दिया जिससे पूरा द्रुमकुल्य (मरूकांतार) देश नष्ट हो गया यह अमोघ अस्त्र हाइड्रोजन बम अथवा एटम बम जैसा ही था। मेघनाथ की वेधशाला में शीशे (लेड) की भट्ठियां थीं, जिनमें कोयला और विद्युत धारा प्रवाहित की जाती थी, इन्हीं भट्ठियों में परमाणु अस्त्र बनते थे और नाभिकीय विखंडन की प्रक्रिया की जाती थी।

युद्ध के दौरान राम सेना पर सद्धासुर ने ऐसा विकट अस्त्र छोड़ा जो संभवतः ब्रह्मास्त्र से भी ज्यादा शक्तिशाली था। जिसने सुवेल पर्वत की चोटी को सागर में गिराते हुए सीधे दक्षिण भारत के गिरी को गिरा दिया। सद्धासुर का अन्त करने के लिए अगस्त्य ने सद्धासुर के ऊपर ब्रह्मास्त्र छुड़वाया जिससे सद्धासुर और अनेक सैनिक तो मारे ही गए, लंका के शिव मंदिर भी विस्फोट के साथ ढहकर समुन्द्र में गिर गए। इस सिलसिले में डॉ. चांसरकर ने ताजा जानकारी देते हुए अपने लेख में लिखा है, पांडुनीडि का भाग या इससे भी अधिक दक्षिण भारत का भाग इस परमाणु शक्ति के प्रयोग से सागर में समा गया था और राम द्वारा 'कुरुणागल' के स्वर्ण और रत्नों से भरे शिव मंदिर स्वर्ण अट्टालिकाएं भीषण विस्फोटों से सागर में गिर गयीं। इन विस्फोटों से लंका का ही नहीं, भारत का भी यथेष्ठ भाग सागर में समा गया था और लंका से भारत, की दूरी उस भू-भाग के नष्ट होने से बढ़ गयी थी। नल-सेतु (जल डमरूमध्य) का भाग भी रक्ष-रणनीतिज्ञों ने नष्ट कर दिया होगा। यही कारण है कि त्रिकुट पर्वत की चोटियां भी तिरुकोणमलै के भाग के साथ लंका से सागर में समा गयी होंगी और समुद्र भी गहरा हो गया होगा। इसका कारण यह भी हो सकता है कि युद्ध के बाद अवशेष बम आदि साम्रगी को नष्ट करने के लिए अगस्त्य ने समुन्द्र में ही विस्फोट कराकर लंका से विदा ली हो, जिससे सागर गहरा हो गया, क्योंकि रामायण में उथले उदधि और यहां नावें नहीं चल सकतीं, का उल्लेख हनुमान करते हैं। अब तिरुकोणमलै के रामायणकालीन शिव मंदिरों के कई अवशेष खोजे गये हैं, डिस्कवरी चैनल द्वारा इन अवशेषों का सुन्दर प्रस्तुतीकरण किया गया है।

जब रावण अपने अन्त समय से पहले वेधशाला में दिव्यरथ के निर्माण में लीन था तब अग्निवेश ने अग्निगोले छोड़कर वेधशाला और उसके पूरे क्षेत्र को नष्ट करने की कोशिश की। श्री शाही के अनुसार ये अग्निगोले थर्माइट बम थे। जिसके प्रहार से इस्पात की मोटी चादर तक क्षण मात्र में पिघल जाती थी, लंका के हेम मंदिर, हेमभूषित इन्हीं अग्निगोले से पिघले थे।

रावण के प्राणों का अन्त जब अगस्त्य का ब्रह्मास्त्र नहीं कर सका तो राम ने रावण पर ब्रह्म द्वारा आविष्कृत

ब्रह्मास्त्र छोड़ा जो बहुत ज्यादा शक्तिशाली था। इससे रावण के शरीर के अनेक टुकड़े हो गए और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।

इस विश्व-युद्ध में छोटे-मोटे अस्त्रों की तो कोई गिनती ही नहीं थी। ये अस्त्र भी विकट मारक क्षमता के थे। शम्बूक ने 'सूर्यहास खड्ग' का अपनी वेधशाला में आविष्कार किया था। इस खड्ग की विशेषता थी सौर ऊर्जा के संग्रहण की। जैसे ही इनका प्रयोग शत्रु दल पर किया जाता वे सूर्यहास खड्ग से चिपक जाते। यह खड्ग शत्रु का रक्त खींच लेता और चुम्बक शक्ति से धारक के पास वापस आ जाता। लक्ष्मण ने खड्ग को छीनने के लिए शम्बूक की विश्वासघात कर हत्या की थी।

लंका के द्वार पर 'दारूपंच अस्त्र' स्थापित थे। इनका आविष्कार शुक्राचार्य भार्गव ने किया था, जिसे 'रूद्र कीर्तिमुख' का नाम भी दिया गया था इस यंत्र की विशेषता थी कि जो गतिविधि शत्रु करता था उसका पूरा चित्र इस यंत्र पर उभर आता था। इसके मुख से अग्निगोला निकलता और शत्रु का संहार करता। यह कीर्तिमुख संभवत: यंत्र मानव था।

राम ने वैष्णव चाप पर आग्नेयास्त्र और प्रक्षेपास्त्र चलाये थे, जो भयंकर विस्फोटक के साथ शत्रुओं का नाश करते थे। राम को अग्निवेश ने एक विशिष्ट कांच दिया था जो सम्भवत: दूरबीन था। इसी दूरबीन से राम ने लंका के द्वार पर लगे 'दारूपंच अस्त्र' को देखा और प्रक्षेपास्त्र छोड़कर नष्ट कर दिया।

जब कुंभकर्ण और लक्ष्मण के बीच संग्राम चल रहा था तब लक्ष्मण ने कुंभकर्ण पर मानवस्त्र छोड़ा जिसे कुंभकर्ण ने कांचन-मालिनी शक्ति से नष्ट कर दिया। इस शक्ति की विशेषता थी कि इसे छोड़ते ही आठ घंटियां मधुर ध्वनि उत्पन्न करती हुई बजती थीं। ये घंटियां तत्काल सौर ऊर्जा ग्रहण करती थीं, यह शक्ति वायुवेग से चलती थी और सौर मंडल की विद्युत स्वत: उत्पन्न होती थी। इस अस्त्र से जीवित बचना मुश्किल ही था क्योंकि शत्रु शरीर में विद्युत धारा प्रवाहित हो जाने के कारण शत्रु का अंत हो जाता था।

कुंभकर्ण अपने कंठ में 'जीवन रत्नवलय' पहनता था, इस यंत्र से चकाचौंध करती हुई किरणें निकलती थीं। उनके कारण शत्रु के अस्त्र ठहर नहीं पाते थे, लक्ष्मण ने जब कुंभकर्ण पर 'अर्धनाराच' छोड़ा तो कुंभकर्ण ने 'अर्धनाराच' को इसी वलय से किरणें निकाल कर नष्ट किया. लक्ष्मण ने शम्बूक से छीने अस्त्र 'चंद्रहास खड्ग' का भी कुंभकर्ण पर वार किया जिसे कुंभकर्ण ने शूल के प्रहार से काट दिया बाद में कुंभकर्ण ने लक्ष्मण पर 'मोक्खशक्ति' छोड़ी जिसका जवाब लक्ष्मण के पास नहीं था और लक्ष्मण घायल हो गए।

तुलसीदास ने कुंभकर्ण को ऐसा आलसी निरूपित किया जो छह माह सोता रहता था और एक दिन के लिए भोजन आदि क्रियाओं के लिए उठता और फिर सो जाता. जबकि वास्तविकता यह थी कि कुंभकर्ण राष्ट्रभक्त तो था ही, एक वैज्ञानिक भी था, वह अपनी वेधशाला में अपनी पत्नी वज्रज्वाला के सहयोग से निरन्तर आविष्कार करने में लगा रहता था, ऐसे में वह खाने-पीने की सुध भी भूल जाता था और अपनी वेधशाला से कम ही बाहर निकलता कुंभकर्ण अपनी वेधशाला में यंत्र-मानव (रोबोट), दारूपंच अस्त्र (राडार), दर्पण (दूरदर्शन जैसा यंत्र) व अणुअस्त्रों के निर्माण में लगा रहता था, कुंभकर्ण की यंत्र-मानव कला को 'ग्रेट इंडियन' पुस्तक में 'रिज़ार्ड आर्ट' का दर्जा दिया है.) इस कला में रावण की पत्नी धान्यमालिनी भी पारन्गत थी, जो राम-रावण युद्ध के समय गर्भवती थी। रावण की मृत्यु के बाद धान्यमालिनी ने अरिमर्दन नाम के एक पुत्र को जन्म दिया जो वीर और प्रतापी था। विभीषण को इसी अरिमर्दन ने पदच्युत किया और लंका की पुन: सत्ता संभालकर लंकाधीश कहलाया व रावण द्वारा स्थापित मूल्यों की पुनर्स्थापना की।

रावण ने जब इस युद्ध का पटाक्षेप करने के लिए निर्णायक लड़ाई लड़ी तो धान्यमालिनी ने राम की सेना पर मकरमुख, आशी विषमुख, वाराह जैसे विध्वंसकारी अस्त्रों का प्रयोग किया. इन अस्त्रों से छूटने वाले आयुधों में अग्निदीप्तिमुख प्रमुख था. जो छोड़ने पर सौर-मंडल की ओर सीधा जाता, फिर किसी नक्षत्र के समान चमकता और आकाश में ही टूटता फिर सीधा पृथ्वी की ओर गिरकर शत्रु का नाश करता. अंत में राम ने रावण से छुटकारा पाने के लिए ब्रह्मा का दिया हुआ ब्रह्मास्त्र छोड़ा जिससे रावण मारा गया।

अगस्त्य ने राम के हितार्थ शंकर से 'अजगव धनुष' मांगा था। इस धनुष को मदनमोहन शर्मा 'शाही' ने एक पैटन टैंक माना है। इस धनुष की व्याख्या करते हुए श्री शाही 'लंकेश्वर' में लिखते हैं- 'चाप' अभी बंदूक के घोड़े (ट्रिगर) के लिए उपयोग में लाया जाता था 'चाप' ट्रिगर का ही पर्यायवाची होकर अजगव धनुष है। पिनाक

धनुष में ये सब अनेक पहियोंवाली गाडी पर रखे रहते थे। तब चाप चढ़ाने अथवा घोड़ा (ट्रिगर) दबाने से हुए भयंकर विस्फोट द्वारा शत्रुओं का विनाश किया जाता था।

राम और रावण की सेनाओं के पास भुशंडी (बंदूक) थी। कुछ सैनिकों के पास स्वचालित भुशुंडियां भी थीं। रावण ने एक छत्र का भी निर्माण किया था जिसे 'ब्रह्मछत्र' कहा जाता था। संकटकालीन स्थिति में इस छत्र से लंका को ढंक लिया जाता था। जिससे लंका में अन्धकार हो जाता था और शत्रु को एकाएक लंका दिखायी नहीं देती थी। सम्भवत: इस छत्र का निर्माण वायुयानों से छोड़े जाने वाले विस्फोटकों से बचने के लिए किया गया होगा।

लंका में दूर संचार-यंत्रों का भी निर्माण होता था व इनका चलन था। दूरभाष की तरह उस युग में 'दूर नियंत्रण यंत्र था' जिसे 'मधुमक्खी' कहा जाता था जब इससे वार्ता की जाती थी तो वार्ता से पूर्व इससे भिन-भिन की ध्वनि प्रकट होती थी सम्भवत: इसी ध्वनि प्रस्फुटन के कारण इस यंत्र का नामकरण मधुमक्खी किया गया होगा। ये यंत्र लंका के विशिष्ट अधिकारियों और राज परिवार के लोगों के पास रहते थे।

लंका के दस हजार सैनिकों के पास 'त्रिशूल' नाम के यंत्र थे। जो दूर-दूर तक सन्देश का आदान-प्रदान करते थे। सम्भवत: ये त्रिशूल वायरलेस ही होंगे। लंका में यांत्रिक सेतु, यांत्रिक कपाट और ऐसे चबूतरे भी थे जो बटन दबाने से ऊपर-नीचे होते थे ये चबूतरे सम्भवत: लिफ्ट थे।

राम-रावण युद्ध में प्रयोग में लायी गयी शक्तियों को मायावी या दैवीय शक्ति कहकर उनके वास्तविक महत्त्व, आविष्कार के ज्ञान व सामर्थ्य को सर्वथा नकार दिया गया। वास्तव में ये विध्वंसकारी परमाणु अस्त्र और अद्‌भुत भौतिक यंत्र थे इनकी सूक्ष्म और यथार्थ विवेचना के लिए इनके रहस्यों को समझना अभी शेष है. विज्ञान अध्येताओं को पहल करनी चाहिए।

('नवनीत' मासिक से साभार)

आर्य समाज एल ब्लाक
आनन्द विहार, हरिनगर, नई दिल्ली

नई दिल्ली। आर्य समाज एल ब्लाक, हरिनगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनांक १४ नवम्बर से १८ नवम्बर तक आर्य समाज मन्दिर के समागार में सोत्साह संपन्न हुआ।

इस अवसर पर १४ नवम्बर को महिला सम्मेलन, १७ नवम्बर को आर्य बाल बालिका सम्पन्न । १८ नवम्बर को प्रात: काल १४ नवम्बर से प्रारम्भ हुए यज्ञ की पूर्णाहूति हुई तथा ११ बजे पश्चिमी दिल्ली, वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री रामजी लाल आर्य की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। सम्मेलन में श्री बनारसी सिंह, स्वामी चेतन देव एवम् प्रमुख वैदिक विद्वान, डॉ. रघुवीर वेदालंकार के प्रवचन तथा आचार्य देवेन्द्र शास्त्री ने भजन प्रस्तुत किए। समाज के पुरोहित आचार्य कुंवर पाल शास्त्री ने अतिथियों का परिचय दिया। श्री महेन्द्र सिंह एवम् समाज के प्रधान श्री मल्होत्रा ने आभार व्यक्त किया।

आर्य समाज निर्माण विहार का वार्षिकोत्सव

दिल्ली। आर्य समाज निर्माण विहार विकास मार्ग, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ भी संम्पन्न हुआ। १८ नवम्बर को श्री प्राणनाथ कुमार की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन आयोजित हुआ।

कार्यक्रम के संयोजक श्री रोशनलाल गुप्त थे। इसे सफल बनाने में सर्वश्री प्राणनाथ कुमार, रामस्वरूप सूद, अमृतलाल मल्होत्रा तथा श्री रवि बहल की प्रमुख भूमिका रही।

स्वामी श्रद्धानन्द
—विजय गुप्त

श्रद्धा जीवन का आराध्य है, श्रद्धा सुमन में भरी सुगन्ध,
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, समिधा बन गये श्रद्धानन्द।

सत्य का आधार मिला, सद्चिन्तन का व्यवहार मिला,
सत्कर्मों का संस्कार मिला, इतिहास को नया आकार मिला,
श्रद्धावान् बनकर मिटाएं जीवन के समस्त द्वन्द्व,
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, समिधा बन गये श्रद्धानन्द।

अन्धकार में भटके समुदाय, अपने भी जब लगे पराये,
परतन्त्रता का दंश सताए, सूझे न जब कोई उपाये,
शुद्धि के पावन मन्त्र से, युग-युग के खोले बन्द,
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, समिधा बन गये श्रद्धानन्द।

सद्ज्ञान का दीप जलाया, गुरुकुलों का भाग्य जगाया,
विकास-संस्कृति का पथ सजाया, बिछुड़ों को तब गले लगाया,
हर कली-पुष्प नवचिन्तन की प्रस्फुटित हुई सुगन्ध,
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, समिधा बन गये स्वामी श्रद्धानन्द।

दयानन्द के तुम अनुयायी, धर्म के तुम प्रखर सिपाही,
सत्य पथ के अडिग राही, तीन गोलियां सीने पर खायीं।
भूत-वर्तमान-भविष्य से श्रद्धा का जुड़ा सम्बन्ध,
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण में, समिधा बन गये श्रद्धानन्द।

कश्मीर से सेना हटाने की सोचिए भी मत

–शेरू थपलियाल

नब्बे के शुरूआती दशक में जम्मू-कश्मीर को लड़ाई और आतंकवाद में झोंकने के लिए जिम्मेदार शख्स अगर जब राज्य से सैनिकों को हटाने की बात करे, ताकि धरती का स्वर्ग फिर से आतंकवाद के गड्ढे में गिर पड़े, तो किसी को हैरानी नहीं होनी चाहिए। तब उसी शख्स ने देश का गृह मंत्री होते हुए भी अपनी अपहृत बेटी को छुड़ाने के लिए आतंकवादियों को रिहा कर दिया था और एक ऐसी परम्परा की शुरूआत की थी, जिसने आतंकवाद के पैर मजबूत कर दिए। इस परम्परा को सबसे बड़ी कामयाबी तब मिली, जब एक विदेश मंत्री ने आतंकवादियों को खुद कन्धार पहुंचाया। लेकिन यह उतनी चिन्ता की बात नहीं कि मुफ्ती मोहम्मद सईद ने यह मांग उठाई है, बल्कि यह है कि सरकार इसे संजीदगी से ले रही है। राजनीतिक हितों के नाम पर राष्ट्रीय सुरक्षा की अनदेखी की जा रही है।यहां तक कि दूसरे राजनीतिक दल भी, चाहे वे मौजूदा सरकार के साझेदार हों या विपक्षी, इस मुद्दे से इस तरह छिटक रहे हैं, जैसे इसके नतीजे से उन्हें कोई फर्क ही नहीं पड़ता। किसी छोटे से बहाने को लेकर संसद को पंगु बना देने या फिर सड़कों पर उतर आने वाली ये पार्टियां एक ऐसे मुद्दे पर खामोशी साधे हुए हैं, जिससे हमारी राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ सकती है।

–मुफ्ती मोहम्मद सईद की मांग एकदम गलत है। बड़ी मुश्किल से आतंकवाद पर काबू पाया जा सका है। सभी लोगों को इसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

मीडिया भी इस दुखद स्थिति की जिम्मेदारी से बच नहीं सकता। किसी भी अखबार या टीवी चैनल ने इस बात की जरूरत नहीं समझी के मुफ्ती मोहम्मद सईद या उनकी बेटी से पूछे कि हमारे दुश्मनों को फायदा पहुंचाने वाली यह मांग उन्होंने क्यों उठाई है। हमारे आरामतलब रणनीतिकार इस बात पर सिर खपाने में व्यस्त हैं कि जनरल मुशर्रफ का क्या होगा। टीवी चैनल, जो किसी भी गैर जरूरी मुद्दे पर विशेषज्ञों को बहस के लिए जुटा लेते हैं, इस मामले में हैरतअंगेज तौर पर चुप्पी साधे हुए हैं।

आखिर, इस मामले में इतनी पर्देदारी क्यों? इसके पीछे वजहें हैं इसमें एक है रणनीतिक संस्कृति का अभाव, जो सदियों से चला आ रहा है। हम लोगों के दिमाग में यह बात घर कर गई है कि राष्ट्रीय सुरक्षा सैन्य बलों का काम है और बाकी लोगों का उससे कोई लेना-देना नहीं है। सत्ता में आई सरकारें सिर्फ अपना वजूद बचाने के फिराक में लगी रहती हैं, साधन चाहे जो भी हो। राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर उनकी उदासीनता इसलिए भी आम है कि पब्लिक भी वैसी ही उदासीनता बरतती है। वरना किस देश में एक प्रधानमंत्री अपने देश के भूभाग को दुश्मन के रहमोकरम पर छोड़ देने की सोच सकता है, जैसा हमारे यहां सियाचिन के मामले में होता दिख रहा है? किस देश में दो दशक से जारी बगावत के इलाके से सेना हटाने की बात सोची जा सकती हैं? हम लोग इस दर्जे तक भोले बन सकते हैं कि मुफ्ती की मांग को कूड़े में फेंकने की बजाय इसलिए उस पर विचार करने लगें कि कश्मीर में सरकार बच जाए।

यह बहुत साहस और संकल्प की बात है कि सेना और अर्धसैनिक बलों ने मिलकर जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी कार्रवाइयों को एक हद तक कम किया है। वहां अब सैनिक बनाम आतंकवादी मृत्यु का अनुपात १:७.१ है। अब वहां शासन करने का वक्त आया है, लेकिन मुफ्ती और उनकी पार्टी ऐसा नहीं होने देना चाहते। ऐसे में विपक्ष, मीडिया और आम जनता का यह फर्ज बनता है कि वे इस निहायत गलत मांग को रोकने के लिए जोरदार आवाज उठाएं। हम लोग अपने अतीत से थोड़ी सी भी सीख नहीं लेते। हमने ऐसे ही राजनीतिक हितों के चलते अल्फा के खिलाफ अपनी लड़ाई रोकी और उन्हें फिर से पुनर्गठित होने का मौका दे दिया। उन्हें ठिकाने लगाने के लिए सेना को ऑपरेशन चलाना पड़ा था। क्या जम्मू-कश्मीर में भी हम लोग यही दोहराएंगे?

पिछले कई बरसों में आबादी वाले इलाकों से सेना पूरी तरह से हटा ली गई है। इन इलाकों को अर्धसैनिक बलों और केन्द्रीय पुलिस संगठनों को सौंपा जा चुका है। वहां यह झूठ फैलाया जा रहा है कि सेना निजी और सार्वजनिक जमीन अवैध तरीके से हथिया रही है। जबकि सेना अपने कैम्प राज्य सरकार से हासिल जमीन पर ही लगाती है। सेना के लिए जमीन का आवंटन सेना द्वारा नहीं, बल्कि डिफेंस एस्टेट विभाग द्वारा किया जाता है। इस संदर्भ में तीन ऐसे शब्द हैं जिनका मतलब अभी

भी हर किसी के लिए साफ नहीं है। पहला है रीलोकेशन। इस शब्द का मतलब है सुरक्षा बलों द्वारा सार्वजनिक जमीन और इमारतों को खाली करना और निर्धारित क्षेत्रों में ज़ाकर बसना। इस शब्द का सेना से फिलहाल कोई लेना-देना नहीं है। दूसरा शब्द है री-डेप्लॉयमेंट। बगावत प्रभावित इलाकों में घुसपैठ रोकने के लिए सेना की टुकड़ियां जरूरत और मौसम के हिसाब से अपनी जगह बदलती हैं। यह उसके काम की सहज गतिविधि का हिस्सा है। तीसरा शब्द है-विड्रॉअल। इसका मतलब है सेना की तैनाती में कमी लाना। अगर जम्मू-कश्मीर में ऐसा किया गया, तो इसका मतलब होगा घुसपैठ के खिलाफ अपनी मोर्चाबंदी अपनी ही हाथों तोड़ देना। इससे बगावत के खिलाफ बुना गया सुरक्षा का वह ताना-बाना बिखर जाएगा, जिसे बनाने में बरसों की मेहनत लगी है। लेकिन सेना, और असल में पूरे सुरक्षा माहौल, को लेकर उदासीनता ने कुछ तत्वों को गलतफहमी फैलाने की छूट दे दी है। आर्म्ड फोर्सेस स्पेशल पावर एक्ट खत्म किए जाने की जरूरत है। यह एक्ट उग्रवाद प्रभावित इलाकों में सैनिकों की हिफाजत करता है, सिर्फ इसलिए कि वे अपनी कानूनी जिम्मेदारी निभा सकें।

यह वक्त खड़े होने और अपनी आवाज बुलन्द करने का है। अगर राजनीतिक वर्ग जम्मू-कश्मीर से सेना वापस बुलाने के दुर्भाग्यपूर्ण नतीजों को नहीं देख पा रहा है तो आइए, इन तथ्यों से परिचित हम सब नागरिक ही इस कार्रवाई के खिलाफ मजबूत जनमत बनाएं, जिसका असर न सिर्फ जम्मू-कश्मीर, बल्कि पूरे देश पर पड़ेगा। विघटनकारी शक्तियां हमेशा मौके की ताक में रहती हैं। उन्हें सिर्फ एक चिनगारी की दरकार होती है। हम इस चिनगारी को शोला बनने से रोकें। कम से कम हम लोग एक कोशिश तो कर ही सकते हैं- कौन कंहता है कि आंसमां में सूराख हो नहीं सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।

(लेखक रिटायर्ड मेजर जनरल हैं)

स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति में शत-शत नमन

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने सफल, सुदृढ़ राष्ट्र के गठन हेतु शुद्धि का जो युग प्रवर्तक अभियान आरम्भ किया था, हिन्दू संगठन के जिस पथ को आलोकित करने के लिए उन्होंने अपना जीवन दीप समर्पित किया, हम उसे गतिमान रखने का संकल्प व्यक्त करते हैं, स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर राष्ट्र निष्ठ जन का उनकी पुण्य स्मृति में नमन। उन्होंने अपने रक्त की मसि और अस्थियों की लेखनी से जो प्रेरक शुद्धि, संगठन अंकित किया, वह सदैव उद्‌बोधक और प्रेरक रहेगा।

चन्द्रप्रकाश कौशिक (अध्यक्ष), मुन्ना लाल शर्मा (महामंत्री) एवम्
हिन्दू महासभा के सभी पदाधिकारियों का अपने संगठन के
संस्थापकों में से
प्रमुख पुण्यात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति में
शत-शत नमन्

सबसे पहला अखबार कहां छपा?

'दीदी, क्राफ्ट टीचर ने मुझे बुलेटिन बोर्ड बनाने के लए कहा है। वह क्या होता है?

'एक बोर्ड होता है जिस पर खबरें लिख या चिपका दी जाती हैं ताकि जनता को जानकारी मिल सके। एक जमाने में सरकारी आदेशों या लोगों के सफरनामों की जानकारी इन्हीं के जरिए मिलती थी और यह सरकार की तरफ से सरायों और अन्य पब्लिक प्लेसों पर लगा दिए जाते थे। यूं समझो कि यह एक तरह के समाचार पत्र थे या अखबारों के पूर्वज। आज भी इनका प्रयोग दफ्तरों और स्कूलों में नोटिस चिपकाने के लिए किया जाता है।'

'तो फिर यह अखबार में तब्दील कैसे हो गए?'

'लगभग 1300 साल पहले चीनी सरकार ने सोचा कि इन बोर्डों से बात दूर तक नहीं पहुंच पाती है। इसलिए उसने उसी दौरान टीचिंग पाओ नामक अखबार छापना शुरू किया जिसका मतलब है राजधानी की महत्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी अवाम को देती थी। ऐसा ही एक सरकारी अखबार रोम में भी था जिसका नाम एक्टा डिवरना था यानी रोजाना की घटनाएं। इतिहास में रिकार्ड सिर्फ इन दो अखबारो का ही मिलता है और ये भी फ्री थे।

'तो बिकने वाला पहला अखबार कब आया?'

'16वीं शताब्दी में वेनिस सरकार ने नोटिजी स्क्रिटी (लिखित खबर) नामक अखबार निकाला जिसे एक गजैटा में खरीदा जाता था। लेकिन 18वीं शताब्दी तक अखबार नियमित निकलने लगे थे और उनमें खबरों के साथ-साथ विचार भी होते थे। यह अखबार ज्यादातर साप्ताहिक थे क्योंकि संचार और प्रोडक्शन बहुत धीमा था। लंदन में द इन्टेलिजेंसर 1663 में शुरू हुआ।'

'क्या उस दौरान में किसी अखबार पर प्रतिबन्ध भी लगा?'

'अमेरिका में सबसे पहला पेपर 1690 में पब्लिक ओक्यूरेंसिस निकला। यह बोस्टन से प्रकाशित होता था और उस पर ही सबसे पहला प्रतिबन्ध लगा। हालांकि, बेंजामिन फ्रेंकलिन 1729 से 1765 तक पेन-सिलवेनिया गजट निकालते थे लेकिन 1752 तक अमेरिका कॉलोनियों में मात्र दो ही अखबार थे लेकिन अमेरिका क्रांति के समय उनकी संख्या 37 तक पहुंच गई थी।'

'यानी अखबार भी क्रांति के सूत्रधार बने हैं।'

'हां, हमारे देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी अखबारों की भूमिका विशेष रही है। तभी तो हिलाल आदि अखबारों को अंग्रेज सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था। वैसे, दुनिया का सबसे असरदार समाचारपत्र शायद लंदन का द टाइम्स है जो 1785 में छपना शुरू हुआ और आज तक उसका प्रकाशन जारी है। भारत में सबसे पुराने अखबारों में से द टाइम्स ऑफ इंण्डिया भी एक है। इसकी स्थापना 1883 में हुई थी।' -इमेज

सांप कैसे सुनते हैं?

यह जिज्ञासा लगभग सभी को रहती है कि क्या सांप सुन सकते हैं? यदि नहीं, तो वे अपना सुनने का काम किस प्रकार करते हैं?

वास्तव में सांपों के कान नहीं होते हैं। इसी कारणवश वे हवा में तैरती तरंगों को सुन नहीं सकते हैं। वे केवल पृथ्वी पर होने वाले कम्पनों का अपनी त्वचा द्वारा आभास करके ही अपने सुनने का काम पूरा करते हैं। किसी के चलने से पृथ्वी पर होने वाले कम्पनों के आधार पर ही वे वस्तु विशेष या प्राणी की स्थिति का पता लगाते हैं।

सपेरा जब बीन बजाकर सांप को नचाता है तो लगता है कि सांप उसकी बीन की मधुर आवाज को सुनकर ही नाच रहा है। परन्तु वास्तविकता यह है कि सांप बीन की आवाज को सुन ही नहीं पाता है। उसका नाचना सपेरे के बीन हिलाने के हावभाव पर प्रतिक्रियात्मक तौर पर होता है। बीन द्वारा सांप के शरीर पर चोट मारकर या हिलाकर उसे वार करने के लिए बाध्य किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह बीन को हिलता-डुलता देख उसे डसने की तैयारी में वैसे ही हिलता डुलता रहता है।

आर्माडिलो

आर्माडिलो को दुनिया में सबसे सख्त खाल वाला जानवर होने का गौरव प्राप्त है। इसकी अनुपम ढाल सख्त हड्डियों की प्लेटों से बनी होती है। यह ढाल इसके कंधों, कूल्हों, पूंछ, सिर और टांगों के कुछ हिस्सों को ढके रहती है। जब कभी इसे खतरा महसूस होता है तो आर्माडिलो अपनी टांगों को अपने शरीर के अंदर दुबका लेता है और निश्चल होकर बैठ जाता है। इसकी 20 प्रजातियां पाई जाती हैं। यह मध्य और दक्षिणी अमेरिका के रेगिस्तानों में, घास वाले मैदानों और जंगलों में पाया जाता है। इसकी सूंघने की शक्ति बड़ी तीव्र होती है। जिससे यह छोटे जानवरों और कीड़े मकोड़ों की गन्ध को पहचानकर उन्हें जमीन से खोद निकालता है। जमीन की खुदाई में इसके अगले पंजे काम आते हैं और अपनी पिछली टांगों से यह मिट्टी को पीछे की तरफ धकेलता है। आर्माडिलो के मनपसन्द भोजन में पेड़ों की जड़ें, फफूंद और फल मुख्य हैं, लेकिन इसका सबसे पसंदीदा व्यंजन है- चींटियां और दीमक, जिन्हें यह एक बार के भोजन में 40 हजार तक खा सकता है।

महिला-जगत्

सही तरीके से पकाएं दालें

हम कितना ही अच्छा क्यों न खाएं, हमारी सेहत तभी बरकरार रह सकती है, जब हम सही ढंग से खुराक लेते रहें। इसके साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि जो हम खाते हैं, उसे किस ढंग से पकाया जाता है। भोजन में दालों में प्रोटीन का काफी अहम् स्थान है। सभी प्रकार की दालों में प्रोटीन की काफी मात्रा होती है। इसके अलावा इनमें विटामिन बी, लोहा, फास्फोरस आदि भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं, जो शरीर के लिए बेहद जरूरी हैं। बहुत-से लोग दालों का सेवन करते हैं, लेकिन इनमें से बहुत कम लोग इन्हें पकाने की विधि जानते हैं, जबकि यह पता होना बहुत आवश्यक है कि दालों को किस प्रकार पकाया जाए, ताकि उनके पोषक तत्व नष्ट न हों।

1. छिलके वाली या साबुत दालें ही प्रयोग में लाएं, क्योंकि इनके छिलके में ही सभी पोषक तत्व विद्यमान होते हैं; लेकिन कई महिलाएं छिलके वाली दालों को कुछ समय भिगोकर बाद में हाथों से रगड़-रगड़ कर उनके छिलके उतार देती हैं, जिससे उनमें मौजूद पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। इसके अलावा दाल को जिस पानी में भिगोएं, उसी में पकाएं।
2 दाल में तेज मिर्च-मसाले का प्रयोग न करें।
3 बनाने से पूर्व दालों को भली भांति साफ कर लें।
4 दाल को यथासम्भव कुकर में ही पकाएं। इससे उसी पौष्टिकता बरकरार रहेगी।
5 दाल को स्वादिष्ट बनाने हेतु मिर्च-मसालों की बजाए पकने के बाद इसमें नींबू डाल सकते हैं। यह प्रोटीन को पचाने में भी सहायक है।
6 दाल में टिण्डा, घिया, पालक आदि सब्जियां डालने से इसकी पौष्टिकता और भी बढ़ जाती है।
7 बासी दाल कदापि न खाएं। यह सेहत के लिए नुकसानदायक होती है। अत: दाल उतनी ही बनाएं जितनी आवश्कता हो।
8 रात के बजाए दिन के समय दाल का सेवन करना श्रेयस्कर है। भारी दालें, जैसे-मसूर की दाल, चने की दाल इत्यादि तो रात को कदापि न खाएं।
9 गाढ़ी दाल पचने में अधिक समय लगाती है। अत: जहां तक सम्भव हो सके, दाल को पतला ही रखें।
10 दाल को अधिक समय तक न रखें। यदि आप अधिक मात्रा में दाल मंगवा कर रखती हैं, तो समय-समय पर उसे धूप लगाती रहें। पुरानी दाल को बनाने से पूर्व देख लें कि कहीं उसमें घुन तो नहीं लग गया। अगर घुन लगा हो, तो उसे इस्तेमाल में न लाएं।

दानी महाकवि माघ

प्राचीन समय की बात है, महाकवि माघ एक बहुत प्रसिद्ध कवि थे। वह जितने विद्वान थे, उतने ही उदार भी। एक रात वह अपने छोटे-से कमरे में बैठे लिख रहे थे, पास ही में एक दिया टिमटिमा रहा था। तभी दरवाजे पर खटखट की आवाज सुनाई दी। वह उठे, दरवाजा खोला तो देखा बाहर एक दीन-हीन व्यक्ति हाथ जोड़े खड़ा है। उन्होंने देखा और अंदर आने को कहा।

वह कवि को देखते ही कहने लगा, "हे कविराज, आपकी उदारता के किस्से सुनकर आपके पास आया हूँ। मेरा बेटा सख्त बीमार है और उसकी दवा-दारू के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है। अगर आप कुछ मदद कर दें तो.."

यह सुनकर कविराज सोच में पड़ गए। घर में तो एक पाई तक नहीं है, क्या करें? याचक सामने खड़ा है, इसका लड़का गंभीर रूप से बीमार है। इसे धन की जरूरत है और धन मेरे पास है नहीं।

अचानक उन्हें एक उपाय सूझा। उनकी नजर अपनी सोई हुई पत्नी की तरफ गई। वह आहिस्ता-आहिस्ता चलते हुए उसके पास पहुंचे और उसके हाथ से कंगन निकाल लिया। वह गरीब आदमी बड़ी हैरानी से यह सब कुछ देख रहा था। कविराज अभी कंगन दे नहीं पाए थे कि पीछे से आवाज आई, "ठहरिये!" डरते हुए उन्होंने पीछे देखा कि कहीं उनकी पत्नी उस गरीब व्यक्ति की अपमान न कर दे।

वह अपनी सफाई में कुछ कहने ही वाले थे कि पत्नी ने उसे गरीब व्यक्ति से कहा, "भाई ठहरो इन्हें तो दुनियादारी की समझ है ही नहीं, एक कंगन से आपके बेटे की दवा नहीं हो सकेंगी। आप यह दूसरा कंगन भी लेते जाओ।" और तुरंत अपना दूसरा कंगन भी उसकी ओर बढा दिया।

अम्मा मत जाओ

—समता शर्मा

राहुल गुमसुम सा अपने कमरे में बैठा था। अपने चार वर्षीय पोते का मुरझाया चेहरा देखकर दादी से रहा न गया। उन्होंने पूछा बेटा क्या बात है? आज अपने खिलौनों से भी नहीं खेल रहे हो। खाना भी नहीं खाया। दूध भी नहीं पिया। पर राहुल कुछ नहीं बोला। दादी के बहुत दुलारने पर वह उनके गले से लिपट गया और रोते हुए उसने कहा-दादी माँ मुझे रोज छोड़कर क्यों चली जाती है? उनके बिना मेरा मन नहीं लगता। कोई भी चीज अच्छी नहीं लगती। कहीं एक दिन वो मुझे छोड़कर तो नहीं चली जाएंगी। यह असुरक्षा की भावना है, जो राहुल जैसे बहुत से बच्चों की मासूमियत छीन रही है। कामकाजी महिलाओं के बच्चों में कई घण्टे अपनी मां से दूर रहने के कारण यह भावना पनप रही है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इस समस्या को मैटरनल सेपरेशन एंग्जाइटी कहते हैं। अमरीकी शिक्षा विभाग के एक सर्वे के अनुसार करीब 63 फीसदी बच्चे इस उत्सुकता के शिकार हैं। 5 साल तक के बच्चे इससे अधिक प्रभावित होते हैं। मैटरनल सेपरेशन एंग्जाइटी यानी मां के ऑफिस चल जाने से बच्चे के मन में पैदा हुई असुरक्षा की भावना और अकेलापन महसूस करना है। सवाल यह उठता है कि आखिर क्यों बच्चे तेजी से इस सोच के शिकार हो रहे हैं।

क्योकि मां की कमी खलती है

बचपन में एक बच्चे को अपनी मां की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। उसके आंचल की छांव तले वह खुद को पूरी तरह सुरक्षित महसूस करता है। मनोचिकित्सक आईडी गुप्ता कहते हैं कि घर-परिवार में सबके बीच भी बच्चे को अपनी मां की कमी महसूस होती है। मां-बच्चे का बॉण्ड ही कुछ ऐसा होता है। लोग सोचते हैं कि संयुक्त परिवार में बच्चा अपनी मां के बिना रह सकता है, लेकिन सच तो यह है कि कोई भी उसकी मां के प्यार व दुलार की पूर्ति नहीं कर सकता है। पांच साल तक के बच्चों में यह प्रवृति खासतौर पर देखी जाती है। इस उम्र में बच्चों का अबोध मन मां के चले जाने पर दुखता है। जबकि उसे पता होता है कि मां वापस आ जाएगी।

देरी न हो जरा सी

कुछ बच्चे बहुत भावुक और एकाकी प्रवृति के होते हैं। ऐसे में वे मां के अलावा किसी और से घुल-मिल नहीं पाते, उन्हें सिर्फ मां का साथ ही अच्छा लगता है। ऐसे में मां के हर रोज बाहर जाने से वे उसे अपने से दूर होता हुआ महसूस करते हैं। उन्हें लगता है, शायद उनकी मां उनसे प्यार नहीं करती। भावनात्मक रूप से वे कमजोर रहने लगते हैं। कई बच्चे बीमार रहने लगते हैं, तो कई तनावग्रस्त हो जाते हैं।

चाहिए पूरा समय- भरपूर प्यार

मां के कामकाजी होने के कारण दोहरी जिम्मेदारी के चलते वह अपने बच्चे को समय नहीं दे पाती है। इसका असर बच्चे पर पड़ता है। बच्चे यह अपेक्षा करते हैं कि मां उन्हें पूरा समय दे और ढेर सारा प्यार। परवरिश में यह कमी उन्हें चिड़चिड़ा बना देती है। ऐसे में या तो वे बिल्कुल गुमसुम हो जाते हैं या फिर क्रोध करने लगते हैं।

मैटरनल सेपरेशन एंग्जाइटी के लक्षण-

बच्चे में चिड़चिड़ापन, मां के जाने के बाद मायूस हो जाना, रोज-रोज बीमार रहना, किसी से बात न करना, गुस्सा करना, सिर पटकना, नाखून खाना, अंगूठा चूसना, चीखना, चिल्लाना, वजन का लगातार कम होना।

अभिभावक ऐसा करें-

1. ऑफिस के बाद अधिक समय बच्चे के साथ ही बिताएं।
2. बच्चा नहीं चाहता कि मां नौकरी करे, तो नहीं करें।
3. पार्ट टाइम जॉब को प्राथमिकता दें।
4. घर के अन्य सदस्यों से भी बच्चे को घुलने-मिलने दें।
5. कभी-कभी बच्चे को उसके किसी दोस्त के घर छोड़ दें। क्योंकि हमउम्रों के बीच बच्चा व्यस्त हो जाता है।
6. ऑफिस से फोन करके बच्चे से बात करते रहें। बच्चे की मनोभावना को समझने की कोशिश करें।
7. ऑफिस जाने से पहले बच्चे को पूरी तरह से संतुष्ट करके जाएं।
8. बच्चे को किसी अच्छे शिशुगृह में डालें।
9. मां के साथ-साथ पिता भी बच्चे के साथ समय बिताएं।
10. घर के काम के लिए बाई रख लें ताकि बच्चे के साथ ज्यादा समय बिता सकें।

बढ़ती उम्र के बच्चों को हर कदम पर मां का साथ जरूरी है। मां के साथ खेलना और उसे अपने आस-पास देखकर उन्हें वास्तविक खुशी मिलती है। इससे उनके व्यक्तित्व का संतुलित विकास भी होता है। 'द चाइल्डहुड रूट्स ऑफ एडल्ट हैप्पीनेस' के लेखक और मनोचिकित्सक एडवर्ड का कहना है कि जो अभिभावक अपने बच्चों की खुशी का ध्यान रखते हैं, उनके बच्चे अवसाद, निराशा और अपनों से सम्वादहीनता आदि समस्याओं से दूर रहते हैं। ❑

प्रसन्नता के १२ मंत्र

–प्रियदर्शी

मानव को आराम देने वाली वस्तुएं तो बाजार में आसानी से खरीदी जा सकती हैं, परन्तु जो बात हृदय को आराम पहुंचाती है वह बाजार में नहीं मिलेगी। हमें उसे अपने अन्दर की खोजना होगा। मानसिक शांति देने वाली वस्तु है प्रसन्नता। प्रसन्नता हमारे- आपके सोचने के दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। यदि आप सदैव प्रसन्न रहते हैं तो उसका असर आयु पर भी पड़ता है और आप दीर्घजीवी बनते हैं। मुस्कराने के लिए केवल 17 मांसपेशियों की आवश्यकता होती है, जबकि मुंह लटकाने के लिए 43 मांसपेशियों की। थोड़ी सी मुस्कराहट आपकी कई मुश्किलें आसान कर देती है। प्रसन्नचित रहने के इन 12 मंत्रों पर ध्यान दें और जीवन को प्रसन्नता से भर दें:-

1. अपने मन-मस्तिष्क पर कभी भी नकारात्मक भावों और विचारों को हावी न होने दें। चिन्ता, द्वेष आक्रोश, कुंठा, घृणा ये सब प्रसन्नता के साथ-साथ सेहत के भी दुश्मन हैं। जितना सम्भव हो उतना इन्हें दूर ही रखें.

2. जब भी मन उदास हो तो अपने करीबी मित्र या रिश्तेदार से फोन पर बात कर मन हल्का कर सकते हैं। यदि आप चाहें तो उनसे व्यक्तिगत मुलाकात भी कर सकते हैं। अब तो वैज्ञानिक शोधों से भी यह बात साबित हो चुकी है कि परिजनों का साथ मन को सुकून देता है।

3. अपने शौक को पंख लगाइए अर्थात उन्हें पूरा करने का प्रयास कीजिए। यदि आपकी रूचि किसी वाद्ययंत्र को बजाने की है, लेकिन आप उसे अच्छी तरह नहीं बजा पाते हैं तो बगैर किसी झिझक उसे बजाने का प्रयत्न करें। यकीन करिए एक दिन आप उसमें भी पारंगत हो जाएंगें।

4. अदृश्य शक्ति पर भरोसा रखिए। चाहे आप जिस धर्म को मानते हों। अपने मन में आध्यात्मिक भावों को प्रमुखता से स्थान दीजिए। यह तो आपने भी सुना और पढ़ा होगा कि आस्था में असीम शक्ति है।

5. जब भी हंसने का कोई मौका आए जी खोलकर हंसें। मुंह बन्दकर आपने बहुत बार मुस्कराया होगा। एक बार खिलखिलाकर तो देखिए। आपको इतनी शांति मिलेगी कि आप उसकी कल्पना नहीं कर सकते। बात चाहे छोटी हो या बड़ी हंसने का कोई पैमाना न बनाएं।

6. कई बार पूरी नींद न ले पाने के कारण भी मन खिन्न हो जाता है। इस वजह से आपके चेहरे की बनावट भी बिगड़ी हुई लगती है। सप्ताह में कम से कम दो बार भरपूर नींद लें। इससे आपकी सारी थकावट जाती रहेगी। और आपके चेहरे पर होगी तो बस प्रसन्नता।

7. कभी भी किसी अन्य व्यक्ति के साथ तुलना न करें, क्योंकि आप स्वयं में अतुलनीय हैं। दूसरों के साथ तुलना करने से आपके दिमाग में व्यर्थ के विचार आ सकते हैं और आपका मन अशांत हो सकता है। उदाहरण के लिए आपकी किसी सहेली ने कार खरीद ली या कोई बड़ा पद हासिल कर लिया आदि। याद रखें हर व्यक्ति की परिस्थितियां भिन्न होती हैं। इसलिए दूसरों के साथ अपनी तुलना न करें।

8. प्रकृति के नजारों का आनन्द लेना सीखिए, क्या हुआ यदि आप हिमाचल व कश्मीर की खूबसूरत पहाड़ियों और वादियों का नजारा नहीं ले सकतीं। छत पर लेटकर आसमान में बिखरी रोशनी और सितारों की मनोहर छठा का लुत्फ तो ले ही सकती हैं। यदि यह सम्भव नहीं तो पांच मिनट के लिए ही सही घर से बाहर निकलकर देखिए। प्रकृति ने हर ओर अपना रंग बिखेर रखा है। जरूरत है तो बस उस ओर नजर घुमाने की।

9. जिन लोगों के आचरण से आपके अन्दर रोष पैदा होता है, उन्हें पहचान कर जहां तक सम्भव हो उनसे दूर ही रहें। ऐसे लोग आपको केवल दुखी ही करते हैं।

10. दिमाग पर अनावश्यक बोझ न पड़े, इसके लिए अगले दिन की कार्य सूची बना लें और उसके अनुरूप ही कार्य करें। इससे आप व्यर्थ के तनाव से दूर रहेंगी।

11. छोटी-छोटी बातों में ऊर्जा जाया न करें। पहले सोचें कि क्या यह मामला इतना महत्वपूर्ण है कि जिस पर मैं अपना भेजा खपाऊं। इस प्रश्न में ही आपके जवाब निहित हैं।

12. याद रखें मिलनसार, खुश मिजाज और जिंदादिल लोगों के बीच रहने से आप में भी जिंदादिली का जज्बा बढ़ता है। एक बार एक मोटी महिला से किसी ने यह सवाल किया कि क्या आप अपने मोटापे को लेकर हीन भावना से ग्रसित नहीं हैं?

इस पर उसका जवाब था, बिल्कुल नहीं, क्योंकि पति की नजर में मैं सबसे सुन्दर हूं। हमें ऐसे लोगों से ही सम्पर्क व रिश्ते स्थापित करने चाहिएं जो स्वस्थ सोच वाले और हंसमुख हों। ❑

भारतीय संस्कृति के प्रहरी : डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

—शिवकुमार गोयल

देश के जाने माने विधिवेत्ता तथा साहित्य मनीषी डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी के निधन से देश की अपूरणीय क्षति हुई है। डॉ. सिंघवी जी ने अपना जीवन भारतीय संस्कृति, राष्ट्रभाषा हिन्दी, तथा मानवीय व नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के पुनीत कार्यों के लिए समर्पित किया हुआ था।

सिंधवी जी पुरानी ऋषि-परम्परा के एक गंभीर-चिन्तन व साधक थे। मुझे लगभग चालीस वर्षों तक उन्हें निकट से देखने जानने तथा उनका मार्गदर्शन प्राप्त करते रहने का सौभाग्य मिला था। प्रखर हिन्दी सेवी सांसद पं. प्रकाशवीर शास्त्री के वे अनन्य मित्र थे। शास्त्री जी के साथ रहने के दौरान मुझे आदरणीय सिंघवी जी के सान्निध्य में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने पग-पग पर यह अनुभव किया कि श्री सिंघवी जी का रोम-रोम भारतीयता, आध्यात्म तथा मानवीय मूल्यों से सराबोर था। अपनी मातृभूमि (भारत), राष्ट्रभाषा हिन्दी, भारतीय साहित्य, संस्कृति के प्रति वे हर क्षण श्रद्धानत रहते थे। इन पर किसी प्रकार का आघात होते देखकर वे व्यथित हो उठते थे।

सिंघवी जी गोवंश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाये जाने के प्रबल समर्थक थे। भारतीय युवा पीढ़ी में मांस- मदिरा व अन्य नशीले प्रदार्थों के सेवन की बढ़ती प्रवृति उन्हें उद्वेलित कर देती थी।

वे प्राय: गोष्ठियों में शाकाहार, सात्विकता, सादगी तथा भारतीयता के महत्व पर जब विचार व्यक्त करते थे तो लगता था कि जैसे कोई प्राचीन पीढ़ी का ऋषि प्रवचन कर रहा है।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने संसद में गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने का विधेयक प्रस्तुत किया तो डॉ. सिंघवी जी ने पूर्ण रूचि लेकर उनकी सहायता की थी। इसी प्रकार विदेशी धन व लालच के बल पर भारतीयों का धर्मान्तरण रोके जाने के प्रश्न पर भी सिंघवी जी ने शास्त्री जी को सहयोग दिया था।

७ नवम्बर, १९६६ को गोहत्या बन्दी की मांग को लेकर संसद भवन के समक्ष गोभक्तों पर जब गोलियाँ चलाई गईं-उन दिनों सिंघवी जी लोकसभा के सदस्य थे। प्रकाशवीर शास्त्री अटलबिहारी वाजपेयी तथा अन्य सांसदों के साथ गोभक्तों के साथ हुई ज्यादती का विरोध करने में वे शामिल थे।

सिंघवी जी कहा करते थे- सत्य, अहिंसा, करूणा, शाकाहार ये सब सद्गुण ही तो भारतीयता की विशेषता हैं। इन्हें त्यागकर भारत निष्प्राण हो जाएगा।

सिंघवी जी का मुझे सदैव आशीर्वाद मिलता रहा। 'धर्मयुग', 'कल्याण', 'कादम्बिनी', 'नंदन', आदि पत्र-पत्रिकाओं में वे मेरे लेख पढ़कर मुझे आशीर्वाद देकर प्रोत्साहन देते रहते थे। पिताजी (भक्त रामशरणदास जी) के 'कल्याण' व अन्य पत्र-पत्रिकाओं में पुनर्जन्म सम्बन्धी लेखों को वे रुचि के साथ पढ़ा करते थे। उन्होंने स्वयं आँखों देखी पुनर्जन्म की एक दो घटनाएं भी कई बार प्रकाशवीर शास्त्री जी के निवास स्थान पर पिताजी को सुनाई थीं।

डॉ. सिंघवी जी ने ही प्रेरणा देकर हम लोगों से प्रखर हिन्दी सेवी प्रकाशवीर शास्त्री की पावन स्मृति में बृहद् ग्रंथ का सम्पादन कराया था। ग्रंथ का लोकार्पण तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी से कराकर हम तीनों सम्पादकों (दत्तात्रेय तिवारी, अशोक कौशिक तथा मुझे) को भी सम्मानित कराकर उन्हें अनूठा संतोष प्राप्त हुआ था।

'साहित्य अमृत' (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली) मासिक पत्रिका के वे सम्पादक थे। मैंने उनके कई सम्पादकीय लेखों को पढ़कर पत्र लिखे तो उन्होंने कृतज्ञता का पत्र लिखकर मुझे आशीर्वाद दिया। सहिष्णुता, उदारता तथा सात्विकता की वे साक्षात त्रिवेणी थे। उनकी सहधर्मिणी डॉ. कमला सिंघवी एक आदर्श गृहिणी के रूप में उन्हें सम्बल प्रदान करती रहीं। ऐसा विभूति के चरणों में मेरा नमन।

पिलखुवा (उ.प्र.)

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिन्दी का प्रचार प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें। —संपादक

जागरण या जगराता का वास्तविक कर्म

–डॉ. पूर्ण सिंह डबास

जगराता, जागरण या भगवती जागरण के नास से आजकल घरों, गली-मोहल्लों तथा पार्कों आदि में होने वाले आयोजन प्रायः रोज देखे जा सकते हैं। बिजली की जगमग और चकाचौंध भरी रोशनी में स्थापित देवी की प्रतिमा, उसकी शक्ति या महिमा का गुणगान और याचना करते किराये के गायक, कार्यक्रम में आमंत्रित लोगों की आवभगत में लगा आयोजक परिवार और पास ही प्रसाद या भोजन की तैयारी में जुटे हलवाई, कुल मिलाकर हर आयोजन का दृश्य कुछ ऐसा ही होता है। साथ ही, भक्ति और उपासना का मजाक उड़ाती गायकों की उछल-कूद और ध्वनी-प्रदूषण के रिकॉर्ड और कानून तोड़ती लाउड स्पीकरों की आवाज। इसके अतिरिक्त आयोजक के मन में प्रायः स्पर्धा का यह भाव भी कि मैंने पडौ़सी के आयोजन की तुलना में ज्यादा बड़ा शामियाना लगवाया, ज्यादा महंगे गायक बुलवाए, ज्यादा संख्या में लोग आमंत्रित किए और ज्यादा अच्छा भोजन या प्रसाद खिलाया। आयोजन से खुद में कोई जागृति आई हो या न आई हो लेकिन पास पडौ़स वालों की नींद उड़ाकर उन्हें जरूर जगाए रखा।

विज्ञान के इस युग में हालांकि हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति अपने को शिक्षित, सभ्य, सुसंस्कृत तथा उन्नत आदि विशेषणों से सुशोभित करता है लेकिन आश्चर्य की बात है कि धर्म की अवधारणा या संकल्पना को लेकर उसका दृष्टिकोण अभी भी अवैज्ञानिक है। उसके धार्मिक विश्वास तर्क या विज्ञान की कसौटी से परे बिल्कुल आदिम या तर्कहीन मान्यताओं पर आधारित हैं। इन परिस्थितियों में, आइए जरा 'जागरण' के मूलार्थ और अभिप्राय पर विचार करें। यहां हम 'जागरण' शब्द को महत्त्व नहीं दे रहे क्योंकि इसमें मात्र रात्रि भर जागने या रतजगा करने का भाव है और अर्थ की कोई विशेष गरिमा नहीं है। अब 'जागरण' शब्द को लीजिए जिसमें (निद्रा के विपरीत) जागने और साथ ही लाक्षणिक रूप में मन की सद्वृत्तियों को जगाने तथा अज्ञान की सुप्तावस्था को त्याग कर ज्ञान की दिशा में बढ़ने का अर्थ शामिल है। 'जागरण' के पूर्व 'भगवती' शब्द जोड़ने से 'भगवती जागरण' शब्द बनता है। संस्कृत में भगवती का अर्थ है- ऐश्वर्यशालिनी, भाग्यशालिनी, पूज्या, समृद्ध, प्रसन्न तथा देवी आदि। इस प्रकार कुल मिलाकर 'भगवती जागरणा' का अर्थ हुआ- उस ऐश्वर्यशालिनी' या दिव्य शक्ति का अपने भीतर जागरण' अथवा उस दिव्य शक्ति के लिए जागरण। जागरण करने-कराने वालों की दृष्टि में उस 'यह शक्ति प्रायः वह है जिसकी गुफा-मंदिर जम्मू की पहाड़ियों में है और जो सामान्यतया 'माता वैष्णों देवी' के नाम से प्रसिद्ध है। स्वाभाविक है भक्तजन उस ईश्वरीय या दिव्यशक्ति को तो क्या जगाएंगे इस लिए 'भगवती जागरण' का मूलार्थ हुआ-भगवान की भक्ति को, ईश्वरीय शक्ति को भक्ति के द्वारा अपने हृदय में जागृत करना। उस परमसत्ता की स्तुति और उपासना के द्वारा उसके दिव्य गुणों को धारण करने का प्रयत्न करना। लेकिन इन तथाकथित जागरणों से क्या वह दिव्य शक्ति हृदय में अनुभव की जा सकती है? शोर-शराबे के बीच क्या मन उस पर केंद्रित हो सकता है? बिल्कुल नहीं!

जगराता या जागरण करने या करवाने वाला इस बात को सोचकर प्रसन्न हो सकता है कि जागरण आयोजन करने से उसकी इच्छाएँ पूरी हो जाएंगी, मनोवांछित फल प्राप्त हो जाएंगे तथा धन-धान्य की वृद्धि हो जाएगी। लेकिन ध्यान रखिए किसी दूसरे के द्वारा कराई गई भक्ति (चाहे वह वास्तव में ही भक्ति हो) का फल किसी अन्य को नहीं मिल सकता। फिर जगराते या जागरण के गायक तो न भक्त होते हैं न ही उस ईश्वरीय शक्ति के वास्तविक स्वरूप को जानते हैं। जगराता करना उनका धंधा है जिसके लिए वे विज्ञापन दे-देकर स्वयं को आमंत्रित करवाते हैं। यह भी देखा गया है कि इनमें से अनेक तो आचार-विचार से भी अच्छे नहीं होते और रात भर चीख-चीख कर गाने के लिए मादक पदार्थो का सेवन करके आते हैं।

आज सारा संसार शांति की तलाश में है। अशांत मन स्वयं दुखी रहता है और दूसरों को भी दुखी करता है। बहुत धन प्राप्त करने के बाद भी आदमी को शांति नहीं मिलती इसलिए यह स्पष्ट है कि धन-दौलत का, भौतिक साधनों का, मानसिक शांति से सीधा संबंध नहीं है। भारतीय चिन्तन में, अपने मन की ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व की, पूरे परिवेश की शांति की कामना करते हुए बार-बार 'शांतिपाठ' किया जाता है। शांति भीतर की

चीज है। वह भीतर से जन्मती है, बाहर से नहीं आती। इसीलिए ऋषि और साधक आँखें बंद करके ईश्वर का ध्यान करते हैं, संसार के विपरीत मन के भीतर शांति की तलाश करते हैं। शांति और शोर एक दूसरे के विरोधी हैं। ऐसी हालत में जगराते या जागरण का शोर किसी को कैसे शांति प्रदान कर सकता है यह सोचने की बात है। शांति की प्राप्ति हल्ले या शोर में संभव ही नहीं है।

इससे आगे एक सवाल और भी है कि हम उस परम शक्ति को, ईश्वर को, जो कण-कण में समाया है और जो पूरे विश्व ही नहीं बल्कि अनन्त ब्रह्मांड का रचयिता और संचालक है, क्या किसी छोटे से आकार में सीमित कर सकते हैं। क्या उसको किसी स्थान, भवन या शामियाने में समेट सकते हैं? क्या पत्थर, धातु या लकड़ी के माध्यम से उसे किसी स्त्री या पुरूष का रूप दे सकते हैं? अगर गहराई से विचार करें तो एक ही उत्तर होगा-नहीं।

क्या ही अच्छा हो कि हम प्रातःकाल नहा धोकर बैठें और शांतमन से उस सर्वव्यापक शक्ति का ध्यान करते हुए उससे सद्बुद्धि मांगे, तन-मन की शुद्धि मांगें। उसका सहारा पाकर अपने दुर्गुणों को दूर करने और सद्वृतियों को जागृत करने की हिम्मत जुटाएँ। स्वाध्याय करें और अज्ञान का रास्ता छोड़कर ज्ञान मार्ग पर आगे बढ़ने का प्रयास करें। यदि हम उस सर्वशक्तिमान से ऐसी प्रेरणा पाने में सफल हो जाते हैं तो यही जागृति होगी, यही सच्चा जागरण होगा।

-एम.९३, साकेत, नई दिल्ली-११००१७

आर्यसमाज हनुमान रोड़, नई दिल्ली

दिल्ली :- आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का सप्ताहव्यापी वार्षिकोत्सव एवं ऋग्वेद पारायण यज्ञ 25 दिसम्बर को सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य राजू वैज्ञानिक एवं ऋत्विक डॉ. कर्ण देव शास्त्री थे।

वार्षिकोत्सव क्रम में 20 नवम्बर को आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया और 23 नवम्बर को माता प्रकाशवती बुग्गा स्मारक समूहगान प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमें प्रतियोगियों ने महर्षि दयानन्द आर्य समाज एवं देश भक्ति से संबंधित गीत प्रस्तुत किए।

25 नवम्बर को वर्तमान में सत्यार्थ प्रकाश उपयोगिता पर श्री रत्नलाल सहदेव स्मारक भाषण प्रतियोगिता आयोजित हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं विचारक डॉ. श्यामसिंह 'शशि' (पद्मश्री) ने की। 25 नवम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तथा सत्यार्थ प्रकाश पर डॉ. महावीर भीमांसक महेन्द्र पाल आर्य आदि के प्रवचन हुए। समाज के प्रधान अरूण शर्मा तथा मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह हुड़ा ने सभी को आभार व्यक्त किया।

आर्यसमाज महू में यज्ञ, वेदकथा एवं व्याख्यानमाला

महू (म.प्र.) :- आर्यसमाज महू के तत्वाधान में गायत्री महायज्ञ के माध्यम से वेद प्रचार की योजना संचालित की जाती है।

पूर्व में दो सफल आयोजन हो चुके हैं। कार्यक्रम के प्रभाव से अनेक व्यक्ति आर्य समाज से जुड़े हैं।

इस वर्ष 25 दिसम्बर, 2007 से 01 जनवरी 2008 तक यज्ञ-वेदकथा भजन तथा विभिन्न विषयों पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया है।

इस बार कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य बलदेव जी एवं मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री बलराम जाखड़ करेंगें

जनज्ञान के सदस्यों से

जनज्ञान का वार्षिक शुल्क समाप्ति का पत्र मिलते ही शीघ्र वार्षिक शुल्क एक सौ रुपये भेजने का यत्न करें तथा पत्र के साथ संलग्न कार्ड पर उत्तर भी दें।

डाक व्यय बढ़ जाने से वार्षिक शुल्क की वी.पी. भेजने में अब २५ रुपये लगते हैं। अतः मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट अथवा केवल दिल्ली के चैक द्वारा ''ज़नज्ञान'' के नाम शुल्क भेजें। **दिल्ली से बाहर के चैक पर बैंक चार्ज लगभग ४० रुपये व्यर्थ पड़ जाता है।**

पत्र व्यवहार में अपना सदस्य नं. ...... अवश्य लिखें तथा कार्ड पर उत्तर भी अवश्य ही देने की कृपा करें। हमारे यहां से भेजे पत्रों में सदस्य नं....आपके पते के साथ लिखा होता है। धन्यवाद

—सम्पादक

समाचार-दर्शन

पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा को पत्नीशोक

सुप्रसिद्ध आर्य नेता, प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं डी.ए.वी. मैंनेजिंग कमेटी के प्रधान पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा की की धर्मपत्नी श्रीमती सरला चोपड़ा का ८१ वर्ष की आयु में २८ अक्टूबर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निगमबोध घाट पर किया गया।

श्री अखिलेश भारतीय को मातृशोक

आर्यसमाज पुलबंगश, दिल्ली के मन्त्री श्री अखिलेश भारती की पूज्य माताजी श्रीमती कमलेश रानी का गत दिनों निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से स्थानीय श्मशान पर किया गया। उनकी स्मृति में शोक सभा एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन २७ अक्टूबर, २००७ शनिवार को आर्यसमाज परिसर में किया गया, जिसमें आसपास की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों ने भी भाग लेकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। 'दयानन्द संस्थान' एवं 'जनज्ञान' परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को दारूण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

आर्यसमाज, अजमेर के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज, अजमेर के 24 अक्टूबर 2007 को साधारण सभा में चुनाव निर्वाचन अधिकारी श्री वेदरत्न जी आर्य के सानिध्य में सम्पन्न हुये।

संरक्षक - श्री रासासिंह, प्रधान- श्री सोमरत्न आर्य, उपप्रधान- श्री पन्नालाल माहेश्वरी, मंत्री- श्री चिरंजीलाल शर्मा, पुस्तकालयाध्यक्ष- श्री सूर्यप्रकाश शास्त्री

इन्दौर में सप्त दिवसीय वेद-कथा सम्पन्न

इंदौर - वेद भक्त स्वामी वैदिकानंद जी (पूर्व नाम जगदीशप्रसाद वैदिक) के सानिध्य में वेदों के उद्भट विद्वान् आचार्य श्री डॉ. संजयदेव (हरियाणा) की एक सप्ताह वेद-कथा इन्दौर में वेद-ज्ञान समिति के तत्वावधान में भव्य रूप से सम्पन्न हुई। आचार्य श्री डॉ. संजयदेवजी ने सरल, सुबोध तथा हृदयग्राही भाषा में वेद-मंत्रों की व्याख्या की। आचार्य श्री ने कहा कि वेद-ज्ञान से ही संसार में शांति हो सकती है। वेदों में घर, परिवार, समाज राष्ट्र ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व की सुख-शांति का मूलमंत्र समाहित है। वेद-ज्ञान के असीमित भण्डार हैं। वेद केवल पढ़ने के लिए नहीं आचरण में आत्मसात करने के लिए हैं। दुर्योधन और रावण ने भी वेद पढ़े थे, लेकिन आचरण में नहीं उतारे, इसलिये उनका पतन हुआ। राम और कृष्ण ने वेद-ज्ञान को आचरण में उतारा था, इसलिये जनता ने उनको भगवान मान लिया। अलग-अलग दिनों में निम्नलिखित पौराणिक संत, महात्मा, और विद्वान् अध्यक्षता करने पधारते रहे। श्री स्वामी रंगनाथाचार्य रामानुज, कोटाधीश्वर उज्जैन, युवराज श्री स्वामी माधवप्रपन्नाचार्य रामानुजकोट मंदिर, उज्जैन, श्री स्वामी केदारनाथजी सरस्वती श्रीमाता आनंदमयी पीठाधीश्वर, इन्दौर, श्री स्वामी विष्णुप्रपन्नाचार्यजी डीडवाना, नागोरिया पीठाधीश्वर व्यंकटेश मंदिर छत्रीबाग, इन्दौर, पं. गणेशदत्तजी त्रिपाठी साहित्य महोपाध्याय डॉ. भागीरथप्रसादजी कुलपति देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर पं. सोमपालजी शास्त्री उपाध्यक्ष मध्यप्रदेश राज्य योजना आयोग भोपाल, पं. केदारनारायणजी जोशी संकायाध्यक्ष कला संकाय विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन। उपरोक्त सभी संतो, विद्वानों ने एक स्वर से कहा कि वेद-धर्म का मूल है। वेद ईश्वरीय वाणी है, वेद का पठन-पाठन समाप्त हो गया था, स्वामी दयानंद की कृपा से पुनः वेद का पठन-पाठन प्रारम्भ हुआ।

आर्यसमाज रामनगर, रूड़की

आर्यसमाज रामनगर, रूड़की का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य प्रवचन कर्त्ता आचार्य आर्य नरेश थे। रात्रि में आचार्य आर्य नरेश के ओजस्वी प्रवचन हुए। आचार्य जी ने कहा कि "आप अपने जीवन में यज्ञ अपनायें। आज के युग में कल- कारखानों की भरमार है जो पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं, उसे भी अग्निहोत्र द्वारा प्रदूषण रहित किया जा सकता है। आर्य नरेश जी ने यजमानों को दैनिक यज्ञ करने की शपथ दिलाई।

मंत्री राम अवतार यादव ने बताया कि आर्य समाज रामनगर का, वेदमंदिर सत्संग भवन बनकर लगभग तैयार हो गया हैं। डॉ. महावीर अग्रवाल डीन गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार के प्रवचनों के साथ साप्ताहिक सत्संग का क्रम आरम्भ हुआ। "संस्कृत अकादमी, उत्तराखंड" का उपाध्यक्ष मनोनीत होने पर उन्हें आर्य समाज रामनगर रूड़की द्वारा सम्मानित भी किया गया।

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय गौतम नगर

महायज्ञ- नई दिल्ली : श्री मद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय गौतम नगर नई दिल्ली में ऋग्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन दो दिसम्बर से सोलह दिसम्बर तक आयोजित है। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. धर्मवीर मंत्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर एवम् दयानंद संस्थान नई दिल्ली है।

ध्वजारोहण : श्री विद्या मित्र ठुकराल के कर कमलों द्वारा १०.३० से ११ बजे के मध्य होगा।

दैनिक यज्ञ - प्रात: ७ बजे से १०बजे तक एवं सायं ३ बजे से ६ बजे तक

भजन एवं उपदेश - ओम प्रकाश वर्मा एवं आर्य जगत् के महोपदेशकों व विद्वानों द्वारा

वार्षिकोत्सव के अवसर पर - महिला सम्मेलन (११ दिसम्बर को २ बजे से ४ बजे तक) आयोजित होगा। जिसका अध्यक्षता श्रीमती शकुन्तला आर्य (पूर्व महापौर) करेंगी। १४ दिसम्बर को योग सम्मेलन सायं 4 से ६ बजे तक तथा १५ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न होगा।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई का स्थापना दिवस

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ६४वाँ स्थापना दिवस एवं पुरस्कार समारोह आर्यसमाज के विशाल सभागृह में आयोजित किया गया। श्री संगीत आर्य (महामन्त्री), आर्यसमाज सान्ताक्रुज) ने पुरस्कारों का परिचय प्रस्तुत किया।

इस वर्ष श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता पुरस्कार स्वरूप रु. 11,001/- का डी.डी. महर्षि दयानन्दार्ष गुरूकुल ब्रह्म आश्रम, राजघाट, बुलन्दशहर के लिए आचार्य योगेश शास्त्री को सौंपा गया तथा श्रीमती भागो देवी छाबरिया गुरूकुल सहायता पुरस्कार स्वरूप रु. 11,001/- की डी.डी. श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरूकुल पौंधा, देहरादून के लिए भेजने को कहा गया। श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान् पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता स्वरूप रु. 11,001/- की डी.डी. शाल, श्रीफल एवं मोती माला भेंट कर सम्मानित किया गया। अपने सम्मान के उपलक्ष में बोलते हुए स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती जी ने वेद प्रचार व वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार पर बल दिया। श्रीमती कृष्णा गांधी आर्य युवक पुरस्कार प्राप्तकर्ता आचार्य योगेश शास्त्री, कोलकाता को श्रीकमी कृष्ण, गांधी आर्य युवक पुरस्कार स्वरुप रु. 11,001/- की डी.डी. शाल, ट्राफी, श्रीफल, मोती माला भेंट कर सम्मानित किया गया।

महात्मा हंसराज आर्यन क्षेत्रीय युवा महोत्सव

फरीदाबाद :- डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर-37 फरीदाबाद के प्रांगण में डी.ए.वी. कॉलेज कार्यकोरिणी समिति आर्य विद्या सभा द्वारा अखिल भारतीय महात्मा हंसराज आर्यन क्षेत्रीय युवा महोत्सव का आयोजन किया गया।

तीन दिन तक चले इस उत्सव का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. गिरिजाव्यास (राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष) ने दीप प्रज्जवलित करके किया। इस अवसर पर श्री मोहनलाल (सचिव डी.ए.वी. कॉलेज कार्यकारिणी समिति, आर्य विद्या सभा) ने संस्कृत और संस्कृति को सामवेद के मूल भाग बताते हुए ऐसे आयोजनों को राष्ट्रीय एकता के लिए महत्वपूर्ण बताया।

पीतमपुरा, दिल्ली में चरित्र निर्माण शिविर

दिल्ली :- दरबारी लाल डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, पीतमपुरा दिल्ली में चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया, वर्तमान काल में जिस तीव्रता से नैतिक मूल्यों का ह्रास व चारित्रिक पतन हो रहा है, उतनी ही तीव्रता से डी.ए.वी. की शिक्षा संस्थान अपने विद्यालय में विद्यार्थियों में चारित्रिक निर्माण के लिए कटिबद्ध है। विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों पर आधारित कहानियां सी. डी. द्वारा दिखाई गई, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, कहानी वाचन, भजन गायन देशभक्ति गीत गायन, यौगिक आहार निर्माण इत्यादि इसमें विशेष रुप से नैतिक चरित्र पर आधारित सकारात्मक पक्ष को अपनाने पर बल दिया। छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत करते हुए प्रधानाचार्या श्रीमती अनिता वडेरा ने बच्चों के चरित्र निर्माण की चर्चा भी की। कार्यक्रम में वैदिक ज्ञान के प्रचारक व प्रसारक जाने माने सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. धर्मवीर जी को आमंत्रित किया गया। जिन्होंने अत्यंत सरल व सहज रूप से छात्रों को उद्बोधित करते हुए उन्हें भले व बुरे की पहचान करने पर व अच्छाई को अपनाने पर बल दिया।

अखिल भारतीय त्रिदिवसीय संस्कृत अधिवेशन

संस्कृत भारती के तत्त्वावधान में मेरठ स्थित सरस्वती विद्यामन्दिर, शास्त्री नगर के प्रांगण में गत 26,27,28 तीन दिवसीय संस्कृत अधिवेशन का आयोजन किया गया। इस में पूरे देश से लगभग 2500 संस्कृतप्रेमियों ने भाग लिया तथा तीन दिन तक सारे स्थल को संस्कृतमय बना दिया। इस अवसर पर छोटे-छोटे तीन वर्ष के बच्चे भी संस्कृत भाषा में वार्तालाप करते दिखाई दे रहे थे। अधिवेशन की

पूरी कार्यवाही संस्कृत भाषा में की गई।
एक अधिवेशन भारत के जम्मू कश्मीर व पूर्व में असम से लिया। अधिवेशन का उद्घाटन अध्यक्ष गुरूकुल आश्रम के स्वामी विवेकानन्द व मेरठ जोन के पुलिस महानिरीक्षक द्वारा दीप प्रज्जवलित करके किया गया। उद्घाटन अवसर पर स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा कि मेरठ से 1857 की शुरू की गई स्वतन्त्रता की पहली जंग भले ही असफल रही हो, परन्तु आज यहां से शुरू की जा रही संस्कृत क्रान्ति अवश्य ही सफल होगी।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए वी.के. गुप्ता ने भी संस्कृत के प्रति अपनी धारणा बदलने की बात कही। उन्होंने संभ्रान्त वर्ग के लोगों से संस्कृत व संस्कृति के प्रति अनुराग दिखाने का आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि जैन साध्वी सविता दीदी द्वारा धारा प्रवाह संस्कृत में दिए गए भाषण में संस्कृत की महत्ता को साबित किया गया। संस्कृत भारती के प्रान्तीय अध्यक्ष आचार्य वाचस्पति मिश्र के संचालन में आयोजित इस कार्यक्रम में 'साइंस इन संस्कृत' नामक पुस्तक का लोकार्पण स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने किया। बालकों के गाये गीतों की सीडी (बालरञ्जिनी) का भी लोकार्पण हुआ।

डी ए वी में कार्यरत् धर्माचार्यों के शिविर का आयोजन

डी ए वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के अन्तर्गत जो 500 पब्लिक स्कूल हैं, उनमें सेवारत धर्मशिक्षकों / धर्माचार्यों का एक शिविर 27,28,29 दिसम्बर को महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा, जिला राजकोट, (गुजरात) में आर्य विद्या सभा के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में सम्मिलित होने वाले आर्य जनों के आवास एवं भोजन आदि की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। टंकारा पधारने की सूचना आर्य समाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री रामनाथ सहगल को दें।

अथ शुद्धि-संस्कार पद्धति

—बनवारी लाल

ओं उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चकृषं देवा देवा जीवयथा पुनः॥
ओं दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै। य० १।१३॥

भावार्थ—हे विद्वानो! जो मनुष्य सत्य धर्म से गिर गये हैं, उनको पुन: उठाओ और जिन्होंने पापकृत्य किया है अथवा जिनका जीवन अपवित्र हो गया है, उनको फिर से शुद्ध करके पवित्र जीवन दो। हे मनुष्यो! तुम पतितों को देव कर्मों में प्रवृत्त करने के लिए शुद्ध करो।

आर्य (हिन्दू) जाति कई प्रकार के रोगों से चिरकाल से आक्रान्त है। बाल विवाहादि दुष्कर्मों से इसकी शारीरिक निर्बलता बढ़ी है। बाल विवाहादि ऐसे कृत्य हैं, जो हिन्दू जाति के अज्ञान की दुन्दुभि बजा रहे हैं। अज्ञान का मानसिक रोग, प्रमाद, आलस्य, उपेक्षादि महान् रोगों की जड़ है, हिन्दू जाति इस घोर आक्रमण से तितर-बितर हो गयी है, चिरकाल से इस महारोग में ग्रस्त होकर आर्त्तनाद कर रही है। "दैवो दुर्बल घातक:" दुर्बल का दैव भी यह सहायक नहीं होता। "दुर्बलता में दुष्ट लोग दबाया करते हैं" इसी नीति के अनुसार हिन्दू जाति का चिरकाल से अध:पतन हो रहा है, ठोकरों पर ठोकरें लग रही हैं, परन्तु इतनी दुर्दशा होने पर भी अज्ञानावस्था में पड़ी-पड़ी खुर्राटें ले रही है। परमात्मा की अपार दया से **शास्त्रज्ञान** का अमृतघट लेकर एक सद्वैद्य उपस्थित हुआ, उसने हिन्दू जाति की नाड़ी की परीक्षा करके रोग का निदान किया और प्रयोग निर्धारित किया। रोगी को दुर्बल देखकर विधर्मी लोग लूट मचाते थे, रुग्ण भारत के बालक और देवियों का खुले मैदान अपहरण होता था, दानवों का सोल्लास ताण्डवनृत्य हो रहा था, रात अन्धेरी थी, रोगी का कोई उपचारक भी न था—बड़ी विकट समस्या थी, ऐसे दु:समय में धैर्यपूर्वक चिकित्सा करना बड़ा कठिन काम था, परन्तु दयावशं प्रेरित होकर आनन्द के साथ प्रयोग निश्चय कर ही दिया। नुसखा सचमुच "रसायन" निकला, इस नुसखे में अनेक वस्तुओं का मेल था—यथा—

(१) बाल विवाह का काला मुंह, मात्रा २६ (२) सम्प्रदाय भेद और जाति भेद को तिलांजलि, मात्रा २६ (३) अछूतोद्धार मात्रा २६ (४) हिन्दू संगठन, मात्रा २६ (५) बाल विधवाओं का पुनर्लग्न, मात्रा २६ (६) वेदरक्षा और ईश्वर भक्ति, मात्रा २६ (७) गोसेवा, गोरक्षा, गोवधबन्द, मात्रा २६ (८) परस्पर सहानुभूति और प्रेम, मात्रा २६ इत्यादि कितने ही प्रधान अंग इस क्षयरोगहारी
नुसखे में मौजूद थे, परन्तु इन सबसे तिगुनी मात्रा पतितपावनी 'शुद्धि' की थी।

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

१. वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम दिल्ली-३६ में अपनी ओर से अथवा अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कुटिया बनवा सकते हैं। जो आजीवन आपकी होगी। इस समय व्यय लगभग दो लाख रुपए होगा। एक कुटिया १५ × १२ फुट की, पीछे शौचालय और स्नानागर ५ × ७ फुट, रसोई ७ × ७ फुट की, आगे बरामदा १२ × ७ फुट। प्रत्येक कुटिया अपने आप में पूर्ण इकाई है। वेदमंदिर में यज्ञशाला, सत्संग भवन, कार्यालय आदि के निर्माण हेतु अधिक से अधिक धनराशि १००, ५००, १००० रुपये अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वयं तथा अपने मित्रों से धन संग्रह करके धनराशि ''दयानन्द संस्थान'' के नाम भेजें। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

२. वेद मन्दिर गौशाला में गौ दान करें तथा गउओं के लिए चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।

३. परमात्मा की अमरवाणी ''चारों वेदों का हिन्दीभाष्य'' मूल्य १८०० रु. अभी १२०० रु. में अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में पहुंचायें। डाक से मंगाने पर १८० रुपये अधिक लगेंगे।

४. बढ़िया पेपर पर छपा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य ३२०० रु. अभी २२५० रु. में। डाक से मंगाने पर २०० रु. अधिक लगेंगे।

५. विगत बयातालीस वर्षों से लगातार वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न मासिक ''जनज्ञान'' के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। वार्षिक शुल्क १००/- रुपये है। ग्यारह सौ रुपये में जीवन भर जनज्ञान भेजा जायेगा, साथ ही अभी तीन सौ पचास रुपये का वैदिक साहित्य भी उपहार में प्राप्त करें।

६. प्रतिमास ''जनज्ञान'' की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ ६०/- रुपये में मंगाकर बांटें तथा ''जनज्ञान'' मासिक में विज्ञापन देकर हमारे ''राष्ट्र जागृति अभियान'' में सहयोग प्रदान करें।

७. संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेदप्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं, जिनकी सूची ''जनज्ञान मासिक'' में प्रकाशित होती रहती है। अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटें तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।

अध्यक्ष--दयानन्द संस्थान

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य 1800 रु.
2. सामदेव : आध्यात्मिक भाष्य 201 रु.
3. वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या) 100 रु.
4. वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या) 100 रु.
5. भारत के वीर बच्चों की कहानियां 15 रु.
6. धरती का स्वर्ग 15 रु.
7. सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र) 60 रु.
8. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 15 रु.
9. धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं) 15 रु.
10. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 5 रु.
11. वैदिक सम्पत्ति 200 रु.
12. धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या) 15 रु.
13. योग और ब्रह्मचर्य 15 रु.
14. गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह) 20 रु.
15. Inside the Congress 60 रु.
16. Life and Teachings of Swami Dayanand 200 रु.
17. History of the assassins 60 रु.
18. Concept of God 60 रु.
19. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश 60 रु.
20. Light of Truth 250 रु.
21. प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री) 15 रु.
22. वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य 60 रु.
23. संक्षिप्त महाभारत 80 रु.
24. संक्षिप्त रामायण 20 रु.
25. ऋग्वेद शतकम 10 रु.
26. चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं 25 रु.
27. सत्संग पद्धति 10 रु.
28. वैदिक सान्ध्य गीत 15 रु.
29. A Short Life Story of Swami Dayanand 30 रु.
30. गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें 4 रु.

१०० रु. से अधिक धार्मिक साहित्य पर १५ प्रतिशत ३०० रु. से अधिक लेने पर २० प्रतिशत तथा ५०० रु. से अधिक लेने पर २५ प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

31. बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार 300 रु.
32. ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में) 150 रु.
33. अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि 200 रु.
34. अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि 100 रु.
35. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर 10.00 रु.
36. वीर सावरकर—संक्षिप्त जीवन परिचय 5.00 रु.
37. भाई परमानन्द (जीवन परिचय) 30.00 रु.
38. बाल सत्यार्थ प्रकाश 60.00 रु.
39. मां गायत्री 2.00 रु.
40. स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा 2.00 रु.
41. विश्व को वेद का संदेश 3.00 रु.
42. विश्व को आर्यसमाज का संदेश 3.00 रु.
43. Great Gayatri 2.00 रु.

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे? 3.00 रु.
2. हिन्दुओं को चेतावनी वदभिक्षुः 2.00 रु.
3. भारत के मुसलमानों का क्या करें? —वेदभिक्षुः 2.00 रु.
4. हम सब हिन्दू हैं—सावरकर 2.00 रु.
5. इस्लाम में क्या है? —राकेश रानी 2.00 रु.
6. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ —जहीर नियाजी 2.00 रु.
7. हिन्दू जागो ! देश बचाओ 2.00 रु.
8. इस्लाम—एक परिचय 2.00 रु.
9. पोप की सेना का भारत पर हमला — वेदभिक्षुः 2.00 रु.
10. पादरियों को चुनौती 2.00 रु.
11. बाईबिल को चुनौती 2.00 रु.
12. क्या ईसा खुदा का बेटा था? 2.00 रु.
13. और पादरी भाग गया 2.00 रु.
14. बाइबल कसौटी पर 4.00 रु.
15. Bible in the Balance 3.00 रु.
16. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा? 2.00 रु.
17. क्या भारत का एक और विभाजन होगा? 2.00 रु.
18. हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश 2.00 रु.
19. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा 2.00 रु.
20. A challange to the Christian Faith 50 पैसे

एक रुपये वाली "हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की १००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और ५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक—दयानन्द संस्थान

२२८६-आर्यसमाज मार्ग, नई दिल्ली-५

मुफ्त प्राप्त करें

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य १८००/- रुपये
बढ़िया वैदिक साहित्य मूल्य ५००/- रुपये
जनज्ञान मासिक ११००/- रुपये

३४०० रुपये का साहित्य उपहार भेंट किया जायेगा--मात्र २१०० रुपये सहयोग राशि प्रदान कर दयानन्द संस्थान के ''संरक्षक सदस्य'' बनें।

- परमपिता परमात्मा की अमर वाणी ''**चारों वेदों का हिन्दी भाष्य**'' द्वारा अपने गृह एवं पूजास्थल को आलोकित करें। अपने मित्र परिवारों को भेंट में दें।
- ''**जनज्ञान मासिक**'' आपके परिवार को वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकता के प्रेरक भावों और संस्कारों की ओर प्रेरित कर उसे स्वर्गोपम बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

प्रत्येक सदस्य सदैव शुभ अवसर पर एक नया संरक्षक सदस्य बनाकर सहयोग का हाथ बढ़ाएं तथा अपनी पवित्र आय से मात्र २१०१/- रुपए की लघु राशि प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

वेदप्रकाश सिंह	पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि	राकेश रानी
(अमरीका में संस्थान के प्रतिनिधि)	*संरक्षक*	*अध्यक्ष*
संपादक 'सौरभ' न्यूयार्क	*दयानन्द संस्थान*	*दयानन्द संस्थान*
८०-१५, ४१ AVENU APARTMENT २४१	*सहयोग मंडल*	*एवं सम्पादक 'जनज्ञान'*
NEWYORK ELMHURT	*नई दिल्ली*	*नई दिल्ली*

सहयोग राशि ''दयानन्द संस्थान'' के नाम निम्न पते पर प्रेषित कीजिए :

दयानन्द संस्थान, २२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष : ४१००४७४१, ४१०१५४५७

जन-ज्ञान (मासिक) २२८६, आर्यसमाज मार्ग करौल बाग, नई दिल्ली-५	मार्गशीर्ष-पौष सम्वत्-२०६४ दिसम्बर-सन्-२००७	Delhi Postal Regn. No. DL(C)-01/1114/06-08 R. N. 10719/65 Posted at N. D. PSO on Dates 5 & 6 of December 2007

ओ३म्

मन प्राणों में वेद पले
दु:ख कष्ट से मुक्ति मिले

वेद नहीं जिसके घर में
हिन्दु न कहलाए जग में

वेद सृष्टि का मूल महान
आर्य जनों, यह लो पहचान

"परमात्मा" की
दिव्य-सनातन वाणी

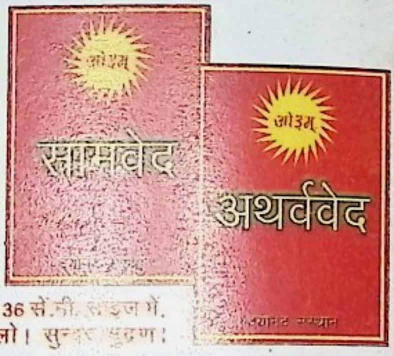

मंत्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, ऋषि-देवता आदि विवरण सहित 23 X 36 से.मी. साइज में,
कुल पृष्ठ 2200, बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्रायः 8 किलो। सुन्दर मुद्रण।

चारों वेदों का सरल, रोचक हिन्दी भाष्य

महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी भाष्य, मूल संस्कृत सहित

अभी वेद घर में लाओ, शुद्ध आर्य जन कहलाओ

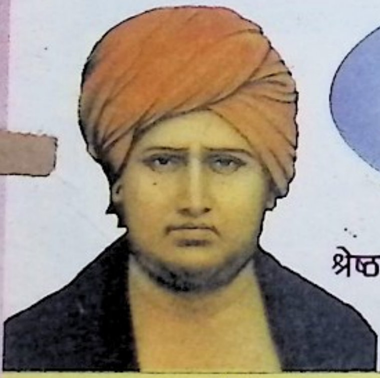

प्रसारार्थ लागत मूल्य
रु.1800/=
अभी मात्र 1200/= में प्राप्त करें
डाक व्यय पृथक

श्रेष्ठ बढ़िया कागज़ पर लागत मूल्य 3200/-
अभी लेने पर 2250/-

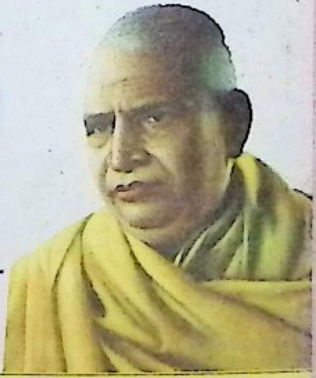

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

अधिक विवरण व राशि भेजने के लिए:
दयानंद संस्थान, 2286 आर्यसमाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, (भारत) दूरभाष - 45415457
प्रधान कार्यालयः महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-1100036 (भारत) दूरभाष - 25724741

साइबरसेपियन्स 23512929,23551818